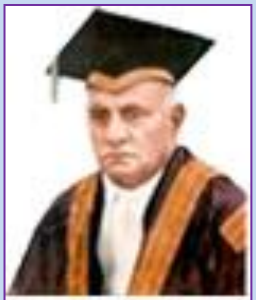

Dr. Harisingh Gour

न्यूजलेटर

मार्च 2024

डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर (मध्यप्रदेश)

(केंद्रीय विश्वविद्यालय)

संरक्षक

प्रो. नीलिमा गुप्ता

कुलपति

डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय,

सागर (म.प्र.)

सहयोग एवं परामर्श

डॉ. सत्यप्रकाश उपाध्याय

कुलसचिव (प्र.)

संपादक

डॉ. विवेक जायसवाल

जनसंपर्क अधिकारी (प्र.)

संपादक सदस्य

डॉ. हेमंत पाटीदार

डॉ. आशुतोष

डॉ. शालिनी चोइथरानी

डॉ. संजय शर्मा

माधव चंद्रा

राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई ने मतदान जागरूकता अभियान चलाया

डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय में संचालित राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई और शिक्षा मंत्रालय एवं युवा मंत्रालय भारत सरकार के संयुक्त तत्वावधान में नव मतदाता को आगामी लोकसभा चुनावों में सक्रिय भागीदारी बनाने के उद्देश्य से "मेरा पहला वोट देश के नाम" अभियान के अंतर्गत विश्वविद्यालय परिसर एवं पथरिया ग्राम के नागरिकों को स्वयंसेवकों द्वारा घर घर जाकर जागरूक किया गया.

इस अभियान के अंतर्गत आगामी लोकसभा चुनाव के मद्देनजर विश्वविद्यालय के मुख्य चौराहों और मार्गों पर विद्यार्थियों को मतदान के लिए प्रेरित किया गया. "मेरा पहला वोट देश के नाम" अभियान का आयोजन पहली बार वोट दे रहे युवाओं एवं मतदाताओं को उनके चुनावी अधिकारों के महत्त्व पर सशक्त और शिक्षित करने के लिए एक कारगर कदम है. साथ ही इस पहल का उद्देश्य युवाओं को भारत में लोकतंत्र के भविष्य को आकार देने में उनके वोटों की महत्वपूर्ण भूमिका के बारे में बताना था. स्वयंसेवकों ने वयस्क नागरिकों को उनके मत अधिकार और लोकतंत्र में उनकी भूमिका के संदर्भ में बातचीत की. जागरूक करने और सक्रिय योगदान को सुनिश्चित करने के उद्देश्य से एक सेल्फी प्वाइंट भी बनाया गया. जिसमे विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों ग्राम के युवक और युवतियों ने बढ़ चढ़ कर भाग लिया. सेल्फी को अपने अपने सोशल मीडिया प्रोफाइल पर प्रेषित कर अन्य को भी जागरूक करने का आव्हान किया गया. "चुनाव का पर्व देश का गर्व " इस ध्येय वाक्य के साथ आगामी 6 मार्च तक इस संदर्भ में कई गतिविधियां विभिन्न विभागों, छात्रावासों आदि में आयोजित की जायेगी.

लेखांकन की यात्रा बहीखाते से कृत्रिम बुद्धिमत्ता तक महत्वपूर्ण रूप से प्रगतिशील रही है: प्रोफेसर नीलिमा गुप्ता

डॉक्टर हरिसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर के वाणिज्य विभाग में "लेखांकन नवाचार एवं सतत प्रबंधन" दिनांक 4 व 5 मार्च 2024 को राष्ट्रीय सेमिनार में अपने वक्तव्य में विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने कहा कि बहीखाता प्रणाली से

हम कंप्यूटर युग मे एवं कंप्यूटर युग से अब कृत्रिम बुद्धिमत्ता अर्थात आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के युग में आ गए हैं जहां लेखांकन प्रणालियों की कार्य कुशलता से औद्योगिक व्यावसायिक एवं उद्यमी जीवन में सहायता और लेखांकन परिणाम की धारिता बढ़ रही है. आपने आगे कहा कि वाणिज्य विभाग द्वारा लेखांकन के नवाचार पर युक्त इस राष्ट्रीय सेमिनार से लेखांकन शोध के क्षेत्र में एक नई क्रांति का अभ्युदय होगा. अपने वक्तव्य में आपने कहा कि वाणिज्य विभाग सतत प्रबंधन की अवधारणा को लेखांकन नवाचार से जोड़कर कौटिल्य की अर्थशास्त्र की यात्रा को वाणिज्य तक और वाणिज्य से प्रबंधन विशेषज्ञ तक पहुंचा. अपने आगे भारत सरकार एवं माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी द्वारा हरित तकनीकी तथा लेखांकन और कराधान में कृत्रिम बुद्धिमत्ता के सतत उपयोग से 5 ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था के लक्ष्य को प्राप्त करना सरल एवं सहज होगा. अपने विभाग के इस आयोजन पर सभी आयोजकों को शुभकामनाएं दी तथा सतत राष्ट्रीय सेमिनार आयोजन से अकादमी उन्नयन का रास्ता प्रशस्त करने हेतु एक संगठित प्रयास बताया.

कार्यक्रम के मुख्य वक्ता के रूप में उपस्थित चार्टर्ड अकाउंटेंट डॉक्टर प्रियेश जैन ने बताया कि हम कैलकुलेटर के युग से कंप्यूटर और कंप्यूटर के युग से कृत्रिम बुद्धिमता तक तथा सॉफ्टवेयर उपकरणों द्वारा लेखांकन की इस युग में पहुंच चुके हैं. आज लेखांकन प्रक्रिया का संपादन घंटे की जगह मिनट में कुछ उंगलियां द्वारा संचालन से पूरा हो जाता है. आपने आगे कहा कि लेखांकन की भाषा शाश्वत एवं वैश्विक है, जिसमें नवीन तकनीकी के विकास के बाद भी कोई परिवर्तन नहीं होगा. यद्यपि उच्च स्तरीय लेखांकन के लिए डिजिटाइजेशन तथा नवीन सॉफ्टवेयर आदि का प्रयोग आवश्यक हो गया है. लेखांकन के क्षेत्र में नवीन तकनीकी से नई क्रांति का उदय हुआ है जिससे शोध के नए विषय सामने आ रहे हैं. आपने शोधार्थियों एवं विद्यार्थियों को इस बात से अवगत कराया कि जब तक वे नवीन तकनीकी से प्रशिक्षित नहीं होंगे, तब तक उन्हें लेखांकन के क्षेत्र में अच्छी नौकरी नहीं मिलेगी. परंतु तकनीकी दक्षता के

पश्चात वैश्विक परिवेश में रोजगार में वृद्धि होगी. आपने लेखांकन के क्षेत्र में कार्य करने वाले नव युवकों को आगाह किया कि स्वयं को नवीन तकनीकी से जोड़े अन्यथा लेखांकन में नवीन तकनीकी आने पर उन्हें कार्य से बाहर कर दिया जाएगा.

मुख्य अतिथि हरियाणा केंद्रीय विश्वविद्यालय से पधारे प्रोफेसर आशीष माथुर ने सतत प्रबंध पर अपनी बात शोधार्थियों एवं विद्यार्थियों के मध्य बात रखते हुए अपने वक्तव्य में कहा कि हमें सतत विकास की अवधारणा में सफलता तभी प्राप्त होगी जब हम गैर ब्रांडेड सामान को विकसित बाजार में ब्रांडेड सामान के तौर पर बेच सकेंगे. इस संबंध में आपने आगे मिलेट की आवश्यकता एवं बाजारीकरण पर बृहद चर्चा की. आपने टोयोटा कंपनी के एक स्लोगन "गो एंड सी फॉर योरसेल्फ" अर्थात "जाओ और खुद देखो" पर जोर देने की बात की तभी आप प्रथम अनुभव प्राप्त कर सकेंगे. भारत की युवाओं ने "उत्तम खेती, मध्यम बान , अधम चाकरी, भीख निदान" के प्रथम उत्तम खेती के उत्पाद को बाजारीकरण करने पर जोर देके रोजगार के बढ़ाया जा सकेगा. अपने आगे कहा कि उद्यमी बनने के लिए हमें मानवीय स्तर, रक्षा स्तर, एवं पर्यावरणीय स्तर पर नवाचार को बढ़ाना होगा. इस तरह प्रो. माथुर ने अपने वक्तव्य में सतत प्रबंधन को रोजगार का एक महत्वपूर्ण अवसर बताया.

वाणिज्य विभागाध्यक्ष एवं सेमिनार निर्देशक प्रो. जे. के जैन, लेखांकन शुद्धता की यात्रा को एक प्रविष्टि प्रणाली से ब्लॉकचेन तकनीकी तक की चर्चा करते हुए कहा कि लेखांकन परिदृश्य में शोध के नए विषय उदित हो रहे हैं जिसमें मानव संसाधन

प्रबंध लेखांकन, पर्यावरणीय लेखांकन, हरित लेखांकन, सामाजिक एवं नैतिक लेखांकन, फॉरेंसिक लेखांकन, हैप्पीनेस लेखांकन एवं वित्तीय फ्रॉड आदि नए विषयों पर शोध के लिए बल दिया. इसके साथ ही अपने भारतीय लेखांकन प्रमाण तथा अंतरराष्ट्रीय वित्तीय रिपोर्टिंग सिस्टम पर चर्चा की. अपने आगे कहा कि 4 मार्च राष्ट्रीय सुरक्षा परिषद का दिन लेखांकन

परिषद के लिए भी महत्वपूर्ण है क्योंकि लेखांकन में गलतियां एवं नियमों के न होने से औद्योगिक जगत में बड़ी दुर्घटना होने की संभावना बढ़ जाती है. आपने समय को अपने नियंत्रित नियंत्रण में रखकर कार्य करने से संपत्तियों में वृद्धि तथा समय बीतने पर कार्य को दायित्व में वृद्धि बताया. इसके साथ ही आपने टैली प्रोग्राम को आयोजित करने के लिए उचित कदम उठाए जाने की बात कही.

आपने कार्यक्रम की अध्यक्ष प्रो. नीलिमा गुप्ता, मुख्य अतिथि प्रो. आशीष माथुर, मुख्य वक्ता सी. ए. व डॉ. प्रियेश जैन, विभागीय सह संयोजक प्रो. मनविंदर सिंह पाहवा, संयोजक डा. सुषमा यादव, सह संयोजक डॉ. रूपाली सैनी का स्वागत किया तथा सभी को स्मृति चिन्ह, साल एवं श्रीफल से सम्मानित किया.

विभागीय प्रगति के बारे में बात करते हुए प्रो. जैन ने बताया कि विभाग ने विभागीय शिक्षाविदों के सम्मान में पांच सर्वोच्च शोध पत्र अवार्ड संस्थापित किए हैं जो इस प्रकार हैं - प्रो. अमर नारायण अग्रवाल विभाग संस्थापक श्रेष्ट शोध पत्र पुरूस्कार, प्रो. हरिशचंद्र सैनी (वित्त में) श्रेष्ट शोध पत्र पुरूस्कार, प्रो. रमेश कुमार भारती (लेखांकन में) श्रेष्ट शोध पत्र पुरूस्कार, प्रो. प्रफुल कुमार सेठ (कराधान में) श्रेष्ट शोध पत्र पुरूस्कार, प्रो. बिमल कुमार जैन स्मृति (मानव संसाधन तथा विपणन में) श्रेष्ट शोध पत्र पुरूस्कार. कार्यक्रम का संचालन विभाग में शोधार्थी पर्णवी निगानिया व अदिति स्वामी ने किया तथा आभार प्रो. मनविंदर सिंह पाहवा ने माना.

डॉ हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय में विधि विभाग द्वारा दो दिवसीय इंट्राडिपार्टमेंटल मूट कोर्ट प्रतियोगिता का हुआ आयोजन

मूट कोर्ट प्रतियोगिता के आयोजन से अच्छे व कुशल अधिवक्ता का निर्माण होता है- प्रो. पी पी सिंह

डॉ हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय में विधि विभाग द्वारा दो दिवसीय इंट्राडिपार्टमेंटल मूट कोर्ट प्रतियोगिता का शुभारंभ दिनांक 4 मार्च 2024 को उद्घाटन सत्र के आयोजन के साथ शुरू हुआ. उद्घाटन सत्र मे मुख्य अतिथि के रुप मे विधि संकाय के पूर्व डीन व विभागाध्यक्ष प्रो. पी पी सिंह ने शिरकत की तथा अध्यक्षता विभागाध्यक्ष मनविन्दर सिंह पाहवा ने की. प्रो पी पी सिंह ने छात्रों को संबोधित करते हुए मूट कोर्ट प्रतियोगिता की उपयोगिता पर जोर देते हुए इसके महत्व व उपयोगिता को समझाया. श्री सिंह ने कहा कि विधिक शिक्षा का उद्देश्य बेहतरीन अधिवक्ता व जजों को निर्माण है और मूट कोर्ट प्रतियोगिता से विधार्थियों को न्यायालय के अंदर के व्यवहार को और बेहतर बनाया जा सकता है. विभागाध्यक्ष मनविन्दर सिंह पाहवा ने अपने स्वागत अभिभाषण मे मूट कोर्ट के आयोजन के महत्व पर प्रकाश डालते हुए इसे छात्रों के लिए अत्यंत उपयोगी बताया, उन्होंने कहा कि बिना कोर्ट के अनुभव के भारतीय न्याय व्यवस्था को बेहतर नही बनाया जा सकता है.

मूट कोर्ट प्रतियोगिता के लिए कुल 15 टीमों ने पंजीकरण किया था तथा 6 ने अपना मेमोरियल प्रस्तुत करते हुए इस प्रतियोगिता मे प्रतिभाग किया. प्रतियोगिता के प्रारंभिक दौर मे 3 राउंड का आयोजन हुआ जिसमे से निर्णायक की भूमिका मे कृष्ण कुमार, अनुपमा पंडित सक्सेना, नवनीत सिंह, रामदास राज, भरत सिंह, रुपाली जैन व ज्योति सोनी रही व इनके द्वारा दिये गये स्कोर के आधार पर टॉप 4 सेमीफाइनल टीमों का चुनाव किया गया. सेमीफाइनल मे निर्णायक के रूप मे बृजभूषण सिंह विधि अधिकारी, अतिरिक्त लोक अभियोजक रमन जारोलिया, अमन शर्मा अधिवक्ता व अधिवक्ता वरुण प्रधान रहे, जिनके दिये गये परिणाम के आधार पर पहली टीम सुनंद दीप सिंह, अर्नव यादव व ऋषभ कुमार तथा दूसरी टीम हर्षिता सिंह, प्रशांत तिवारी व दर्षना राय फाइनल मे पहुंची है.

फाइनल का आयोजन कल दिनाँक 5-03-2024 को होगा जिसमे मुख्य अतिथि के रूप मे पुलिस महानिरीक्षक प्रमोद वर्मा, विशिष्ट अतिथि प्रो हिमांशु पांडेय व कुलपति प्रो निलिमा गुप्ता कार्यक्रम मे शिरकत करते हुए प्रतियोगिता की विजेता टीम, उप विजेता टीम, बेस्ट स्पीकर, बेस्ट मेमोरियल व बेस्ट रिसर्चर का पुरस्कार प्रदान करेंगे.

कार्यक्रम के दौरान प्रतियोगिता संयोजक सहायक अध्यापक विवेक दुबे व सह संयोजक सहायक अध्यापक डॉ विकास अग्रवाल , रिसर्च स्कॉलर ऋषि मिश्रा, वैभव सिंह यादव, पूर्वा जैन,माधवी बघेल, व छात्र समनव्यक शांतनु भटेले, हर्षिता बादल, अदिति त्रिपाठी, शुभ शर्मा समेत विश्वविद्यालय के कई छात्र उपस्थित रहे.

प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्त्व विभाग में 'मध्यप्रदेश की कला एवं संस्कृति' विषय पर संगोष्ठी सम्पन्न

''मध्यप्रदेश की कला एवं संस्कृति में उत्कृष्ट शोध की आवश्यकता''- प्रो. राम अवतार शर्मा

प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्त्व विभाग, डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर में 'मध्यप्रदेश की कला एवं संस्कृति' विषय पर आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी का सफल आयोजन किया गया. उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता प्रोफेसर पी.के.कठल ने की. उद्घाटन सत्र की शुरुआत प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्त्व विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो.

नागेश दुबे के स्वागत उद्बोधन से हुआ उन्होंने मंचासीन कार्यवाहक कुलपति प्रोफेसर पी.के. कठल, मुख्य अतिथि प्रोफेसर आलोक त्रिपाठी, मुख्य वक्ता प्रोफेसर विभा त्रिपाठी, अधिष्ठाता प्रोफेसर डी.एस. राजपूत व सभागार में उपस्थित अन्य विद्वतजनों का स्वागत किया और उन्होंने कुलपति प्रोफेसर नीलिमा गुप्ता का मार्गदर्शन के लिए आभार व्यक्त किया.

उद्घाटन सत्र के मुख्य वक्ता काशी हिंदू विश्वविद्यालय की प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्त्व विभाग की एमिरेट्स प्रोफेसर, प्रो. विभा त्रिपाठी ने अपने बीज वक्तव्य में मध्य प्रदेश के पुरातात्विक व ऐतिहासिक पहलुओं पर विस्तार से प्रकाश डालते हुए बताया की किस प्रकार मध्य प्रदेश भारतवर्ष की संस्कृति और सभ्यता का प्रतिनिधित्व करता है, जिससे भारत के हृदय स्थल के रूप में इसकी पहचान और प्रभावी हो जाती है, मध्यप्रदेश भारतीय सभ्यता और

संस्कृति के केंद्र बिंदु में रखे जाने के विभिन्न कारणों को अपने अंदर सहेजे हुए है. उन्होंने मध्य प्रदेश में ताम्रश्मीय काल से लेकर ऐतिहासिक काल तक के दौरान पाए गए पुरातात्विक अवेशेषों व पुरास्थलों के महत्व के विषय में विस्तार से बताया व इस दौरान के विभिन्न पुरास्थल आदमगढ़, कायथा, एरण, खजुराहो, चौसठ योगिनी मन्दिर इत्यादि पुरास्थलों और प्राप्त पुरातात्विक महत्व के पुरावशेषों पर विस्तार से प्रकाश डाला.

उद्घाटन सत्र के मुख्य अतिथि प्रो. आलोक त्रिपाठी, अतिरिक्त महानिदेशक, भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण विभाग, (नई दिल्ली) ने मध्य प्रदेश की कला और संस्कृति के विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डालने के साथ औपनिवेशिक मानसिकता से हटकर पुरातात्विक महत्व के पुरास्थलों और प्राप्त सामग्री की स्वतन्त्र व्याख्या करने पर बल दिया उन्होंने यह अपील की, कि प्राप्त अवशेषों का अध्ययन उस समय के मानव और उनके कार्यप्रणाली उनकी सामाजिक, आर्थिक व्यवस्था को जानने के लिए करने की आवश्यकता है, ना की परंपरागत मानसिकता के अनुसार साथ ही उन्होंने आने वाले शोधार्थियों और पुरातत्व के विद्यार्थियों को नवीन दृष्टिकोण से कार्य करने की सलाह दी.

अधिष्ठाता प्रोफेसर डी.एस. राजपूत ने भी कला और संस्कृति के विषय पर अपनी राय और अपने विचारों को साझा किया साथ ही उन्होंने कहा की हमारे जीवन जीने की शैली को संरक्षित करने का कार्य कला और संस्कृति करती है, वर्तमान में आवश्यकता है हमारे अतीत की कला और संस्कृति के विषय में अधिक जानने की और उनके योगदान को समझने की है.

कार्यवाहक कुलपति प्रोफेसर पी.के. कठल ने इसे गौरव का पल बताया और कहा कि जब हम किसी गूढ़ विषय को समझने का प्रयत्न करते हैं, तो हमें अपनी बुद्धि का उपयोग करना चाहिए विज्ञान का कार्य चीजों को जटिल तरीके से पेश करना नही है अपितु उसको सरलता के साथ प्रस्तुत करना है वर्तमान में आवश्यकता है, कि जब हम किसी वस्तु को देखें तो उसे एक नए नजरिए से देखने का प्रयास करें ना कि विद्यमान ज्ञान के अनुरूप था.

इस अवसर पर डॉ हरिसिंह गौर विश्वविद्यालय के प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्त्व विभाग व बीरबल साहनी पुराविज्ञान संस्थान लखनऊ (उ.प्र.) के मध्य विभिन्न अकादमिक एवं शोध कार्यों के समझौता ज्ञापन (एम.ओ.यू.) पर हस्ताक्षर विश्वविद्यालय के कुलसचिव प्रो. सत्यप्रकाश उपाध्याय व डॉ. नीरज राय, निदेशक बीरबल साहनी वानस्पतिक शोध संस्थान लखनऊ के द्वारा किया गया. कार्यक्रम के समन्वयक और निदेशक डॉ. सुरेंद्र यादव ने आभार ज्ञापित किया और साथ ही कार्यक्रम के रूपरेखा के विषय में बताया. कार्यक्रम का सफल संचालन डॉ. पंकज सिंह के द्वारा किया गया.

इस राष्ट्रीय संगोष्ठी में चार तकनीकी सत्र आयोजित हुए. जिनमें लगभग 35 शोध पत्रों का वाचन किया गया. उद्घाटन सत्र के पश्चात दो तकनीकी सत्रों का आयोजन किया गया प्रथम तकनीकी सत्र के विषय विशेषज्ञ प्रोफेसर बी.के. श्रीवास्तव, अध्यक्ष इतिहास विभाग थे. प्रोफेसर सरोज गुप्ता ने तकनीकी सत्र की अध्यक्षता की. डॉ निधि पांडे ने इस तकनीकी सत्र का संचालन किया. इस तकनीकी सत्र के दौरान कुल पांच शोध पत्र प्रस्तुत किए गए.

द्वितीय तकनीकी सत्र की अध्यक्षता प्रोफेसर आनंद प्रकाश त्रिपाठी अध्यक्ष हिंदी विभाग, डॉ हरिसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर, ने की. विषय विशेषज्ञ प्रोफेसर शिवाकांत बाजपेयी रहे, इस तकनीकी सत्र का संचालन डॉ. आर.पी सिंह ने किया. इस तकनीकी सत्र के दौरान कुल 10 शोध पत्र प्रस्तुत किये गए. राष्ट्रीय संगोष्ठी के दौरान दूसरे दिन 29 फरवरी, 2024 को तृतीय एवं चतुर्थ तकनीकी सत्र का आयोजन किया गया. जिसमें तृतीय सत्र की अध्यक्षता प्रो. नवीन गिडियन तथा विषय विशेषज्ञ के रूप में डॉ. मनोज कुमार तथा सत्र का संचालन डॉ. पंकज सिंह ने किया. इस तकनीकी सत्र में 08 शोध पत्र प्रस्तुत किये गये. अंतिम तकनीकी सत्र की अध्यक्षता प्रो. विभा त्रिपाठी तथा विषय विषेषज्ञ के रूप में डॉ. मोहनलाल चढ़ार तथा इस तकनीकी सत्र का संचालन डॉ. संजय बरोलिया ने किया. इस तकनीकी सत्र में 12 शोध पत्र प्रस्तुत किये गये.

तत्पश्चात् समापन सत्र का आयोजन किया गया. जिसमें मुख्य अतिथि के रूप में प्रोफेसर सुमन जैन, विभागाध्यक्ष, प्राचीन भारतीय इतिहास संस्कृति एवं पुरातत्त्व विभाग, काशी हिंदू विश्वविद्यालय तथा विषिष्ट अतिथि के रूप में प्रोफेसर आर.ए.शर्मा, पूर्व विभागाध्यक्ष, प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्त्व विभाग, जीवाजी विश्वविद्यालय, ग्वालियर थे. इस सत्र की अध्यक्षता विभागाध्यक्ष प्रो. नागेश दुबे ने किया. मुख्य अतिथि के रूप में प्रो. सुमन जैन ने मध्यप्रदेश के राजनीतिक इतिहास की निरंतरता पर प्रकाश डालते हुए कहा कि अपनी भौगोलिक एवं प्राकृतिक परिस्थितियों के कारण यह क्षेत्र सदैव से ही भारतीय इतिहास का केन्द्र बिन्दु रहा है. यह प्रदेश प्रागैतिहासिक काल से लेकर वर्तमान काल तक के इतिहास को अपने आप में समायोजित किये हुए है. यहाँ विभिन्न राजवंशों ने राजनैतिक सार्वभौमिकता को प्राप्त किया वही कुछ राजवंशों के विषय में अत्यल्प जानकारी प्राप्त हुयी है. उनके विषय में अनुसंधान किया जा रहा है और नवीन जानकारियां लगातार प्रकाश में आ रहीं हैं. इनमें बोधि वंश, पांडव वंश, शैल वंश इत्यादि अनेक छोटे राजवंशों प्रमुख हैं. आज आवश्यकता है, इन पर और अन्य विषयों पर गहन शोधकार्य करके आवश्यक जानकारी एकत्र कर मध्य प्रदेश के गौरवशाली इतिहास को उजागर करने की इसके साथ ही उन्होंने तिथियों के संबंध में आने वाली विभिन्न समस्याओं को हल करने हेतु विभिन्न सुझाव प्रस्तुत किये साथ ही एरण को विश्व विरासत स्थल में शामिल करने की उम्मीद जताई.

समापन सत्र के विशिष्ट अतिथि के रूप में प्रोफेसर आर.ए. शर्मा, पूर्व विभागाध्यक्ष, प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्त्व विभाग, जीवाजी विश्वविद्यालय, ग्वालियर ने राष्ट्रीय संगोष्ठी के सफल आयोजन के लिए बधाई देते हुए अपील किया कि मध्य प्रदेश के विभिन्न क्षेत्रों में उपलब्ध प्राचीन ऐतिहासिक स्रोतों पर अभी भी शोध करने की आवश्यकता है. विश्व में केवल दो विश्वकर्मा हैं, प्रथम ब्रह्मा द्वितीय मनुष्य एक ब्रह्मा जिसने समस्त सृष्टि की रचना की है और दूसरा स्वयं मानव है, जिसने अनेक अविष्कार किये हैं. उसने स्वयं ईश्वर की अवधारणा का विकास किया है. प्राचीन कलाकृतियाँ जो कई शताब्दी पहले की रचना है, ये सब भी मनुष्य की रचना है. वर्तमान में आवश्यकता है पुनः रचयिता की तरह उत्कृष्ट शोध कार्य करने की आवश्यकता है. मध्य प्रदेश के विभिन्न क्षेत्रों के प्राचीनतम् इतिहास के बारे में जानने की और उन पर शोध कार्य करने की

और साथ ही शोधार्थियों को चाहिए की वे उनके समय में चल रहे विभिन्न शोध कार्यों के संबंध में भी जागरूक रहें तथा उनसे सामंजस्य बनाकर ये पता करके कार्य करें की कहीं उनके कार्यों की पुनरावृत्ति तो नहीं हो रही शोधार्थियों का कार्य है कि बेहतर शोधकार्य करें और साथ ही उसे प्रकाशित कराने का कार्य करें. संगोष्ठी का फीडबैक देते हुये प्रो. विभा त्रिपाठी ने आयोजक मण्डल को शुभकामना देते हुये बतलाया कि हमें स्रोतों के वास्तविक साक्ष्यों पर आत्यधिक जोर देना चाहिये, जिससे भविष्य में किये जाने वाले शोध आने वाली पीढ़ियों के लिये सार्थक सिद्ध हो सके.

समापन सत्र अध्यक्षता विभागाध्यक्ष प्रोफेसर नागेश दुबे ने की. अपने अध्यक्षीय उद्बोधन के दौरान उन्होंने राष्ट्रीय संगोष्ठी की उपयोगिता पर प्रकाश डाला. कार्यक्रम में आये विभिन्न विद्वतजनों का आभार व्यक्त किया. कार्यक्रम के समन्यवक और निदेशक डॉ. सुरेंद्र यादव ने दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी के दौरान हुए गतिविधियों का संक्षिप्त प्रतिवेदन प्रस्तुत किया. कार्यक्रम में विभाग के अतिथि विद्वान डॉ. शिव कुमार परोचे, डॉ. मशकूर अहमद कादरी, संस्कृत विभाग के प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी, डॉ शशि कुमार सिंह, डॉ नौनिहाल गौतम, डॉ संजय कुमार, डॉ किरण आर्या, डॉ संजय बारोलिया, डॉ प्रीति बागड़े, शोधार्थी कीरत अहिरवार, यामिनी योगी, भरत यादव, आनंद जायसवाल, संजय आठिया, सोहन, ईशा के साथ विभाग के कर्मचारी मो. आदिल, हाशिम, राजेन्द्र, मोहन आदि उपस्थित थे.

डॉ. अंबेडकर ने अपना जीवन समाज कल्याण में लगाया :- सुधीर हिलशयन

21वीं सदी में भी डॉ. अंबेडकर के विचारों का महत्व है :- प्रो. सीमा प्रसाद

डॉ. अंबेडकर चेयर, डॉ. हरिसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर एवं डॉ. अंबेडकर चेयर, पटना विश्वविद्यालय बिहार के द्वारा संयुक्त रूप से 21वीं सदी में डॉ. अम्बेडकर के विचारों की प्रासंगिकता विषय पर ऑनलाइन आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया जिसमें मुख्य अतिथि एवं वक्ता पटना विश्वविद्यालय के डॉ. अंबेडकर चेयर की प्राध्यापक प्रो. सीमा प्रसाद ने संबोधित करते हुए कहा कि डॉ. अंबेडकर ने समाज में भेदभाव खत्म करने एवं शिक्षा को महत्व दिया। शिक्षा और प्रशिक्षण के माध्यम से पिछडे और गरीब का आर्थिक विकास हो सकता है विश्व में डॉ. अंबेडकर के विचार को महत्व दिया और आज भी उनके विचार महत्वपूर्ण है. कार्यक्रम के मुख्य वक्ता के रूप में संपादक डॉ. अंबेडकर फाउण्डेशन सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्रालय भारत सरकार दिल्ली के श्री सुधीर हिलशयन ने कहा कि डॉ. अंबेडकर ने अपना जीवन समाज और राष्ट्र कल्याण में लगाया. डॉ. अंबेडकर का चिंतन और दर्शन 21वीं सदी में उतना ही महत्वपूर्ण है जितना पहले था और आने वाले समय में भी रहेगा. कार्यक्रम का प्रस्तावना रखते हुए प्रो. राजेश गौतम ने कहा कि डॉ. अंबेडकर समता मूलक समाज का निर्माण करना चाहते थे. संगोष्ठी की अध्यक्षता करते हुए प्रो. चंदा बैन ने कहा कि भारतीय समाज ज्ञान को महत्व देने वाला है आज भी डॉ. अंबेडकर का दर्शन एवं विचार विश्व कल्याण के लिए हितकारी है. उक्त अवसर पर डॉ. देवेंद्र ने कहा कि वैश्वीकरण के दौर में डॉ. अंबेडकर के समाज कल्याण और आर्थिक विकास की नीति सबका हित करने वाली है. डॉ. अंबेडकर मानते थे कि संतुलित विकास होना चाहिए, संतुलित विकास से ही देश और समाज का विकास हो सकता है, और इसमें शिक्षा की बहुत महत्वपूर्ण भूमिका है. कार्यक्रम में आभार प्रदर्शन सहायक प्राध्यापक डॉ. अंबेडकर चैयर, पटना विश्वविद्यालय के डॉ. हुलेस मांझी ने किया एवं डॉ. मनोज गुप्ता, मऊ विश्वविद्यालय इंदौर के द्वारा द्वितीय सत्र में अपना उद्बोधन भी दिया. महाराष्ट्र, दिल्ली, उत्तर प्रदेश, बिहार, उत्तराखंड, हिमाचल प्रदेश, राजस्थान, मध्य प्रदेश, पंजाब आदि से प्राध्यापक एवं शोध छात्रों ने शोध पत्रों का वाचन किया। ऑनलाइन संगोष्ठी में 116 प्रतिभागी उपस्थित थे.

लेखांकन नवाचार से सामाजिक एवं पर्यावरणीय प्रतिबद्धता को बढ़ावा मिलेगा: प्रो. अग्रवाल

वाणिज्य विभाग, डॉक्टर हरि सिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर में द्विदिवसीय राष्ट्रीय सम्मेलन चार तकनीकी सत्रों का आयोजन किया गया जिनका विषय "लेखांकन नवाचार एवं सतत प्रबंधन" रहा. इसमें 90 से अधिक शोध पत्र पढ़े गए जिसमें 40 ऑफलाइन तथा 50 ऑनलाइन रुप में पढ़े गए. इन शोध पत्रों के अध्ययन से पता चला की सामाजिक और पर्यावरणीय रूप से अधिक मजबूत अर्थव्यवस्था बनने के लिए सार्वजनिक निजी भागीदारी, वैश्विक कॉर्पोरेट नागरिकता और सामाजिक उद्यमिता स्तंभ के रूप में कार्य करेंगे. तकनीकी सत्र की अध्यक्ष प्रो. कुशल जैन, भोपाल रहीं व मुख्य वक्ता के रूप में प्रो. राजीव अग्रवाल ने अपने वक्तव्य में बताया कि आज की तेज तकनीकी प्रगति ने लेखांकन में नए आयाम उत्पन्न किए हैं और व्यवसायों को सतत प्रबंधन की दिशा में बढ़ाने का अवसर प्रदान किया है. लेखांकन में हुए नवीन तकनीकी की शिक्षा से नैतिकता और दैहिकता की दृष्टि से विकासशील प्रबंधन में सुधार हो रहा है. इससे सामाजिक और पर्यावरणीय प्रतिबद्धता को बढ़ावा मिल रहा है और व्यवसायों को अधिक जिम्मेदार नागरिक के रूप में उत्कृष्ट की दिशा में आगे बढ़ने का सामर्थ्य मिल रहा है. अगले तकनीकी सत्र में भौतिक रूप से लगभग 42 शोध पत्र पढ़े गए. जिसमें शोध पत्रों के मुख्य विषय नवाचार लेखांकन, लागत न्युन्तमीकरण लेखांकन, रोजगार एवं बजट लेखांकन, कर लेखांकन तथा मानव संसाधन प्रबंध लेखांकन रहा. इस सत्र के अध्यक्ष प्रो. केशव टेकाम ने कहा कि अर्थशास्त्र के विभिन्न सिद्धांतों से लेखांकन प्रणालियों का उद्भव वर्तमान में बट वृक्ष की तरह से पल्लवित हो रहा है. आपने अपने उद्बोधन में शोध पत्रों की गुणवत्ता, भागीदार सदस्यों के उत्साह एवं शोध प्रविधियों के समुचित उपयोग से विभाग के द्वारा किए जाने वाले शोध कार्य सराहा. आपने सूक्ष्म शोध प्रविधियां तथा काई स्क्वायर टेस्ट, इनोवा प्रतिगमन, सह संबंध आदि के बेहतर उपयोग पर भी प्रयास डाला. इस सत्र की मुख्य वक्ता डॉ. अनिता कुमारी रही जिन्होंने सतत प्रबंधन पर प्रकाश डाला.

कार्यक्रम के समापन सत्र में मुख्य वक्ता के रूप में बोलते हुए वरिष्ठ पत्रकार पंकज सोनी जी ने कहा कि समाज उन लोगों पर टिका हुआ है जो कर्तव्यनिष्ठा एवं ईमानदारी से अपने दायित्वों का निर्वाहन कर रहे हैं. आपने यह भी कहा कि लेखांकन के

इस सेमिनार में छात्रों की प्रतिभागिता से यह बात स्पष्ट होती है कि अध्ययन की संपूर्णता इस बात पर निर्भर करती है कि हम समाज को वापस लौटने में कितने सक्षम हुए हैं. आपने वर्तमान परिपेक्ष में पत्रकारिता की चुनौतियों के मध्य ईमानदार रहकर कार्य करने की प्रेरणा को व्यक्तित्व विकास का एक महत्वपूर्ण आयाम माना.

वरिष्ठ शिक्षाविद् एवं समाजसेवी सुनील देव जी ने कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में बोलते हुए बताया कि भारतीय मानवीय एवं सांस्कृतिक शैली पर हो रही लेखांकन शोध, विषय को एक नई पहचान दे रहा है. आपने भारतीय भाषाओं के साथ-साथ मातृभाषा को अंगीकार करते हुए उनमें शोधकर करने पर जोर दिया. आपने यह भी कहा कि वाणिज्य विभाग द्वारा भारतीय ज्ञान परंपरा की शैली में राष्ट्रीय सेमिनार का आयोजन एक सार्थक कदम है. वाणिज्य विभागाध्यक्ष एवं सेमिनार निर्देशक प्रो. जे. के. जैन द्वारा संपूर्ण राष्ट्रीय अधिवेशन पर चर्चा के परिणामों को प्रस्तुत किया और कहा कि लेखांकन क्षेत्र में शोध का अपरिमित संभावनाएं हैं तथा सेमिनार में पधारे सभी अतिथियों विद्वानों एवं प्रतिभागियों को धन्यवाद देखकर इस प्रकार के सेमिनारों एवं शैक्षणिक कार्यक्रमों को सतत् जारी रखने की घोषणा की। दो दिवसीय सेमिनार के प्रतिवेदन का वाचन डॉक्टर सुषमा यादव द्वारा किया गया एवं धन्यवाद डॉ रुपाली सैनी द्वारा ज्ञापित किया गया.

हर्षिता, प्रशांत व दर्षना ने जीती मूट कोर्ट प्रतियोगिता

मूट कोर्ट के आयोजनों के बिना अधूरी है विधिक शिक्षा- IPS प्रमोद वर्मा

दो दिवसी अंतर विभागीय मूट कोर्ट प्रतियोगिता फाइनल राउंड व समापन सत्र के आयोजन के साथ आज संपन्न हुई इस प्रतियोगिता के फाइनल राउंड मे निर्णायक की भूमिका मे न्यायाधीश मनीष भट्ट, न्यायाधीश अब्दुल्लाह, प्रो पी पी सिंह व प्रो हिमांशु पांडेय रहे, जिनके दिये गये अंको के आधार पर हर्षिता, प्रशांत व दर्षना की टीम विजयी रही तथा सुनंद दीप सिंह, अर्नव यादव व ऋषभ कुमार की टीम उपविजेता रही. बेस्ट स्पीकर प्रशांत तिवारी व बेस्ट रिसर्चर यशस्वी ताम्रकार को चुना गया। कार्यक्रम की समापन सत्र के दौरान मुख्य अतिथि के रूप में सागर जोन के पुलिस महानिरीक्षक आईपीएस प्रमोद वर्मा, विशिष्ट अतिथि के रूप में प्रोफेसर हिमांशु पांडे, कुलपति प्रो. निलिमा गुप्ता, प्रो पी पी सिंह मौजूद रहे तथा कार्यक्रम की अध्यक्षता विभागाध्यक्ष प्रो मनविंदर सिंह पाहवा ने की। पुलिस महानिरीक्षक प्रमोद वर्मा ने छात्रों को सम्बोधित करते हुए कहा कि जिस तरह भौतिक विज्ञान व रसायन विज्ञान की पढ़ाई बिना प्रयोगशाला के संभव नहीं है ठीक उसी प्रकार विधि की भी पढ़ाई बिना मूट कोर्ट के संभव नहीं है.

श्री वर्मा ने इस बात पर भी सहमति व्यक्त की कि जवाहर लाल नेहरू पुलिस अकादमी विश्वविद्यालय के साथ तीनों नये कानूनों भारतीय न्याय संहिता, भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता व भारतीय साक्ष्य अधिनियम को लोगों तक पहुँचाने तथा पुलिस प्रशिक्षण के लिए जल्द ही एमओयू हस्ताक्षरित करेगी. कुलपति प्रोफेसर नीलिमा गुप्ता ने विधि विभाग को अपने पहले अंतर विभागीय मूट कोर्ट प्रतियोगिता के आयोजन के लिए शुभकामनाएं देते हुए इसे भावी अधिवक्ताओं के व्यक्तित्व को निखारने वाला बताया तथा ऐसे हर आयोजन में अपना पूर्ण सहयोग देने की बात कही. विशिष्ट अतिथि प्रो. हिमांशु पांडेय ने विद्यार्थियों को इस प्रतियोगिता में भाग लेने के लिए बधाई दी तथा इसके महत्व को समझाते हुए बताया कि कोई भी ज्ञान बिना उसके व्यावहारिक प्रयोग के अधूरा है, विधिक ज्ञान को व्यवहारिक रूप से प्रयोग किया जाना आवश्यक है. श्री पांडेय ने छात्रों को मूट कोर्ट की बारीकियों से भी अवगत कराया. विभागाध्यक्ष प्रो मनविंदर सिंह पाहवा ने इस शानदार कार्यक्रम के आयोजन के लिए सभी को बधाई दी तथा अतिथियों को पौधा व स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया.

कार्यक्रम के दौरान प्रतियोगिता संयोजक सहायक अध्यापक विवेक दुबे व सह संयोजक सहायक अध्यापक डॉ विकास अग्रवाल, सहायक अध्यापक कृष्ण कुमार, सहायक अध्यापक डॉ अनुपमा पंडित सक्सेना, शोध छात्र ऋषि मिश्रा व छात्र समनव्यक शांतनु भटेले, हर्षिता बादल, अदिति त्रिपाठी, शुभ शर्मा, शिवांग शर्मा, बृज बिहारी मिश्रा, अर्पित यादव, आदित्य सिंह जादौन, यश ठाकुर समेत विश्वविद्यालय के कई छात्र उपस्थित रहे.

डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर के शोधार्थी छात्रों को 'बेस्ट ऑरल प्रेजेंटेशन' से सम्मानित

डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर के शोधार्थी छात्र शिवम कुमार कोरी और सत्यमश्याम विश्वकर्मा ने फार्मास्युटिकल साइंस विभाग से 'बेस्ट ऑरल प्रेजेंटेशन' का सम्मान प्राप्त किया है. उन्होंने 27-28 फरवरी को स्वामी विवेकानंद विश्वविद्यालय, सागर, मध्य प्रदेश में आयोजित '12वे "इंटरडिसिप्लिनरी सिनर्जी: इंजीनियरिंग, फार्मेसी, कृषि, विज्ञान और शिक्षा में अंतराल को पाटना" पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में 'सिंथेसिस, बायोलॉजिकल इवैल्यूएशन, और इन-सिलिको एनालिसिस ऑफ सम नॉवेल नाइट्रोजन कंटेनिंग हेटेरोसाइक्लिक कंपाउंड्स एंड डिऑर्फेनाइजेशन ऑफ ऑर्फन जीपीआर 52 रिसेप्टर

यूजिंग इन-सिलिको स्टडीज' विषय पर ऑरल प्रेजेंटेशन किया. इस ऑरल प्रेजेंटेशन के दौरान उन्होंने द्वितीय और तृतीय स्थान हासिल किया. मेडिसिनल कैमिस्ट्री में प्रो. सुशील कुमार काशव और प्रो. गजभिये के सुपरवाइजन में शोध कर रहे हैं. इस महत्वपूर्ण उपलब्धि के लिए उन्होंने कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता, विभागाध्यक्ष प्रो. वंदना सोनी, उनके मार्गदर्शक प्रो. सुशील कुमार काशव, विभाग के सभी शिक्षकों, और अपने माता-पिता को समर्पित किया है.

"संगीत के मानव जीवन पर प्रभाव पर शोध की आवश्यकता" - प्रो० नीलिमा गुप्ता

संगीत विभाग डॉक्टर हरिसिंह गौर विश्वविद्यालय में दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का प्रारंभ हुआ. प्रथम सत्र का प्रारंभ मां सरस्वती की वंदना से हुआ इस सत्र में मुख्य अतिथि के रुप में विश्वविद्यालय की कुलपति प्रोफ़ेसर नीलिमा गुप्ता विशिष्ट अतिथि प्रो० दिवाकर राजपूत उपस्थित थे. संगोष्ठी के संयोजक डॉ० राहुल स्वर्णकार ने संगोष्ठी की समस्त रुपरेखा पर प्रकाश डाला। विश्वविद्यालय की कुलपति के द्वारा संगीत के महत्व पर प्रकाश डाला गया. उन्होंने कहा पारंपरिक भारतीय संगीत के आधुनिक स्वरुप में संगीत का शरीर एवम् मन पर प्रभाव महत्वपूर्ण है जिस पर शोध को प्राथमिकता दी जानी चाहिए. प्रो दिवाकर राजपूत द्वारा संक्षिप्त व्याख्यान प्रस्तुत किया गया. प्रथम सत्र में अध्यक्षीय उद्बोधन प्रो० अशोक अहिरवार जी द्वारा दिया गया। प्रथम सत्र में विषय विशेषज्ञ के रूप में डॉक्टर शारंगधर साठे जी रहे. उन्होंने संवादिनी पर बड़ी सुंदर प्रस्तुति दी. तबले पर संगत हृषिकेश सुरवसे जी द्वारा किया गया. तत्पश्चात दिल्ली से पधारे श्री जुहैब अहमद खान जी ने एकल तबला वादन की प्रस्तुति दी जिसमें हारमोनियम पर संगत श्री ललित जी के द्वारा की गई। सत्र में विषय विशेषज्ञ की रूप में दरभंगा से पधारी प्रोफ़ेसर लावण्या कीर्ति सिंह जी रहीं. अपने उद्बोधन में उन्होंने कहा कि संगीत की माया से कोई भी ना बच सका. उन्होंने अपने व्याख्यान में भारतीय संगीत के इतिहास पर संक्षिप्त रुप में प्रकाश डाला. इस सत्र में द्वितीय विषय विशेषज्ञ के रूप में श्री शंकुमय देवनाथ जी रहे उन्होंने राग मुल्तानी एवं राग पटदीप में अपनी प्रस्तुति दी. तत्पश्चात डॉक्टर देवीका बोरठाकुर जी द्वारा सत्रीय नृत्य की मनमोहक प्रस्तुति दी. कार्यक्रम का आभार व्यक्त कार्यक्रम संयोजक डॉ अवधेश प्रताप सिंह तोमर जी द्वारा किया गया. आज की संगोष्ठी के द्वितीय एवं समापन दिवस में डॉ देवेंद्र वर्मा, पंडित सुब्रतो डे डॉ इन्द्रेश मिश्रा, डॉ प्रवीण कसलिकर, डॉ नंदनी गायकवाड़ एवं निकिता लेले अपनी प्रस्तुति देंगे.

संगोष्ठी में पंडित देवेंद्र वर्मा, डॉ० हरि ओम सोनी, कीर्ति सोनी, प्रेम कुमार चतुर्वेदी, भुवनेश्वर तिवारी, पंडित विभूति मलिक, अभिनाश देसाई, दुर्गेश मिश्रा, श्री मोहन दास जी, डॉक्टर शशि कुमार सिंह एवं सिद्धार्थ शुक्ला जी सहित विश्वविद्यालय एवं शहर के गणमान्य नागरिक उपस्थित रहे.

प्राणी अध्ययन में ज्ञान का भण्डार है जेडएसआई - कुलपति प्रो नीलिमा गुप्ता

विश्वविद्यालय और जूलॉजिकल सर्वे ऑफ इंडिया के संयुक्त तत्त्वावधान में दो दिवसीय कार्यशाला आयोजित

डॉ हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर के जूलॉजी विभाग में बुधवार को जेडएसआई के संयुक्त तत्वाधान में दो दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया. कुलगुरू प्रो. नीलिमा गुप्ता की अध्यक्षता में यह कार्यशाला हुई जिसमें जेडएसआई से डॉ अंजुम रिजवी मुख्य अतिथि थीं।कार्यशाला के विषिष्ट अतिथि पूर्व विभागाध्यक्ष प्रो. डी.पी. गुप्ता रहे.

मिट्टी एवं जलीय जीवों को अलग करने एवं लक्षण वर्णन तकनीकि विषय पर दो दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया. प्रो वर्षा शर्मा ने कार्यशाला की प्रारंभिक जानकारी दी. कार्यशाला को-आर्डिनेटर प्रो श्वेता यादव ने कहा कि कार्यशाला एप्टरीगोट्स नेमाटोड केंचुए और मछलियाँ मुख्य रूप से एप्टीगोटस नेमाटोडस केंचुए और मछलियों पर केंद्रित है. उन्होंने कहा कि कार्यशाला में लगभग 65 विद्यार्थियों ने पंजीयन किया. प्रशिक्षण में विद्यार्थियों को पंरपरागत पहचान की तकनीकि की जानकारी दी जायेगी. अनुसंधान एवं विकास के निर्देशक प्रो. एच थामस ने विश्वविद्यालय विभिन्न कार्यक्रम की जानकारी दी. कार्यशाला की अध्यक्षता जेडएसआई डॉ. अंजुम रिजवी ने कहा जेडएसआई विभिन्न राज्यों के जीवों का अध्ययन एवं क्षेत्रीय जीव संरक्षण पर कार्य कर रही है. इसके साथ ही हम भारत में परिस्थिति की अध्ययन एवं पर्यावरण प्रभाव का आकलन पर भी कार्य कर रहे है. इस कार्यशाला में पंरपरागत पहचान की तकनीकि पर चर्चा करेगें.

कुलगुरू प्रो. नीलिमा गुप्ता ने कहा कि इस कार्यशाला के माध्यम से जेडएसआई और विश्वविद्यालय मिलाकर कार्य कर रहे है जिससे विद्यार्थियों को अधिक से अधिक नई तकनीकि की जानकारी दी जा सकें. उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय अभी तक 69 एमओयू साईन कर चुका है. अभी हाल ही में हिमाचल विश्वविद्यालय के साथ एमओयू साईन किया गया है. जिससे विभिन्न क्षेत्र के विधार्थियों को अन्य क्षेत्र में रिसर्ज में मदद

मिलेगी. जूलॉजिकल सर्वे ऑफ इडिया (जेडएसआई) पर्यावरण और वन मंत्रालय का एक अधीनस्थ संगठन है. ये प्राणियों के बारे में ज्ञान का भण्डार है. जेडएसआई के 16 केंद्र है. उन्होंने कहा कि शीघ्र ही विश्वविद्यालय की ओर जेडएसआई के साथ एमओयू साईन किया जायेगा. जिससे विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों को इसका लाभ मिल सकें. कार्यशाला के विषिष्ट अतिथि पूर्व विभागाध्यक्ष प्रो डीपी गुप्ता ने कहा कि जूलॉजी विभाग के लिये सौभाग्य है कि वर्तमान में माननीय कुलपति प्रो नीलिमा गुप्ता भी जूलॉजी विभाग से ही है. जिससे विभाग को भविष्य इसका लाभ मिलेगा. कार्यशाला में दोपहर तकनीकि मत्स्य वैज्ञानिक प्रो. जर्नद प्रसाद शुक्ला इंदिरा गांधी ट्रॉयबल विश्वविद्यालय अमरकंट भी उपस्थित रहे जो मत्स्य परजीवि के अध्ययन की तकनीकी विद्यार्थियों को सिखायेगे डॉ. गुरूपदा मडल मृदा के सूक्ष्म कीटों के बारे में गहन अध्ययन कराया सत्र पूर्व विभागाध्यक्ष प्रो. स्मिता बेनर्जी ने लिया. सभी आभार डॉ. पायल महोबिया ने किया. कार्यशाला में पूर्व विभागाध्यक्ष प्रो सुबोध जैन, प्रो यू.एस गुप्ता, डॉ जी.पी. शुक्ला, रीतिका, प्रो एम. एल. खान, डॉ. राजकुमार कोईरी, सहित अन्य फैकेल्टी उपस्थित रही.

महिलाओं के बुलंद इरादे बड़ी से बड़ी चट्टानों को तोड़ देती हैं- कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता

विश्वविद्यालय में अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस कार्यक्रम आयोजित

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस की पूर्व संध्या पर डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय के स्वर्ण जयन्ती सभागार में अंतर्राष्ट्रीय

महिला दिवस कार्यक्रम आयोजित किया गया. इस अवसर पर ‘इन्वेस्टिंग इन वूमेन : एक्सीलरेट प्रोग्रेस’ विषय पर व्याख्यान का आयोजन किया गया. कार्यक्रम कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता की अध्यक्षता में हुआ. इस अवसर पर प्रो. कुसुम भूरिया, प्रो. स्मिता बनर्जी, प्रो निवेदिता मैत्रा, प्रो अर्चना पांडे, प्रो चन्दा बेन, प्रो वंदना सोनी, डॉ. रश्मि सिंह मंचासीन रहीं. कार्यक्रम में खाद्य सुरक्षा एवं औषधि प्रशासन विभाग की पूर्व अपर मुख्य सचिव डॉ. अनीता भटनागर जैन उपस्थित रहीं. इस अवसर पर विश्वविद्यालय महिला क्लब की अध्यक्षा अनीता सोनी ने महिला क्लब की गतिविधियों को साझा करते हुए इसके वृहद उद्देश्यों को बताया. उन्होंने कहा कि कुलपति

महोदय के निर्देशन में महिला क्लब आगे बदकार सामाजिक जागरूकता, स्वास्थ्य, शिक्षा, सामाजिक उत्थान की दिशा में निरंतर कार्य कर रहा है. कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने अपने उद्बोधन में कहा कि एक समय था जब महिलाओं को केवल घरेलू कार्यों एवं बच्चे संभालने के लिए जाना जाता था. आज महिलायें घर से बहार निकलकर घर और बाहर दोनों जिम्मेदारियाँ संभाल रही हैं. यह केवल

अवसर मिलने के कारण ही संभव हुआ है. एक महिला जब बुलंद इरादों के साथ आगे बढ़ती है तो वह बड़ी से बड़ी चट्टान को तोड़ देती है. आज विज्ञान, तकनीकी, इंजीनियरिंग, जैसे क्षेत्रों में महिलायें आगे हैं और पायलट, प्रशासनिक अधिकारी और राजनीतिक नेतृत्व जैसे कठिन कार्यों को बखूबी निभा रही हैं. महिलायें पहले से ही सशक्त हैं. उन्हें सशक्त बनाने की नहीं केवल अवसर देने की जरूरत है. उनकी राहों में बाधा न बनते हुए समाज हुए उचित अवसर और वातावरण उपलब्ध कराए तो देश अपने आप प्रगति करेगा. उनकी ऊर्जा, क्षमता और विद्वता के सहयोग से भारत विश्व गुरु बनकर रहेगा. महिलाओं ने अपने मताधिकार को लड़कर हासिल किया है. वैश्विक प्रतिस्पर्धा में महिलाओं को भाग लेना चाहिए और हर क्षेत्र में आगे बढ़ना चाहिए. समाज में मौजूद लैंगिक भेद को खत्म होना चाहिए। इसके लिए समाज को खुद पहल करनी चाहिए और महिलाओं को प्रोत्साहन देना चाहिए.

स्त्री शक्ति के सपनों को उड़ान दें, देश अपने आप प्रगति करेगा- डॉ. अनीता भटनागर जैन

विशिष्ट अतिथि डॉ. अनीता भटनागर जैन ने कहा कि पूरी दुनिया में आज स्त्री की आधी आबादी है और भारत में भी है.

सबसे मजबूत तथ्य यह है कि हमारे देश की आधी आबादी की आयु 15-67 वर्ष के बीच है जो काफी सशक्त है. यह एक सशक्त समूह है जिसके सहयोग से भारत एक विकसित और सशक्त राष्ट्र बन सकता है. देश के कई सर्वे रिपोर्ट यह बताते हैं कि महिलाओं के प्रति हिंसा का ग्राफ अभी भी काफी है. यह मानसिकता और व्यवहार देश की प्रगति में बाधक है. आज लगभग 70 प्रतिशत महिलायें घरेलू हिंसा की शिकायत नहीं कर पातीं. कई बार उन्हें न्याय भी नहीं मिलता. यह चिंताजनक है. उन्होंने कहा कि आर्थिक स्वतंत्रता महिलाओं को सशक्त बनाती है. आज घरेलू श्रम के आर्थिक मूल्य को महत्त्व दिया जा रहा है. राष्ट्र की प्रगति में उनकी भूमिका को रेखांकित किया जा रहा है, यह एक सुखद पहलू है. समाज में यह मानसिक स्थिति बननी चाहिए कि बेटी जन्म ले तो घर में खुशी का माहौल हो. उन्होंने कहा कि जेंडर संवेदनशीलता का प्रशिक्षण घर से ही मिलता है इसलिए हमें अपने आस-पास के वातावरण को लैंगिक भेद से मुक्त करना होगा तभी बड़े स्तर पर सामाजिक बदलाव संभव होगा। आज के दिन हम

सामाजिक कुरीतियों, और महिलाओं के खिलाफ होने वाली हिंसा का विरोध करने वाली महिलाओं का सम्मान करें. हम सब लड़कियों के सपनों को उड़ान दें, उन्हें अभिव्यक्ति की आजादी दें. देश अपने आप प्रगति करेगा.

कार्यक्रम का संचालन डॉ वंदना विनायक ने किया. इस अवसर पर विश्वविद्यालय के शिक्षक एवं बड़ी संख्या मे विद्यार्थी उपस्थित थे.

विश्वविद्यालय: हॉस्टल डे उत्सव में छात्राओं ने दी सांस्कृतिक प्रस्तुतियां

डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर के स्वर्ण जयंती सभागार में बालिका छात्रावास का हॉस्टल डे मनाया गया जिसमें छात्राओं ने मनोरंजक एवं मनमोहक सांस्कृतिक प्रस्तुतियां दीं. इस अवसर पर फार्मेसी विभाग की विभागाध्यक्ष उपस्थित थी.

कार्यक्रम के पूर्व मुख्य छात्रावास अधीक्षिका डॉ रश्मि सिंह ने छात्रावास की गतिविधियों से सम्बंधित वार्षिक प्रतिवेदन प्रस्तुत किया. उन्होंने बताया कि हॉस्टल में भारत के विभिन्न प्रान्तों से आई छात्राएं रह रही है। और यहां उन्हें सर्व सुविधाएं उपलब्ध हैं जैसे वाईफाई, हेल्थ, भोजन, आदि. छात्रों को उल्लसित रखने के लिए समय समय पर मनोरंजक गतिविधियों का भी आयोजन किया जाता रहा है. महिला क्लब के सदस्य भी इस आयोजन में उपस्थित थी. कार्यक्रम का संचालन डॉ वंदना राजौरिया ने किया. कार्यक्रम का उद्देश्य छात्राओं में शैक्षणिक गतिविधियों के अतिरिक्त सर्वांगीण विकास और उनमें नई ऊर्जा उत्पन्न करना था. कार्यक्रम में अंशिका तिवारी ने मनमोहक कत्थक की प्रस्तुत किया। जाया ने वेस्टर्न करके सभी का मन मोह लिया. मोहिनी ने मुरली की धुन पर प्रस्तुति दी. उड़ीसा का संबलपुरी नृत्य सीखा और मोनालिसा ने प्रस्तुत किया. अंशिका और अनुष्का ने गीत प्रस्तुति की. महाराष्ट्र का लोक नृत्य की प्रस्तुति हर्षिता साहू एवं तृप्ति द्वारा दी गई. राजस्थान संस्कृत की प्रस्तुति कल्पना द्वारा की गई। सरस्वती हॉस्टल की सुरंजना लोक गीत पर प्रस्तुति की. कल्पना अहिरवार ने मनोरंजक गीत प्रस्तुति दी. श्रीकृष्ण की लीला की प्रस्तुति आशिका शर्मा ने दी. सौम्या शुक्ला, अनुमाश्री, अंजली पटेल ने मंच संचालन किया.

विश्वविद्यालय: कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता का नाम शिक्षा क्षेत्र की सबसे प्रभावशाली महिलाओं में

बीडब्ल्यू एडुकएशन ने जारी की वर्ष 2024 की शिक्षा क्षेत्र में अग्रणी महिलाओं की सूची

डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता को शिक्षा में सबसे प्रभावशाली महिलाओं में स्थान मिला है। विश्वविद्यालय, सागर शहर, बुंदेलखंड सहित समूचे मध्य प्रदेश के लिए यह गौरवपूर्ण उपलब्धि है. प्रतिष्ठित संस्था बिजनेस

वर्ल्ड के बीडब्ल्यू एजुकेशन समूह प्रत्येक वर्ष अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर शिक्षा के क्षेत्र में पचास सबसे प्रभावशाली महिलाओं की सूची जारी करता है जिसका उद्देश्य इन महिलाओं को सम्मान प्रदान करना और पाठकों और आम जनमानस को प्रेरणा प्रदान करना है. इस सूची में राजनीतिक क्षेत्र, सांस्थानिक नेतृत्व, विज्ञान, कला, मानविकी और रचनात्मक क्षेत्रों में महिलाओं के साथ-साथ एडटेक, जमीनी स्तर पर काम करने वाली और अपने श्रमसाध्य काम के माध्यम से दूसरों को सशक्त बनाने की कोशिश करने वाली महिलाओं के नाम शामिल हैं. यह सूची साहित्य, मीडिया, कला, शिक्षा, प्रशासन और मीडिया जैसे क्षेत्रों की नामचीन हस्तियों के सलाहकार पैनल द्वारा अनुशंसित है जिसे कई स्तरों के परीक्षणों के बाद तैयार किया जाता है. इस सूची में पूर्व शिक्षिका एवं भारत की महामहिम राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मू, भारत सरकार की शिक्षा राज्य मंत्री अन्नपूर्णा देवी, दिल्ली की शिक्षा मंत्री आतिशी मारलेना, अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष (IMF) की उप प्रबंध निदेशक गीता गोपी नाथ, एनएसडी की पूर्व निदेशक अनुराधा कपूर सहित देश के प्रख्यात विश्वविद्यालयों की महिला कुलपतियों, शिक्षकों, कला, रंगमंच, तकनीकी एवं महत्त्वपूर्ण प्रशासनिक दायित्वों का निर्वहन कर रही महिलाओं के नाम शामिल हैं.

गौरतलब है कि डॉक्टर हरीसिंह गौर केंद्रीय विश्वविद्यालय, सागर की कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता का शैक्षणिक और नेतृत्व रिकॉर्ड उपलब्धियों भरा रहा है. डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय से पहले वह तिलका मांझी भागलपुर विश्वविद्यालय, छत्रपति साहूजी महाराज कानपुर विश्वविद्यालय की कुलपति रह चुकी हैं. वे कई समितियों और बोर्डों का भी हिस्सा रही हैं, जिनमें योजना और निगरानी बोर्ड, महात्मा गांधी केंद्रीय विश्वविद्यालय, मोतिहारी में विजिटर द्वारा नामित सदस्य, तमिलनाडु केंद्रीय विश्वविद्यालय की कार्यपरिषद सदस्य, गौतम बुद्ध विश्वविद्यालय, ग्रेटर नोएडा की बोर्ड ऑफ गवर्नर्स आदि हैं. पैरासिटोलॉजी, जलीय विष विज्ञान, जैव प्रौद्योगिकी, इम्यूनोलॉजी में विशेषज्ञता के साथ, उनकी 8 पुस्तकें, 36 पुस्तक अध्याय और 137 शोध पत्र प्रकाशित हैं. भारत सरकार के पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय से क्लासिफिकेशन पर आधारित उनके के लिए प्रतिष्ठित ईके जानकी अम्मल राष्ट्रीय पुरस्कार सहित उन्हें कई सम्मान एवं पुरस्कार मिले हैं. उनके गतिशील नेतृत्व में, विश्वविद्यालय ने कई उपलब्धियाँ हासिल की हैं जैसे विश्वविद्यालय को NAAC द्वारा A+ से मान्यता, कई समझौता ज्ञापनों (कामधेनु पीठ, एस व्यासा, भारतीय प्राणी सर्वेक्षण, पैलियोएथनोलॉजी रिसर्च सेंटर, मॉस्को, महार रेजिमेंट) पर हस्ताक्षर हुए.

इंजीनियरिंग में नए पाठ्यक्रम, पर्यावरण विज्ञान, वैदिक अध्ययन, आईटीईपी, होटल प्रबंधन, स्वास्थ्य देखभाल और अस्पताल प्रबंधन, यात्रा और पर्यटन प्रबंधन जैसे पाठ्यक्रमों ही शुरुआत के साथ-साथ उनके नेतृत्व में विश्वविद्यालय परिसर ने अपने विशाल परिसर में फैली नई इमारतों के साथ एक नया रूप ग्रहण किया. विश्वविद्यालय को अभी हाल ही में एपीएआर में उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए शिक्षा मंत्री द्वारा पुरस्कृत किया गया था. शिक्षा और अनुसंधान में उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए विश्वविद्यालय की उपलब्धियों को 'उत्कृष्टता के रास्ते' कार्यक्रम के तहत दूरदर्शन नई दिल्ली पर प्रदर्शित भी किया गया है. इस उपलब्धि पर विश्वविद्यालय परिवार में हर्ष व्याप्त है.

तार्किक दृष्टि ही विद्यार्थी का सर्वश्रेष्ठ गुण- प्रो. के. के. अग्रवाल

विश्वविद्यालय का 32वाँ दीक्षांत समारोह संपन्न, बुन्देली वेश-भूषा में विद्यार्थियों ने प्राप्त की उपाधियाँ

डॉ. हरीसिंह गौर केन्द्रीय विश्वविद्यालय, सागर का 32वां दीक्षांत समारोह बुधवार को विश्वविद्यालय के स्वर्ण जयन्ती सभागार में सुबह 10.30 बजे से आयोजित हुआ. समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में सार्क देशों द्वारा स्थापित दक्षिण एशियाई विश्वविद्यालय के अध्यक्ष प्रो. के. के. अग्रवाल, गौर अतिथि प्रख्यात शिक्षाविद्, पंजाब विश्वविद्यालय, चंडीगढ़ तथा बाबासाहेब भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय, लखनऊ पूर्व कुलपति पद्मश्री प्रो. आर. सी. सोबती उपस्थित रहे. विश्वविद्यालय के कुलाधिपति कन्हैया लाल बेरवाल, आईपीएस (से.नि.) ने समारोह की अध्यक्षता की. देवी सरस्वती एवं डॉ. गौर के चित्र पर माल्यार्पण एवं दीप प्रज्जवलन के साथ समारोह की शुरुआत हुई.

विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने स्वागत वक्तव्य के साथ विश्वविद्यालय की वार्षिक प्रगति का आख्या प्रस्तुत की. अतिथियों द्वारा स्मारिका का विमोचन किया गया. दीक्षांत समारोह का लाइव प्रसारण अभिमंच सभागार में भी किया गया. समारोह के मुख्य अतिथि प्रो. के.के. अग्रवाल ने दीक्षांत भाषण देते हुए कहा कि शिक्षा का काम ज्ञात समस्या का समाधान करना है जबकि दीक्षा अज्ञात समस्याओं के समाधान के लिए दी जाती है. दीक्षा प्राप्त करने के बाद अब आप जीवन और समाज में कार्य करने के लिए तैयार हो चुके हैं. डॉ. सर हरीसिंह गौर का इस विश्वविद्यालय की स्थापना में महती योगदान है. विद्यार्थी उनके जैसा महान बनने का संकल्प लें.

उन्होंने कहा कि आज शिक्षा के क्षेत्र में बहुअनुशासनिकता की बात की जा रही है. दुनिया के महान वैज्ञानिक और अनुसंधानकर्ताओं की चित्तवृत्ति बहुअनुशासनिक रही है तभी उनके अनुसंधान परिणाम नवोन्मेषी एवं जनकल्याणकारी रहे हैं.

उन्होंने कहा कि जीवन में उद्देश्य का होना बहुत आवश्यक है तभी आप सफल हो सकते हैं. आज शिक्षा में आउटकम बेस्ड लर्निंग की बात की जा रही है. विद्यार्थी केन्द्रित शिक्षा की बात की जा रही है. हम सभी को ऐसा वातावरण बनाना है कि हम लगातार डॉ. हरीसिंह गौर जैसे व्यक्तित्व पैदा कर सकें. यही हमारी सफलता एवं उत्कृष्टता का मानक होगा. विद्यार्थियों में प्रश्नाकुलता पैदा करें, उन्हें प्रेरित करें, उनमें आलोचनात्मक दृष्टि विकसित करें. यही नवाचारी शोधकर्ता के गुण हैं. उन्होंने पदक एवं उपाधि प्राप्त करने वाले सभी विद्यार्थियों को जीवन में सदैव बेहतर कार्य करने की प्रेरणा देते हुए शुभकामनाएं दीं.

जीवन में ज्ञान और कौशल का विवेकसम्मत उपयोग करें विद्यार्थी- कुलाधिपति कन्हैया लाल बेरवाल

विश्वविद्यालय के कुलाधिपति कन्हैयालाल बेरवाल ने अध्याक्षीय उद्बोधन देते हुए कहा कि उपाधि मिलना किसी भी विद्यार्थी के जीवन का सबसे सुखद क्षण होता है. सामान्यतयः सभी शैक्षणिक संस्थाओं में दीक्षांत समारोह का आयोजन किया जाता है लेकिन महान दानवीर, प्रतिभा के धनी, महान समाज सुधारक, दृढ प्रतिज्ञ डॉ. हरीसिंह गौर द्वारा स्थापित इस विश्वविद्यालय में दीक्षांत का आयोजन कई मायनों में विलक्षण है. उन्होंने पदक एवं उपाधि प्राप्त करने वाले सभी विद्यार्थियों को बधाई एवं शुभकामनाएं देते हुए कहा कि उपाधि लेने के बाद अब विद्यार्थी के जीवन में परीक्षाएं आरम्भ होंगी जिनमें उन्हें सफल होना है. जीवन के अलग-अलग क्षेत्रों में काम करते हुए उन्हें ज्ञान और कौशल का उपयोग विवेकसम्मत उपयोग करना है. शिक्षा के साथ संस्कार एवं पात्रता अति आवश्यक है तभी व्यक्ति को सफलता मिलती है. उन्होंने विश्वविद्यालय के लगातार उन्नयन एवं प्रगति के लिए कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता को उनके सम्यक अकादमिक एवं प्रशासनिक नेतृत्व के लिए बधाई दी.

ज्ञान एवं संस्कृति के सह-आस्तित्व को शिक्षा में पोषित करने की आवश्यकता-पद्मश्री प्रो. आर. सी. सोबती

गौर अतिथि पद्मश्री प्रो. आर. सी. सोबती ने अपने उद्बोधन में भारतीय ज्ञान एवं संस्कृति के सह-आस्तित्व को शिक्षा में पोषित करने की क्षमता पर बल देने की बात की. उन्होंने आगे कहा कि प्रकृति सबसे बड़ी शिक्षक है प्रकृति से सीखने की आवश्यकता ही शिक्षण पद्धति का महत्त्वपूर्ण अंग है भारतीय जीवन संस्कृति, पाश्चत्य संस्कृति से बहुत ही वैज्ञानिक एवं तार्किक है तथा भारतीय शिक्षा पद्धति प्रारम्भ से ही एकीकृत रही है. उन्होंने विद्यार्थियों का आह्वान करते हुए कहा की ज्ञान प्राप्त करने के साथ ही साथ संसार एवं समाज की सेवा मानवीय मूल्यों के पथ पर चल कर करने का संकल्प लें.

डॉ. गौर विश्वविद्यालय भारतीय ज्ञान परंपरा का अकादमिक, सांस्कृतिक एवं साभ्यातिक केंद्र है- प्रो. नीलिमा गुप्ता, कुलपति

विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने वार्षिक आख्या प्रस्तुत करते हुए शिक्षकों, विद्यार्थियों की उपलब्धियों को रेखांकित किया. उन्होंने विश्वविद्यालय के नवीन छात्रावासों, अकादमिक भवनों, प्रयोगशालाओं, होटल मैनेजमेंट, इंजीनियरिंग, शारीरिक-शिक्षा जैसे नवीन पाठ्यक्रमों और शैक्षणिक समझौतों का उल्लेख करते हुए विश्वविद्यालय की अकादमिक एवं अधोसंरचनात्मक प्रगति को साझा करते हुए कहा कि आज विश्वविद्यालय राष्ट्रीय एवं वैश्विक स्तर के शैक्षिणक मानकों पर अपनी प्राचीन विरासत को संजो का आगे बढ़ रहा है साथ ही यहाँ के विद्यार्थियों का विभिन्न राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय संस्थानों में चयन इस बात का प्रतीक है कि हम अपनी गौरवपूर्ण यात्रा को समय एवं समाज के तारतम्य के साथ-साथ आगे बढ़ा रहें है. विश्वविद्यालय राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के अनुपालन में अपना श्रेष्ठ योगदान दे रहा है. राष्ट्रीय स्तर पर शिक्षा एवं अनुसन्धान हेतु माननीय प्रधानमंत्री के मार्गदर्शन में चलाये जा रहे विभिन्न नवोन्मेषी एवं गुणवत्तापूर्ण योजनाओं को विश्वविद्यालय में क्रियान्वित कर रहा है जिसके तहत एकेडमिक बैंक आफ क्रेडिट की स्थापना, डिग्रियों का डिजीलाकर में अपलोड, भारतीय ज्ञान परम्परा एवं भारतीय संस्कृति एवं मूल्यों से सम्बंधित पाठ्यक्रमों का सञ्चालन, संगीत, ललितकला, और प्रदर्शनकारी कला में राष्ट्रीय स्तर पर उल्लेखनीय प्रदर्शन, स्वच्छ भारत अभियान के

अंतर्गत विभिन्न जनजागरूकता कार्यक्रम, कौशल विकास और रोजगारपरक पाठ्यक्रमों के संचालन जैसे महत्त्वपूर्ण कार्य कर रहा है.

कार्यक्रम का संचालन डॉ. आशुतोष ने किया. दीक्षांत की औपचारिक कार्यवाही प्रभारी कुलसचिव डॉ. सत्यप्रकाश उपाध्याय ने संचालित की और आभार व्यक्त किया. राष्ट्रगान के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ. कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के शिक्षक, अधिकारी, कर्मचारी, उपाधि पाने वाले विद्यार्थी, पत्रकारगण, शहर के सम्माननीय नागरिक गण उपस्थित रहे.

भव्यता के साथ निकली विद्वत शोभायात्रा

कार्यक्रम में लोकवाद्य एवं मंगलाचरण के साथ अकादमिक विद्वत शोभायात्रा समारोह स्थल तक पहुँची. प्रभारी कुलसचिव डॉ. सत्यप्रकाश उपाध्याय ने विश्वविद्यालय ध्वज के साथ शोभायात्रा की आगवानी की. इसमें विश्वविद्यालय कुलाधिपति, मुख्य अतिथि, गौर अतिथि, कुलपति, कार्यपरिषद एवं विद्यापरिषद के सदस्य सम्मिलित हुए.

विभिन्न अध्ययनशालाओं के 56 मेधावी विद्यार्थियों को स्वर्ण पदक एवं प्रमाण पत्र

विश्वविद्यालय के विभिन्न अध्ययनशालाओं के 56 मेधावी विद्यार्थियों को अतिथियों ने स्वर्ण पदक और प्रमाण-पत्र प्रदान किया. दीक्षांत समारोह में सीबीसीएस प्रणाली के 11 अध्ययनशालाओं सहित 2 सम्बद्ध महाविद्यालयों के 1200 विद्यार्थियों

को उपाधि प्रदान किया गया जिसमें स्नातक के 478 , पीजी 376 एवं पीएच.डी. के 97 छात्रों सहित कुल 951 छात्र उपस्थित होकर उपाधि प्राप्त किया. इसके अतिरिक्त शेष विद्यार्थियों को 'इन अब्सेंशिया' उपाधि प्रदान की गई.

यूट्यूब पर हुआ दीक्षांत समारोह का लाइव प्रसारण

दीक्षांत समारोह के सम्पूर्ण कार्यक्रम का लाइव प्रसारण विश्वविद्यालय के ईएमआरसी सागर के यूट्यूब चैनल से किया गया. देश के कई हिस्सों से जो विद्यार्थी सहभागिता नहीं कर सके साथ ही उनके अभिभावकों ने लाइव प्रसारण देखा.

गौर समाधि पर अतिथियों ने पुष्पांजलि दी

दीक्षांत समारोह के आरम्भ होने से पूर्व गणमान्य अतिथियों ने गौर समाधि पहुंचकर पर डॉ. गौर को पुष्पांजलि अर्पित की.

एनसीसी कैडेट्स ने किया बैठक व्यवस्था में सहयोग

दीक्षांत समारोह के आयोजन में विश्वविद्यालय के एनसीसी कैडेट्स और अनुशासन व्यवस्था समिति के सदस्यों ने सहयोग किया.

विश्वविद्यालय ने डिजिलॉकर पर जारी की वर्ष 2023 में पाठ्यक्रम पूर्ण करने वाले 2187 विद्यार्थियों की डिग्री

डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर ने 32वें दीक्षांत समारोह के अवसर पर वर्ष 2023 में पाठ्यक्रम पूर्ण करने वाले यूजी के 1391 पीजी के 674 एवं पीएचडी के 122 विद्यार्थियों सहित कुल 2187 डिग्री सर्टिफिकेट आज (13/03/2024) डिजिलॉकर पर जारी कर दी है. सम्बंधित विद्यार्थी अब अपनी डिजिटल डिग्री डिजिलॉकर से भी निकाल सकते हैं. परीक्षा नियंत्रक डॉ एस पी गादेवार ने बताया कि वर्ष 2023 पाठ्यक्रम पूर्ण करने वाले विद्यार्थियों के ग्रेड शीट एवं ट्रांसक्रिप्ट भी उपलब्ध कराने का कार्य भी प्रगति पर है जो जल्द ही विद्यार्थियों को डिजिलॉकर पर उपलब्ध हो जाएगा. विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने इस अवसर पर कहा कि विश्वविद्यालय ने रिकॉर्ड समय में विद्यार्थियों की डिग्री ऑनलाइन रूप में डिजिलॉकर पर उपलब्ध कराई है. एक तरफ वे आज दीक्षांत में डिग्री फाइल प्राप्त कर रहे हैं, दूसरी तरफ उनकी डिजिटल

डिग्री भी आज से ही उपलब्ध है. यह विश्वविद्यालय की बड़ी उपलब्धि है. भारत के प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के डिजिटल इंडिया अभियान में विश्वविद्यालय ने एक कीर्तिमान स्थापित करते हुए यह कार्य संभव किया है. भारत सरकार ने डिजिटल डिग्री की मान्यता मूल डिग्री के बराबर कर दी है अत: हमारे विद्यार्थी डीजीलाकर पर उपलब्ध डिजिटल अकादमिक सर्टिफिकेट का उपयोग कर देश को डिजिटल रूप से सशक्त समाज और ज्ञान अर्थव्यवस्था में बदलने मे सहभागी बनें.

भारत आर्थिक महाशक्ति बनने की ओर अग्रसर है- कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता

विश्वविद्यालय के अर्थशास्त्र विभाग एवं वसुधा आर्थिक अनुसंधान संस्थान के सहयोग से दो दिविसीय सेमीनार का आयोजन

डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर में अर्थशास्त्र विभाग एवं वसुधा आर्थिक अनुसंधान संस्थान के तत्वावधान में दो दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय बहुअनुशासनिक संगोष्ठी का आयोजन किया जा रहा है जिसका विषय वर्तमान परिप्रेक्ष्य में सनातन आर्थिक चिंतन की प्रासंगिकता है. अभिमंच सभागार में उद्घाटन सत्र सभी अतिथियों द्वारा देवी सरस्वती एवं डॉ. गौर के चित्र पर माल्यार्पण एवं दीप प्रज्जवलन के साथ प्रारम्भ हुआ. संगोष्ठी में मुख्य अतिथि मुंबई से प्रो. प्रतिभा एस गायकवाड, विशिष्ट अतिथि मध्यप्रदेश लोकसेवा आयोग के सदस्य प्रो. नरेंद्र कोष्टी, विश्वविद्यालय के सेवानिवृत्त शिक्षक प्रो. के सी जैन थे. कार्यक्रम की अध्यक्षता कुलगुरु प्रो. नीलिमा गुप्ता द्वारा ने की. इस अवसर पर डीन प्रो. दिवाकर सिंह राजपूत, विभागाध्यक्ष प्रो. प्रकाश शंकर काम्बले, संगोष्ठी समन्वयक डॉ. वीणा थावरे मंच पर उपस्थित थे.

अध्यक्षता करते हुए विश्वविद्यालय की कुलगुरु प्रो. नीलिमा गुप्ता ने अपने उद्बोधन में कहा कि भारतीय ज्ञान परम्परा अति समृद्ध है और इसमें हर विषय पर चिंतन और दर्शन पहले से विद्यमान है. आज जरूरत है कि हम प्राचीन और सनातन ज्ञान की पुनार्वाख्या कर उसे वर्तमान के परिप्रेक्ष्य में आत्मसात करें और उनको अपने जीवन में लागू करें. उन्होंने खा कि अर्थशास्त्र एक ऐसा विषय है जिसका हर व्यक्ति से सम्बन्ध है चाहे उसने एक विषय के रूप अध्ययन किया हो अथवा न किया हो. उन्होंने विद्यार्थियों एवं शिक्षकों को बौद्धिक चर्चा के लिए प्रेरित करते हुए कहा कि हमें इस महत्त्वपूर्ण विषय पर चर्चा करनी चाहिए. आज भारत की जीडीपी मजबूत है. प्रधानमंत्री के श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में इसकी और मजबूती के लिए प्रयास किये जा रहे हैं. अब वह समय नहीं रहा कि दुनिया के देश हमें पिछड़ा कहें. उन्होंने कहा कि भारत आर्थिक महाशक्ति बनने के रास्ते पर है. भारत आत्मनिर्भरता की तरफ आगे बढ़ रहा है.

संयोजिका डॉ. वीणा ने बताया कि सनातन अर्थशास्त्र का अध्ययन करना क्यों आवश्यक है क्योंकि यह सबसे पुरानी संस्कृति की निरंतरता है जो शुद्ध और लालच रहित थी. उन्होंने कहा की यह संगोष्ठी ज्ञान के आदान प्रदान के साथ साथ शोध पत्र के

प्रकाशन का अवसर भी प्रदान कर रहा है. प्रो राजपूत ने कहा कि सनातन जीवन शैली जिसमें संयुक्त परिवार संस्कृति, आत्मानिर्भर ग्राम, गांवों के समूह सब शामिल थे जो आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण रहे हैं. उन्होंने सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक अध्ययन के शोध की दिशाओं पर प्रकाश डाला. प्रो. के. सी. जैन ने कहा कि आज तक सनातन अर्थव्यवस्था जैसे विषयों पर चर्चा नहीं हुई. इस विषय पर चर्चा इसलिए जरूरी है क्योंकि आधुनिक अर्थव्यवस्था मानवीय गुणों को छोड़कर क्रूर और प्रतिस्पर्धी हो गयी है. उन्होंने यह भी बताया कि आर्थिक व्यवहार करने के तरीके हैं- पूंजीवादी तथा समाजवादी है लेकिन आज के लिए सबसे अच्छा सनातन तरीका है जिसका दृष्टिकोण संतुलित है. प्रो. कोष्ठी ने भारत की जीवंत युवा जनसांख्यिकी के बारे में बात की, जो कुल आबादी का लगभग 65% है. विकासशील भारत और विजन@2047 के आधार पर भारत की अर्थव्यवस्था के साथ कैसे आगे बढ़ना है विषय पर उन्होंने चर्चा की. उन्होंने डॉ. सर हरीसिंह गौरजी का उदाहरण भी दिया जिन्होंने आजादी से पहले समाज के सभी वर्गों के लिए 2 करोड़ रुपये का दान दिया था. उन्होंने अर्थशास्त्र पर अतीत के याज्ञवल्क्य, शुक्रनीतिसार, चाणक्य एवं आधुनिक गांधीजी, दीन दयाल उपाध्यायजी आदि के उदाहरण दिये. उन्होंने छात्रों को सनातन अर्थशास्त्र को समझने के लिए विभिन्न पुस्तकें पढ़ने का सुझाव दिया. प्रोफेसर प्रतिभा गायकवाड़ ने अपना भाषण क्षेत्र में बहुमुखी अध्ययन आवश्यकता पर केंद्रित किया. उन्होंने कहा कि पढ़ाई क्यों जरूरी है, हमें कैसे सीखना चाहिए और सीखने के बाद क्या करना चाहिए. हमें अपने अध्ययन में ज्ञान पर ध्यान देना चाहिए. उन्होंने आज की विरोधाभासी स्थितियों में सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण पर भी ध्यान केंद्रित किया और इसके लिए समग्र दृष्टिकोण कितना आवश्यक है. उन्होंने यह भी बताया कि कैसे वैज्ञानिक और तकनीकी प्रगति हुई. अंतर्राष्ट्रीय सेमिनार में दो तकनीकी सत्र भी हुए जिनमें कई शिक्षकों और शोध विद्वानों के शोध पत्र प्रस्तुतियाँ शामिल थीं. कार्यक्रम में विश्वविद्यालयों के प्रोफेसरों, शिक्षकों के साथ-साथ शोध विद्वानों ने भी भाग लिया. कार्यक्रम 15 को भी जारी रहेगा. कार्यक्रम का संचालन डॉ आशुतोष मिश्र ने किया एवं प्रो. उत्सव आंनद ने आभार ज्ञापन दिया.

विधि विभाग के छात्रों ने सिंबायोसिस लॉ स्कूल नागपुर में विश्वविद्यालय का लहराया परचम

कानूनी बुद्धिमत्ता के एक रोचक प्रदर्शन में, सिंबायोसिस लॉ स्कूल, नागपुर, और राष्ट्रीय मानव अधिकार आयोग के सहयोग से आयोजित मूट कोर्ट प्रतियोगिता ने भारत भर से आए 67 टीमों के बीच कठिन प्रतिस्पर्धा को देखा. इसमें से 20 टीमें

मेमोरियल के मूल्यांकन के आधार पर चयन हुई; जो एक तंत्रिक कानूनी युद्ध के लिए मंच सजाने के लिए मेजबानी करने वाली थीं. प्रतियोगिता में "सर्वश्रेष्ठ मेमोरियल वादी", एक प्रतिष्ठात्मक सम्मान जिसके साथ एक ट्रॉफी और ₹10,000 की राशि पुरस्कार की प्रतिष्ठा डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय के विधि विभाग के प्रतिभाशाली छात्रों द्वारा प्राप्त की गई. विजयी टीम में शामिल छात्र कुलदीप केशरवानी (स्पीकर 1), विवेक सोनी (स्पीकर 2), और खुशी चौरसिया (रिसर्चर) थे, जो सभी डॉ. हरिसिंह गौर विश्वविद्यालय, विधि विभाग के छात्र है. उनके असाधारण कानूनी कौशल और एक प्रेरित मेमोरियल तैयार करने में उन्हें प्रतिस्पर्धा ने अलग बना दिया. उन्हें न्यायाधीशों और सहप्रतियोगीयों की प्रशंसा प्राप्त हुई.

विधि विभाग के प्रमुख प्रोफेसर मनविंदर सिंह पहावा ने विजयी टीम को प्रोत्साहित और अभिवादन किया और उनका नए और अन्य छात्रों के लिए रोल मॉडल मानकर स्वागत किया साथ ही उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की. विजय हुए प्रतिभागियों ने विभाग अध्यक्ष तथा अन्य शिक्षकों समेत उनके साथी सहपाठी नंदिनी तिवारी, अशोक यादव, वैष्णव शर्मा, वर्णित पंडाग्रे का इस सफलता में सहयोग करने के लिए बहुत बहुत आभार प्रकट किया. छात्रों और शिक्षकों के सहयोग से शिक्षा समुदाय की शक्ति का प्रदर्शन हुआ, जो कानूनी क्षेत्र में उत्कृष्टता को बढ़ावा देता है.

दर्शनशास्त्र विभाग के दो शोधार्थियों को पोस्ट डॉक्टोरल फैलोशिप एवं जूनियर रिसर्च फैलोशिप

दर्शनशास्त्र विभाग के शोधार्थी डॉ. दिनेश कुमार को भारतीय दार्शनिक अनुसन्धान परिषद्, नई दिल्ली द्वारा ''चेतना के महायानी व्यवदानी उपक्रम के आलोक में साभ्यतिक अंतर्विरोधों का समीक्षात्मक अध्ययन'' विषय पर पोस्ट डॉक्टोरल

फैलोशिप प्रदान की गई है. साथ ही साथ विभाग के एक अन्य शोधार्थी शिव कुमार यादव को भी ''पातंजल योगदर्शन में कर्म की अवधारणा: एक समीक्षात्मक अध्ययन'' विषय पर जूनियर रिसर्च फैलोशिप प्रदान की गई है. शोधार्थी डॉ. दिनेश कुमार एवं शिव कुमार यादव दर्शनशास्त्र विभाग के विभागाध्यक्ष, प्रोफेसर अम्बिकादत्त शर्मा जी के निर्देशन में अपना शोध-कार्य कर रहे हैं.

भारत तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था का लक्ष्य 2047 से पहले 2030 तक हासिल होने की उम्मीद - कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता

वैदिक साहित्य में छुपे हैं सतत विकास के सूत्र - प्रो होलानी

डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर के अभिमंच सभागार में 15 से 16 मार्च, 2024 तक "सतत विकास के भविष्य निर्माण : विकास और उन्नति की व्यूह रचना" विषय पर दो दिवसीय संगोष्ठी का उद्घाटन सत्र और तकनीकी सत्र आयोजित हुआ. उद्घाटन सत्र में विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो नीलिमा गुप्ता ने अपने उद्बोधन में वाणिज्य और प्रबंध अध्ययन विभाग के संयुक्त तत्त्वाधान में आयोजित इस संगोष्ठी के लिए संगोष्ठी के संयोजक डॉ. पुष्पा सूर्यवंशी और सह संयोजक डॉ. बबिता यादव को बधाई देते हुए यह कहा कि आज का युग भौतिक प्रगति के साथ-साथ स्थिर विकास को बढ़ावा देने का है और भारत इसकी अगुआई कर रहा है. यद्यपि भारत ने 2047 में विश्व की तीसरी बड़ी अर्थ व्यवस्था का लक्ष्य बनाया है, परन्तु जिस गति से भारत आगे बढ़ रहा है उससे यह लक्ष्य 2030 तक हाशिल होने की उम्मीद है. कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि ग्वालियर से पधारे प्रो. उमेश होलानी ने पश्चिमी और भारतीय विकास अवधारणा की तुलना करते हुए यह बताया कि हमारा वैदिक साहित्य सदियों से सतत विकास को ही पोषित और पल्लवित करने वाला है और इसे हम विगत वर्षों में भूल गए थे जो अब पुन: स्थापित करने की आवश्यकता है.

दिल्ली विश्वविद्यालय से पधारे प्रो. प्रभात मित्तल ने सतत विकास की अवधारणा को परिभाषित करते हुए उसे तकनीकी से जोड़कर नए सिरे से आर्थिक विकास के लक्ष्य निर्धारित करने की आवश्यकता पर बल दिया. इस उद्घाटन सत्र में महाराजा छत्रसाल विश्वविद्यालय, छतरपुर की कुलपति प्रो शोभा तिवारी ने ऑनलाइन जुड़कर अपनी शुभकामनाएं दी और उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि विगत विगत कुछ वर्षों से हमारी अर्थ व्यवस्था लालच आधारित हो गई है और यह सतत विकास की राह में सबसे बड़ी बांधा है. इसे नीड बेस (जरुरत आधारित) बनाने पर सतत विकास के लक्ष्य सहज ही पाए जा सकते है. इस संगोष्ठी की संयोजक डॉ. पुष्पा सूर्यवंशी ने संगोष्ठी की रुपरेखा प्रस्तुत करते हुए यह बताया कि इस सेमिनार के लिए 162 लोगों ने पंजीयन करवाया एवं कुल 87 पेपर प्राप्त हुए जिसके आधार पर दो पुस्तकों का ई-विमोचन माननीय अतिथियों द्वारा किया गया. कार्यक्रम में उपस्थित प्रोफेसर

चंदाबेन, प्रोफेसर श्री भागवत, प्रोफेसर जी. एल. पुणतांबेकर , प्रोफेसर डी. के. नेमा, प्रोफेसर गौरांग रामी, डॉक्टर आर. बी. अनुरागी, डॉक्टर परविंदर, डॉ किरण आर्या, डॉक्टर वीरेंद्र मत्सेनिया, डॉ केशव टेकराम, डॉक्टर विजय जरीवाला, डॉ मनीष, डॉक्टर भावेश, डॉक्टर राशि, डॉक्टर अवंती, डॉ अनूप, डॉ प्रदीप श्रीवास्तव आदि विश्वविद्यालय एवं अन्य विश्वविद्यालयो से शिक्षकगण, शोधार्थी एवं विद्यार्थी उपस्थित रहे. कार्यक्रम का संचालन डॉक्टर शालिनी चौथरानी ने एवं धन्यवाद ज्ञापन डॉक्टर बबीता यादव ने किया.

विश्वविद्यालय : पुरातात्विक मानवविज्ञान बहु-विषयक अध्ययन की वकालत करता है और यह मानव व्यवहार और सामाजिक संरचनाओं की अर्न्तदृष्टी के साथ जोड़ता है- कुलगुरु प्रो. नीलिमा गुप्ता

तीन दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला का शुभारम्भ

डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर के अभिमंच सभागार में मानवविज्ञान विभाग द्वारा आयोजित तीन दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला की अध्यक्षता कर रही विश्वविद्यालय की कुलगुरु प्रो. नीलिमा गुप्ता, मुख्य वक्ता डॉ. अविक विस्वास विद्यासागर विश्वविद्यालय कोलकत्ता, प्रो. देवाशीस बोस डीन, एस.ए.एस, प्रो. अजीत जायसवाल, निर्देशक आकादमिक अफेयर्स एवं विभागाध्यक्ष, प्रो. के.के.एन. शर्मा एवं कार्यशाला के समन्वयक डॉ. अरिवम विजयासुन्दरी देवी ने माँ सरस्वती एवं डॉ. गौर की प्रतिमा पर माल्यार्पण कर

दीप प्रज्वलन कर शुभारंभ किया. पुरातात्विक मानवविज्ञान बहु-विषयक अध्ययन की वकालत करता है और यह मानव व्यवहार और सामाजिक संरचनाओं की अन्तर्दृष्टी के साथ जोड़ता है, उक्त उदगार अध्यक्षता कर रही कुलपति, प्रो. नीलिमा गुप्ता ने अभिमंच सभागार में तीन दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला के प्रतिभागीयों को संबोधित करते हुये कही. उन्होनें कहा कि पुरातात्विक मानवशास्त्रीय दृष्टिकोण ने मानव इतिहास और संस्कृति को व्यापक रूप से समझने के लिए पुरातात्विक निष्कर्षो को मानवशास्त्रीय सिद्धांतों के साथ एकीकृत करने के महत्व पर जोर दिया. पुरातात्विक मानवविज्ञान का उद्देश्य मानव विकास और सांस्कृतिक विकास के समग्र दृष्टिकोण का निर्माण करना है.

मुख्य अतिथी प्रो. अभय कुमार सिंह, कुलपति नांलदा विश्वविद्यालय बिहार बर्चुअल रूप से संबोधित करते हुये कहा कि नवीन पुरातात्विक मानव ज्ञान की बात भारतीय परिपेक्ष में इतिहास, वर्तमान परिपेक्ष में बहुत महत्वपूर्ण है. पुरातात्विक मानवविज्ञान इतिहास, वर्तमान एवं भविष्य का अनुठा संगम है. जिसमें मानव के उद्वविकास से लेकर आधुनिक विकास तक खोज की तकनीके मानवशास्त्रीयों ने की है. वह इस बात की पुष्टि करती है कि विकास, अनुसंधान वैज्ञानिक पद्धितियों पर निर्भर है.

विशिष्ट अतिथी प्रो. के.के. बासा, अध्यक्ष राष्ट्रीय स्मारक प्राधिकरण, संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार नई दिल्ली, ने अपने वक्तव्य में संचित रूप से बताया कि पुरातात्विक मानवविज्ञान, भौतिक संस्कृति को समझने का प्रयास करता है जिसमें पुरातात्विक खनन और उसकी खोज करते हैं और साथ ही मध्य भारत के प्राचीन पुरातत्व स्थल का विस्तृत रूप से वर्णन किया. डॉ. अविक विश्वास कोलकत्ता ने कहा यह कार्यशाला शोधार्थी, विद्यार्थी व समाजविज्ञान के विद्यार्थियों के लिये महात्वपूर्ण साबित होगा उन्होने साथ ही कहा कि पुरातात्विक मानवविज्ञान में उत्खन्न व खोज तकनीक एक महात्वपूर्ण कुंजी है.

प्रो. देवाशीष बोस ने कहा कि मानवविज्ञान विभाग शोध एवं अध्यापन में निरंतर प्रगति के पथ पर चल रहा है. प्रो. अजीत जायसवाल विभागाध्यक्ष ने वर्कशॉप की रूप रेखा एवं स्वागत उद्बोधन देते हुये बताया कि कार्यशाला का विषय पुरातत्विक, मानवविज्ञान अन्वेषण, उत्खनन तकनीक का प्रदर्शन विषय पर केन्द्रित की गई है. देश के तीन शिक्षा एवं शोध के संस्थान क्रमशः मानवविज्ञान विभाग, डॉ. हरिसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर, न्यूट्रीजेनेटिक्स ऑफ ट्रांसलेशनल हेल्थ साइंस, छत्तीसगढ़ और द इन्टियूट ऑफ यूट्रीजेनेटिक्स एण्ड न्यूट्रीजीनोमिक रिसर्च, छत्तीसगढ़ के संयुक्त तत्वाधान में की जा रही है

जिसमे लगभग 100 प्रतिभागी पंजीकृत किए गये है. कार्यशाला उद्वेश्य मानव वैज्ञानिक शोधार्थी, अनुसंधानकर्ताओ को अनेक तकनीक के विषय विद्वानों द्वारा आधुनिक तकनीक के विषयो से प्रशिक्षित कर शोध में गुणवत्ता लाना है. समनवयक डॉ. अरिबम विजया सुंदरी देवी ने कार्यशाला की उपयोगिता पर प्रकाश डाला. प्रो. के.के.एन. शर्मा के मानवविज्ञान विभाग के स्थापना से लेकर अब तक के शिक्षाविदो शोध कार्यों से अवगत कराया. जिसमें प्रमुख प्रो. एस.सी. दुबे, प्रो. लीला दुबे, प्रो. योगेश अटल, प्रो. पी.के. श्रीवास्तव, डॉ. एच.एन पटेरिया, प्रो. रमेश चौबे है. प्रो. राजेश कुमार गौतम ने धन्यबाद देते हुये पुरातात्विक मानव

विज्ञान के बारे में प्रकाश डाला उन्होने कहा कि मानव व्यवहार विचार को बिना सीधे संबंध के अध्यनन करता है. संचालन मधुश्री डे एवं समीक्षा दवे ने किया. प्रमुख रूप से प्रो. चंदा बेन कुलानुशासक प्रो. ए.पी. मिश्रा डीन, प्रो. नागेश दुबे, डॉ शशिकॉत सिंह, प्रो. कालीनाथ झा, डॉ अवधेश कुमार, डॉ. विवेक जयसवाल, डॉ. हिमांशु कुमार, डॉ आयुष गुप्ता, कास्तुव देव शर्मा, बंसत सेन, सुमन साहु, धनशय, रोहित राय, बर्षा शडिल्य, निकिता दास, काव्या पाल, अशोक यादव, ज्योति ग्रेवाल, रोशनी पटेल, तनुश्री, योगेश गौतम, रितिका सेन, आकांक्षा शर्मा, सहित अनेक शोधार्थी एवं प्रतिभागी उपस्थित थे.

राष्ट्रीय सेवा योजना के स्वयंसेवकों ने राष्ट्रीय एकता शिविर में किया प्रतिभाग

डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय में संचालित राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई के तीन स्वयंसेवकों ने युवा एवं खेल मंत्रालय, भारत सरकार एवं क्षेत्रीय निदेशालय एनएसएस द्वारा हरियाणा के मनोहर मेमोरियल पीजी कॉलेज में दिनांक 12 मार्च से 18 मार्च तक आयोजित हुए सात दिवसीय राष्ट्रीय एकता शिविर में सहभागिता की.

इस राष्ट्रीय एकता शिविर में 12 राज्यों से स्वयंसेवकों को हिस्सा लेने के लिए चुना गया था. इस शिविर में सागर विश्वविद्यालय की राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई से श्रद्धा विश्वकर्मा, राजन गुप्ता तथा अमरनाथ मिश्रा को चयनित किया गया. एन एस एस निदेशालय प्रत्येक वर्ष राष्ट्रीय एकता शिविर का आयोजन करता है ताकि सांस्कृतिक आदान-प्रदान को बढ़ावा मिल सके. इस शिविर में सभी राज्यों की सांस्कृतिक झलकियां प्रस्तुत की गई. चयनित स्वयंसेवकों ने राष्ट्रीय एकता शिविर में मध्यप्रदेश प्रान्त की ऐतिहासिक-संस्कृति को राष्ट्रीय स्तर पर प्रस्तुत किया साथ ही मध्य प्रदेश की भौगोलिक सम्पदा, बोलियां, नृत्य आदि की प्रस्तुति विभिन्न गतिविधियों के माध्यम से की गई.

युवा मामले एवं खेल मंत्रालय, एनएसएस निदेशालय दिल्ली के कार्यक्रम सलाहकार सैमुअल चेल्लिया ने कहा कि सच्चे मायने में इस प्रकार के कार्यक्रम ही सांस्कृतिक आदान-प्रदान का स्रोत हैं और इस प्रकार के कार्यक्रम ही सांस्कृतिक आदान-प्रदान को सार्थक सिद्ध करते हुए इसे चरितार्थ सिद्ध करते हैं. इन तीनों स्वयं सेवकों को माननीय कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता के द्वारा प्रोत्साहित किया गया. कुलपति ने भविष्य में भी इस तरह की गतिविधियों में सक्रिय भागीदारी करने की अपेक्षा के साथ राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई के समन्वयक डॉ. संजय शर्मा, कार्यक्रम अधिकारी डॉ. वंदना विनायक एवं उपस्थित स्वयं सेवकों को शुभकामनायें एव बधाई प्रेषित की.

गौरैया की सुरक्षा एवं संरक्षण में विवि की पहल देश के लिए मिशाल है-कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता

विश्व गौरैया दिवस के अवसर पर कार्यक्रम का आयोजन

डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर के सांस्कृतिक परिषद् के तत्त्वावधान में प्रकृति संरक्षण की दिशा में अभिनव प्रकल्प के तहत महर्षि पतंजलि भवन परिसर में सृजित गौर गौरैया आवासीय कॉलोनी में विश्व गौरैया दिवस कार्यक्रम आयोजन किया गया. इस अवसर पर विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने कहा कि पक्षियों का वास हमेशा मनुष्य के समीप ही रहा

है. भारतीय परम्परा में पक्षियों को दाना-पानी देने की परम्परा काफी समय पहले से रही है. मनुष्य अपनी जरूरतों के मुताबिक़ जंगलों को काटकर अपने रिहायशी इलाकों का विस्तार करता गया और पक्षियों का आशियाना नष्ट होता गया. प्रकृति का इसी तरह दोहन होता रहा तो पर्यावरणीय संकट गंभीर होते जायेंगे. जैव विविधता मनुष्य के अस्तित्व के लिए आवश्यक है. उन्होंने कहा कि दुनिया भर में पक्षियों की प्रजातियाँ खतरे में हैं. नीदरलैंड जैसे देश में पक्षियों की कई प्रजातियाँ विलुप्त हो चुकी हैं. कुछ गंभीर खतरे से गुजर रही हैं. गौरैया की संख्या में दुनिया भर में 60 से 70 प्रतिशत तक कमी आ चुकी है. तिनका-तिनका इकट्ठा कर घोंसला बनाने वाली गौरैया के संरक्षण और पुनर्वास के लिए कदम उठाने चाहिए. बढ़ते प्रदूषण के कारण भी उन पर जीवन संकट है. उनकी त्वचा, जीवनशैली पर भी काफी बुरा प्रभाव पड़ रहा है. पेड़-पौधों की अंधाधुंध कटाई से पारिस्थितिकीय असंतुलन की स्थिति बन रही है और जैव-विविधता घट रही है. उन्होंने कहा कि गौरैया पक्षी खुशी का प्रतीक है. इनके संरक्षण की दिशा में हमें इसी तरह के अभिनव पहल करने की जरूरत है.

नियमित निगरानी के साथ इनकी बढ़ती हुई संख्या पर एक अध्ययन भी किया जा सकता है. उन्होंने कहा कि चिड़ियों की

चहचहाहट से दिन की शुरुआत होने से पूरा दिन मंगलमय बीतता है. गौरैया की सुरक्षा एवं संरक्षण में विवि की पहल देश के लिए मिशाल है. विश्वविद्यालय इस कॉर्नर को और विकसित करने के साथ ही परिसर में अन्य कई स्थलों को चिन्हित कर गौरैया संरक्षण की दिशा में प्रयास को आगे बढ़ाया जाएगा. उन्होंने बताया कि राष्ट्रीय सेवा योजना के बजट में गौरैया के दाना-पानी और पुनर्वास के लिए बजट स्वीकृत कर दिया गया है.

कार्यक्रम का संचालन डॉ. राकेश सोनी द्वारा किया गया. इस अवसर पर योग विभाग के शिक्षक डॉ अरुण साव, डॉ विवेक जायसवाल, सुरक्षा अधिकारी डॉ हिमांशु, योग एवं संगीत विभाग के शिक्षक, शोधार्थी, विद्यार्थी एवं कर्मचारी उपस्थित थे.

विश्वविध्यालय : डॉ. सर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय की "भारतीय भाषा प्रकोष्ठ" के माध्यम से भारतीय भाषाओं को जोड़ने की अनुकरणीय पहल

डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर के कुलपति सम्मेलन कक्ष में विश्वविद्यालय की माननीया कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता जी की अध्यक्षता में भारतीय भाषा प्रकोष्ठ की बैठक संपन्न हुई. इस बैठक में विश्वविद्यालय द्वारा गठित भारतीय भाषा प्रकोष्ठ के

प्रो. देवाशीष बोस, समन्वयक एवं प्रो. वर्षा शर्मा, सह समन्वयक तथा अन्य सदस्य जो भाषा अभिभावक के रूप में कार्य कर रहे उपस्थित रहे. प्रो. देवाशीष बोस ने बैठक के प्रारंभ में भारतीय भाषा प्रकोष्ठ के अंतर्गत लगभग 14 भाषाओं में विश्वविद्यालय के शिक्षकों द्वारा लिखी जा रही पुस्तकों के साथ-साथ पंजाबी, बांग्ला, संस्कृत, तेलगु, मलयालम आदि भाषाओं में लिखी जा रही पुस्तकों की जानकारी दी. उन्होंने अवगत कराया कि गुजराती, पंजाबी, हिंदी, उर्दू, अंग्रेजी, तेलगु, बांग्ला, मलयाली एवं उड़िया में पुस्तकों का लेखन कार्य पूर्ण हो गया है.

माननीया कुलपति महोदया ने समिति के प्रगति प्रतिवेदन पर प्रसन्नता व्यक्त करते हुये निर्देशित किया कि तमिल, मैथिली, मणिपुरी, मराठी, संस्कृत इत्यादि भाषाओं पर जो पुस्तकें लिखी जा रही है, उन पुस्तकों का लेखन कार्य अविलम्ब पूर्ण किया जाये, जिससे विश्वविद्यालय में अध्ययनरत् एवं देश के अन्य विश्वविद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों जो इन भाषाओं में शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं, वे भी इन भाषाओं में उपलब्ध होने वाली पुस्तकों से लाभांन्वित हो सकें. साथ ही उन्होंने इस बात पर भी जोर दिया कि विश्वविद्यालय में देश के विभिन्न राज्यों से शिक्षा हेतु आये हुये विद्यार्थियों के बीच आपस में एक दूसरे की सांस्कृतिक गतिविधियों को जानने समझने और उसकी महत्ता को रेखांकित किये जाने के उद्देश्य से विद्यार्थियों के बीच सांस्कृतिक रीति रिवाजों के आदान प्रदान हेतु विश्वविद्यालय में कार्यक्रमों के आयोजन किये जायें.

माननीया कुलपति महोदया ने यह भी सुझाव दिया कि एक ऐसी हेडबुक - रिफरेंस बुक भी तैयार की जाये जिसमें इन भाषाओं के उपयोगी वाक्य विन्यास का संकलन हो, जिससे विद्यार्थियों को स्थानीय जानकारियों हेतु सुविधा मिल सके. कुलपति महोदया ने एक कैलेण्डर तैयार करने के भी निर्देश दिये जिसमें देश के विभिन्न राज्यों के भाषायी समूह के सांस्कृतिक गतिविधियों की जानकारी एक साथ हो. भारतीय भाषा प्रकोष्ठ के समन्वय प्रो. देवाशीष बोस ने अवगत कराया कि उनके द्वारा एक स्पेनिश लेग्विज में पुस्तक का लेखन किया गया है. साथ ही भारतीय भाषाओं के साथ अन्य विदेशी भाषाओं यथा स्पेनिश, जर्मन, फ्रेंच आदि में भी पुस्तक लेखन कार्य की योजना है. भारतीय भाषा प्रकोष्ठ का यह समन्वित प्रयास है कि विद्यार्थी अपनी मातृभाषा के साथ-साथ देश की विभिन्न भाषाओं के प्रति जागरूक बनें तथा इन भाषाओं को सीखने के लिए प्रयास करें. डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर का यह प्रयास न केवल अनुकरणीय है बल्कि इससे भारतीय संस्कृति के अंतर्गत विभिन्न राज्यों/भाषायी समुदायों के माध्यम जो समृद्ध सांस्कृतिक परंपरा है, उसको जानने की दिशा में यह एक महत्वपूर्ण कार्य भारतीय भाषा प्रकोष्ठ के माध्यम से किया जा रहा है.

मानवविज्ञान विभाग के आयोजित तीन दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला का समापन

डॉ. हरीसिंह गौर वि.वि. सागर के मानव विज्ञान विभाग में तीन दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला का समापन समारोह के मुख्य अतिथि पापा राव अलाहारी, पूर्व विभागाध्यक्ष मानव विज्ञान श्री वेंकटेश्वर वि.वि. तिरूपति आन्ध्रप्रदेश, विशेष अतिथि प्रो. विजोय एस. सहाय, पूर्व विभागाध्यक्ष इलाहबाद वि.वि. इलाहबाद, मुख्य वक्ता डॉ. अविक विश्वास मानव विज्ञान विभाग विद्यासागर वि.वि. कोलकत्ता प्रो. अजीत जयसवाल विभागाध्यक्ष एवं निर्देशक फेकल्टी अफेयर्स एवं कार्यशाला के समनवयक डॉ. अरिबम विजया सुंदरी देवी ने माँ सरस्वती एवं डॉक्टर गौर के चित्र पर माल्यार्पण कर शुभारम्भ किया.

विभागाध्यक्ष अजीत जायसवाल ने स्वागत एवं कार्यशाला के रूपरेखा पर प्रकाश डालते हुये कहा कि देश के नामी गामी प्रतिष्ठित शिक्षा, अनुसंधान संस्थानो के वैज्ञानिको एवं शोधार्थियों को मानव विकास से जुडे समस्त प्रकार के वैज्ञानिक तकनीकियों से प्रशिक्षित कर शोध में गुणवत्ता

देना है उन्होने कहा कि मानव विज्ञान विषय प्रागतिहास काल से लेकर आधुनिक मानव तक जो विकास की यात्रा की है उसमें मानव विज्ञानियों का अनुकंर्णीय है उस में एवं विषय पुरातात्विक उत्खनन से जुडी शोध प्रतिधियों में विषय विद्वानो को बुलाकर शोधार्थियों को नई तकनीकी से प्रशिक्षित करना है तीन दिवस में अलग-अलग चार सत्र संम्पन्न हुये आठ विषय विद्वानो ने बहुत ही बारीकी के तकनीकी ज्ञान से प्रशिक्षित किया कार्यशाला के समन्वयक डॉ. अरिबम विजया सुंदरी देवी ने बताया कि मानव विज्ञान विषय में शारीरिक, समाजिक, संस्कृतिक एवं पुरातात्विक अध्ययन कराया जाता है इस कार्यशाला में पुरातात्विक मानव विज्ञान से जुडी उनकी खोज उत्खनन की तकनीक के विषय पर आयोजित कर प्रतिभागियो को प्रचीन संस्कृतियों के जटिल, पुरातात्विक अवशेषों को अध्ययन करने की तकनीकियों से प्रशिक्षित किया गया है जिसमें देश में 25 से ऊपर विश्वविद्यालयों के साथ शोध संस्थानो के 150 से ऊपर शोध छात्र-छात्राओं ने लाभ लिया है.

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि प्रो. पापा राव ने कहा कि पुरातात्विक मानव विज्ञान में उत्खनन तकनीक का एक महत्वपूर्ण योगदान है जिसकी सहायता से मानव विज्ञानी साक्ष्यों के आधार पर किसी भी संस्कृति के इतिहास को खोजने का कार्य करते है विश्व में भारत प्रचीन मानव संस्कृति की पहचान करने में अग्रणी देश माना गया है जिसमें मोहनजोदडो की संस्कृति पुरातात्विक वेत्ताओं ने खोज करके दी है. विशेष अतिथि प्रो. साह ने बताया कि मानव विज्ञान विभाग द्वारा पुरातात्विक मानव विज्ञान के क्षेत्र में अध्ययन करने के क्षेत्र में उत्खनन तकनीकी विषय पर केंद्रित कार्यशाला का आयोजन करके एक अच्छे विषय का चयन किया है. भारत देश विविधताओं से भरा पडा हुआ है हर 10 कि.मी. की दूरी पर बोली, भाषा, वस्त्र, आभूषण उपयोगी उपकरण बदल जाते है फिर भी अनेकता में एकता है. यहाँ के पुरातात्विक अध्ययन करना शोध के क्षेत्र में खजाना है उन्होंने प्रो. एस.सी. दुबे से लेकर अनेक मानव विज्ञानियों की चर्चा करते हुये सागर वि.वि. को शोध एवं शिक्षा के लिये अदभुत केंद्र बताया जिसने अंतर्राष्ट्रीय पटल पर पहचान दी है इस अवसर पर उनके द्वारा मालिक पुस्तक 'एन्थ्रोपालॉजिकल थॉट' पुस्तक का विमोचन किया गया.

डॉ. अविक विश्वास कोलकात्ता ने मानव के अस्तित्व और उसका प्राचीन इतिहास समझने के लिये हमें पुरातात्विक साक्ष्य महात्वपूर्ण लिंक प्रदान करते है विस्तार से प्रकाश डाला. प्रो. के.के.एन. शर्मा, डॉ. सोनिया कौशल, शोधार्थी छात्रा काव्या पाल, यामनी योगी, सिमरन शर्मा ने विचार रखे. प्रो. राजेश कुमार गौतम ने धन्यबाद व्यक्त किया कुमारी मधुश्री डे, समीक्षा दवे ने संचालन किया. प्रमुख रूप से कौशतो देव शर्मा, निकिता दास, बर्षा सान्डिल्य, बंसत सेन, पदमनि सा, अशोक यादव, रोहित राय सहित प्रतिभागी उपस्थित थे.

विश्वविद्यालय भूगोल विभाग मे शुरू हुई भूगोल दर्शन एवं शोध ज्ञान नवाचारों की श्रृंखला

डॉ. हरिसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर के भूगोल विभाग में दो नवाचारों भूगोल दर्शन एवं शोध ज्ञान की विधिवत् शुरूआत हुई. सर्वप्रथम मां सरस्वती एवं डॉ. गौर के समक्ष दीप प्रज्जलित एवं पुष्प अर्पित की गई. कार्यक्रम की अध्यक्षता पूर्व

विभागाध्यक्ष प्रो. आर.पी. मिश्रा ने की जबकि की-नोट स्पीकर भूतपूर्व विभागाध्यक्ष प्रो. जे. एल. जैन रहे. उक्त दोनो अतिथियों का शॉल, श्रीफल एवं पुष्प गुच्छ से स्वागत पश्चात् शब्द सुमनों से स्वागत डॉ. परवेन्द्र कुमार ने किया. इस प्रकार के अद्वितीय कार्यक्रमों की विस्तृत रूप रेखा भूगोल विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. विनोद कुमार भारद्वाज ने प्रस्तुत की. उन्होंने बताया कि भूगोल-दर्शन के अंतर्गत हर महीने कि किसी नियत तिथि को विभाग के एक शिक्षक द्वारा विशेषज्ञता, अनुभवों, शोध, एवं प्रकाशित शोधपत्रों को पी.पी.टी. के माध्यम से शिक्षकों, शोधार्थियों, पी.जी. विद्यार्थियों एवं दो बाह्य विशेषज्ञों के समक्ष प्रस्तुत किया जायेगा. शिक्षकों के इस प्रस्तुतीकरण का लाभ विभाग के अन्य शिक्षकों, शोधार्थियों, पी.जी. विद्यार्थियों को प्रत्यक्ष/अप्रत्यक्ष रूप से मिलेगा तथा शोध संबंधी गतिविधियों में उच्च गुणवत्ता आयेगी.

इसी प्रकार शोध ज्ञान कार्यक्रम के अंतर्गत हर महीने भूगोल दर्शन की तिथि के दिन विभाग के चार शोध छात्र पी.पी.टी. के माध्यम से अनुसंधान आधारित शिक्षा, शोध कौशल, पठन-पाठन भौगोलिक समवर्ती साहित्य आदि विषयों पर अपना प्रस्तुतीकरण करेंगे. इसका मतलब विभाग में शोधार्थियों द्वारा की जाने वाली शोध संबंधी गतिविधियों का सतत् मूल्यांकन तो होगा ही साथ ही उनमें कौशल विकास के साथ ही सीखने समझने एवं शोध संबंधी भ्रन्तियों को दूर करने में मदद भी मिलेगी. शोध ज्ञान में संयोजक डॉ. आर.बी. अनुरागी को बनाया गया है. उन्होंने इस कार्यक्रम की पूरी रूप रेखा प्रस्तुत की. इस कार्यक्रम के अंतर्गत विभाग के दो शोधार्थियों राहुल मिश्रा और जीतेन्द्र कुमार पटेल ने अपना शोध संबंधी अनुभव साझा किया. वही भूगोल दर्शन का संयोजक डॉ. सतीश सी. को बनाया गया है. डॉ. सतीश सी. ने इस कार्यक्रम की पूरी पृष्ठभूमि और आगामी भविष्य में इसके संचालन की तस्वीर प्रस्तुत की. भूगोल दर्शन के अंतर्गत विभाग के डॉ. हेमन्त पाटीदार ने अपने प्रकाशित शोध पत्र भारत में आजीविका की स्थिति विषय पर प्रस्तुतिकरण किया. कार्यक्रम में मुख्य वक्ता के रूप में प्रो.

जे.एल जैन ने मूर्ति विसर्जन एवं जल संरक्षण पर अपना सारगर्भित उद्बोधन प्रस्तुत किया. हमें बताया कि किस तरह से जल को सुरक्षित किया जा सकता है.

कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे डॉ. आर.पी. मिश्रा ने सम्पूर्ण कार्यक्रम को संक्षिप्तीकरण किया और विभाग द्वारा किये गये नवाचारों को न केवल विभाग में अकादमिक क्षेत्र की प्रगति का अध्याय बताया बल्कि उन्होंने कहां कि इस तरह के कार्यक्रमों से विश्वविद्यालय के अन्य विभाग भी लाभान्वित होंगे साथ ही भविष्य में यह विभाग अकादमिक क्षेत्र में मील का पत्थर साबित होगा. कार्यक्रम का संचालन डॉ. हेमन्त पाटीदार ने किया तथा इसमें विभाग के समस्त शिक्षक, शोधार्थी एवं पी.जी. विद्यार्थी उपस्थिति रहें.

विश्वविद्यालय : सामाजिक, आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग के विद्यार्थियों के शैक्षणिक एवं सामाजिक उन्नयन के लिए प्रतिबद्ध

डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर में दिव्यांगजन लर्निंग रिसोर्स सेंटर की स्थापना

डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर के कुलपति सम्मेलन कक्ष में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, नई दिल्ली द्वारा अपने परिपत्र F.No. F.6-2/2022/part-2 (SCT/Guideline NEP-2020) दिनांक 02 जनवरी 2023 के अंतर्गत जारी दिशा निर्देश

-सामाजिक-आर्थिक रूप से वंचित समूह के लिए समान अवसर उपलब्ध कराने हेतु दिशा निर्देश (एसईडीजी) को अंगीकृत करते हुये विश्वविद्यालय में उत्कृष्ट शिक्षा, लैंगिक समानता, दिव्यांगजन के लिए सुविधायें, कोई गरीबी नहीं, अच्छे कार्य एवं आर्थिक विकास को हासिल करने के लिये तथा सामाजिक आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग के विद्यार्थियों के शैक्षणिक एवं सामाजिक उन्नयन के साथ-साथ अवसरो की समानता उपलब्ध कराने हेतु गठित समिति की बैठक विश्वविद्यालय की माननीया कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता जी की अध्यक्षता में संपन्न हुई.

माननीया कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, नई दिल्ली के द्वारा जारी दिशा-निर्देशों पर त्वरित कार्यवाही करते हुये इस दिशा में तय किये गये मानकों को हासिल करने के उद्देश्य से विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के निर्देशानुसार समिति का गठन करते हुये स्वयं इस समिति की प्रथम बैठक की अध्यक्षता की. बैठक के प्रारंभ में इस समिति के अध्यक्ष प्रो. अनिल कुमार जैन, विभागाध्यक्ष, शिक्षा विभाग ने माननीया कुलपति महोदया द्वारा इस विषय की गंभीरता को समझते हुये एवं दिव्यांगजनों के लिए अतिआवश्यक सुविधाओं को अविलम्ब उपलब्ध कराने के लिए गठित समिति का अध्यक्ष मनोनीत किये जाने पर धन्यवाद ज्ञापित किया.

इस महत्वपूर्ण बैठक में प्रो. अस्मिता गजभिये, प्रभारी आंतरिक शिकायत समिति, प्रो. श्वेता यादव, विभागाध्यक्ष, प्राणीशास्त्र विभाग, डॉ. बलवंत सिंह भदौरिया, अधिष्ठाता, कला एवं सूचना विज्ञान, डॉ. रजनीश अग्रहरि, सहायक प्राध्यापक, शिक्षा विभाग, डॉ. नवीन सिंह, सहायक प्राध्यापक, शिक्षा विभाग के साथ-साथ विद्यार्थी प्रतिनिधि दिव्यांगजन - सुश्री आकांक्षा नामदेव, शोध छात्रा, प्रौढ़ शिक्षा विभाग, विद्यार्थी प्रतिनिधि दिव्यांगजन - श्री दुष्यंत कुमार मार्को, शोध छात्र, प्रौढ़ शिक्षा विभाग, सदस्यों के रूप में तथा श्री आशीष तिवारी, सहायक कुलसचिव - सदस्य सचिव के रूप में इस बैठक में उपस्थित हुये. बैठक की महत्ता को ध्यान में रखते हुये इस बैठक में विश्वविद्यालय के प्रभारी कुलसचिव डॉ. एस.पी. उपाध्याय, पुस्तकालयाध्यक्ष डॉ. मोहन टी.ए., सहायक पुस्तकालयाध्यक्ष डॉ. अनुराग श्रीवास्तव तथा सीनियर सिस्टम एनालिस्ट डॉ. रूपेन्द्र जे. चौरसिया भी इस बैठक में विशेष रूप से आमंत्रित थे.

बैठक में आवश्यक बिन्दुओं पर विस्तृत चर्चा की गई तथा उन पर सारगर्भित निर्णय लिये गये. माननीय कुलपति महोदया ने निर्देशित किया कि रंगनाथन पुस्तकालय में दिव्यांगजन लर्निंग रिसोर्स सेंटर की स्थापना के साथ विश्वविद्यालय में दिव्यांगजनों की विश्वविद्यालय में उपलब्ध सुविधाओं (7 कम्प्यूटर, 2 कीबो, आडियो सामग्री, यू रीड बुक) को त्वरित स्थानान्तरण किया जाये तथा दिव्यांगजन की शिक्षा के लिए जो भी आवश्यक उपकरण हैं, उनको क्रय कर इस सेंटर में संस्थापित किया जाये, जिससे दिव्यांगजन को सम्पूर्ण सुविधाएँ प्रदान की जा सकें. इसमे प्रथमतः ब्रेल प्रिंटर को क्रय किये जाने के संबंध में निर्णय लिया गया. विश्वविद्यालय में विधि एवं हिन्दी विभाग में अध्ययनरत् दिव्यांग विद्यार्थियों के लिए पाठ्य सामग्री ब्रेल लिपि में प्रिंट कराकर अविलम्ब उपलब्ध कराने का भी निर्णय लिया गया. बैठक में दिव्यांग विद्यार्थियों के लिए पाठ्य सामग्री सुगम्य पुस्तकालय जिसका केन्द्र भोपाल में है, की सदस्यता विश्वविद्यालय ने ले ली है जिससे सुगम्य पुस्तकालय में उपलब्ध लगभग 10 लाख ब्रेल पुस्तकें जो ई- लायब्रेरी में उपलब्ध हैं, का लाभ विश्वविद्यालय के समस्त दिव्यांग विद्यार्थियों के साथ-साथ संबद्ध महाविद्यालयों में अध्ययनरत दिव्यांग छात्र-छात्राएँ लाभ ले सकते हैं. जहाँ-जहाँ दिव्यांग छात्रों को आवश्यकता है, वहाँ-वहाँ रेम्प, टायलेट की सुविधा हेतु आवश्यक कदम उठाये जायेंगे. दिव्यांग छात्र-छात्राओं की परेशानियों को दृष्टि में रखते हुये यह भी निर्णय लिया गया कि दिव्यांग छात्र-छात्राओं की कक्षायें भूतल पर लगाई जायें तथा अग्रिम पंक्ति में उनके बैठने की व्यवस्था की जाये. इस आशय के निर्देश विश्वविद्यालय प्रशासन द्वारा जारी किये जा रहे हैं.

दिव्यांग विद्यार्थी जो विश्वविद्यालय के छात्रावासों में रहते हैं, के लिए यह निर्णय लिया गया कि समस्त दिव्यांग विद्यार्थियों को एक ही छात्रावास में स्थान उपलब्ध कराया जाये, जिससे उन्हें नैसर्गिक सुविधायें आसानी से प्राप्त हो सकें. विश्वविद्यालय के टैगोर छात्रावास में दिव्यांग छात्रों के लिए रेम्प, वाटर कूलर एवं टायलेट की सुविधा पूर्व से ही उपलब्ध है. इसी प्रकार रानी लक्ष्मीबाई कन्या छात्रावास में भी दिव्यांग छात्राओं के लिए रेम्प, वाटर कूलर, टायलेट की सुविधा है. अतः दिव्यांग छात्र-

छात्राओं के लिए इन छात्रावासों में ही रहने की सुविधा दी जाये. विश्वविद्यालय की बेबसाईट को दिव्यांग छात्र-छात्राओं हेतु यूजर फ्रेंडली बनाये जाने के लिये विश्वविद्यालय के सीनियर सिस्टम एनालिस्ट से सुझाव मांगे गये तथा निर्देशित किया गया कि विश्वविद्यालय की बेबसाईट पर स्क्रीन रीडर एसेस की सुविधा का विस्तार किया जाये. दिव्यांग विद्यार्थियों के लिए खेल कूद की सुविधाओं प्रदान किये जाने हेतु निदेशक शारीरिक शिक्षा विभाग को निर्देशित किया गया है तथा दिव्यांग विद्यार्थियों के लिए सांस्कृतिक गतिविधियों में सहभागिता हेतु सांस्कृतिक समन्वयक कार्य करेंगे. माननीय कुलपति महोदया ने प्रो. अनिल जैन, विभागाध्यक्ष, शिक्षा विभाग को निर्देशित किया कि दिव्यांग विद्यार्थियों की जो भी समस्यायें हैं, उनके निराकरण हेतु प्रबंधन का कार्य करेंगे. इस बैठक के माध्यम से दिव्यांग विद्यार्थियों के लिए नवोन्मेष योजनाओं के साथ-साथ विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, नई दिल्ली द्वारा तैयार दिशा निर्देशों के अनुपालन में डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर ऐसा प्रथम विश्वविद्यालय है, जिसने दिव्यांग विद्यार्थियों के लिए यूजीसी के कार्यादेश के अनुपालन में सार्थक पहल की है एवं अन्य अनुषांगिक कार्यों को प्रारंभ करने हेतु अपनी प्रतिबद्धिता ज्ञापित की है. माननीय कुलपति महोदया ने स्पष्ट रूप से यह भावना व्यक्त की है कि इन कार्यों की सतत् निगरानी हेतु वो स्वयं इस समिति की बैठकों में रहेंगी.

बैठक के अंत में माननीया कुलपति महोदया ने कहा कि दिव्यांग होना कोई कमजोरी की निशानी नहीं है, बल्कि दिव्यांगजन के पास स्वयं की एक पहचान होती है, प्रकृति उन्हें उस कमी से लड़ने की शक्ति प्रदान करती है और वह कोई न कोई अतिरिक्त हुनर के धनी होते हैं. उन्होंने कहा कि दिव्यांगजन समाज में अलग नहीं हैं, वे समाज का हिस्सा हैं. विश्वविद्यालय अपने दिव्यांग विद्यार्थियों के लिए उनकी शिक्षा के साथ-साथ स्किल एज्यूकेशन प्रदान करने के लिए भी कार्य योजना तैयार करेगा, जिससे इस विश्वविद्यालय के दिव्यांग छात्र-छात्रायें शिक्षा के साथ-साथ स्किल में भी पारंगत होकर आत्मनिर्भर बनें. विश्वविद्यालय में दिव्यांग अध्ययन केन्द्र की स्थापना प्रक्रियाधीन है. समिति के अध्यक्ष प्रो. अनिल कुमार जैन ने महत्वपूर्ण सुझावों एवं कार्यों के त्वरित क्रियान्वयन के माननीय कुलपति महोदया का आभार माना.

मानवविज्ञान विभाग की सुश्री दीपांजलि दास को पीएच.डी. की उपाधि

सुश्री दीपांजलि दास, पुत्री श्री बिरंचि दास, भुवनेश्वर, ओडिशा से, ने सफलतापूर्वक अपनी पीएच.डी. पूरी कर ली है. मध्य प्रदेश के सागर में डॉ. हरिसिंह गौर विश्वविद्यालय के मानवविज्ञान विभाग से मानवविज्ञान में प्रो. राजेश कुमार गौतम के

मार्गदर्शन में आयोजित उनका शोध, "नियमगिरि पहाड़ियों की डोंगरिया कोंध जनजाति (पीवीटीजी) और भारत के ओडिशा के जिला रायगढ़ा की पड़ोसी गैर-आदिवासी आबादी के बीच यौवन की शुरुआत और इसके निर्धारकों पर केंद्रित है." सुश्री दास, जिनके पास एम.एससी. है. उड़ीसा के केंद्रीय विश्वविद्यालय, कोरापुट के मानवविज्ञान विभाग से मानवविज्ञान में स्नातक और उत्कल विश्वविद्यालय, भुवनेश्वर से मानवविज्ञान में स्नातक (विशेष योग्यता के साथ ऑनर्स प्रथम श्रेणी) ने विभिन्न जनसांख्यिकीय समूहों के बीच यौवन की शुरुआत के संबंध में अभूतपूर्व टिप्पणियाँ की हैं.

उनका शोध पुरुषों और महिलाओं के साथ-साथ पीवीटीजी और गैर-आदिवासी बच्चों के बीच यौवन की शुरुआत में अंतर पर प्रकाश डालता है. विशेष रूप से, सुश्री दास ने शरीर के विकास के उपायों और यौवन की शुरुआत पर पोषण और जीवनशैली के प्रभाव के बीच जटिल संबंध का पता लगाया.

अध्ययन युवावस्था के विकास में पोषण की महत्वपूर्ण भूमिका पर जोर देता है. यह पर्याप्त पोषण स्थिति, शरीर के विकास के उपायों और यौवन की शुरुआत के बीच एक सकारात्मक संबंध स्थापित करता है. निष्कर्षों से पता चलता है कि स्वस्थ पोषण संतुलन बनाए रखना महिलाओं में मासिक धर्म और यौवन के दौरान पुरुषों में आवाज में बदलाव दोनों के लिए महत्वपूर्ण है.
सुश्री दास का शोध यौवन की शुरुआत को प्रभावित करने वाले विभिन्न निर्धारकों की पहचान करता है, जिसमें सामाजिक आर्थिक स्थिति, बीएमआई, पिता का व्यवसाय, पारिवारिक आय, जीवनशैली कारक और शरीर संरचना के उपाय शामिल हैं। यह समग्र दृष्टिकोण युवावस्था के विकास की बहुमुखी प्रकृति पर प्रकाश डालता है, युवावस्था के समय में भिन्नताओं को समझने और संबोधित करते समय इन निर्धारकों पर विचार करने की आवश्यकता पर बल देता है.
विशेष रूप से चिंता का विषय डोंगरिया कोंध जनजाति से संबंधित निष्कर्ष हैं, जहां पीवीटीजी आबादी के लड़कों और लड़कियों दोनों के एक महत्वपूर्ण अनुपात की पहचान अविकसित, कम वजन वाले और कमज़ोर के रूप में की गई थी. ये अवलोकन इस कमजोर आबादी के स्वस्थ यौवन विकास को सुनिश्चित करने के लिए किशोरावस्था के दौरान पोषण हस्तक्षेप और उचित समर्थन की तत्काल आवश्यकता को रेखांकित करते हैं.
सुश्री दीपांजलि दास का शोध मानवविज्ञान के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान देता है, युवावस्था के विकास की जटिलताओं पर प्रकाश डालता है और आदिवासी आबादी, विशेष रूप से ओडिशा में डोंगरिया कोंध जनजाति की भलाई को बढ़ावा देने के उद्देश्य से भविष्य के हस्तक्षेप और नीतियों के लिए मूल्यवान अंतर्दृष्टि प्रदान करता है.

विश्वविद्यालय : अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस की उल्टी गिनती कार्यक्रम

तनाव जीवन को कष्टमय बना देता है जबकि खुशनुमा माहौल जीवन को नई दिशा प्रदान करता है. युवा वर्ग अपनी शक्ति और ऊर्जा को रचनात्मक एवं राष्ट्र निर्माण में लगाएँ तभी वे समाज और देश की तरक्की का कारण बन सकते हैं. योग जीवन शैली

एवं साधना पद्वति ऐसी प्रशिक्षण विधि है जो जिम और कार्डियो व्यायाम से अधिक प्रभावकारी साबित होती है क्योंकि ये व्यक्ति के शारीरिक और मानशिक पक्षों को बल प्रदान करती हैं. उक्त उद्गार बुदेलखंड मेडीकल कालेज नेत्र विभाग के अध्यक्ष प्रो. प्रवीण खरे ने योग शिक्षा विभाग के द्वारा अंर्राष्ट्रीय योग दिवस की तैयारियों के शुभारंभ कार्यक्रम में व्यक्त किए.
विशिष्ट वक्ता छिंदवाडा से पधारे डॉ. रामशंकर दियावर ने कहा कि आप विद्यार्थियों में ऋषि चेतना का प्रभाव है जो आप योग साधक बने हैं. योग दर्शन है, विज्ञान तथा चिकित्सा पद्धाति है. योग साधना है साघन है ओर साध्य है. समग्र जीवन दृष्टिकोण में इस विषय को अपनाने से हम नैतिक चारित्रिक और शारीरिक स्वास्थ्य प्राप्त कर अध्यात्मिक उत्कर्ष प्राप्त कर सकते हैं.
अध्यक्षीय उद्बोसधन में विभागाध्यक्ष प्रो. बी.आई गुरु ने कहा कि योग विभाग द्वारा अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस की तैयारियों प्रारंभ करना विभागीय परंपरा का समुचित निर्वहन है. अपनी शुभकामनाएँ देते हुए प्रो. गुरु ने कहा कि हमारा जीवन नित नूतन हो,

नित नवीन हो और नित अपूर्व हो ताकि हम परमात्मा के जीवन के ध्येय की पूर्ति करने के योग्य बनें. स्वागत भाषण देते हुए डॉ. अरुण कुमार साव ने कहा कि भारत सरकार के आयुष मंत्रालय से एक सौ दिन की उल्टी गिनती से अंर्राष्ट्रीय योग दिवस की तैयारियाँ प्रारंभ की जाती है. इसके बाद देश में अलग अलग स्तर पर विविध आयोजन किए जाते हैं. योग विभाग आज से 85 दिन तक इस विद्या के प्रति समाज में जागरूकता और प्रसार का कार्य करेगा.

कार्यक्रम का संचालन करते हुए डॉ नितिन कोरपाल ने कहा कि आगामी दिनों में विभाग द्वारा शहर में अनेक स्थानों पर निशुल्क योग शिविर आयोजित किए जायेंगे. विभाग में योग संगोष्ठी एवं योग प्रतियोगिताएँ आयोजित की जायेंगी. ये समस्त आयोजन आगामी अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के लिए एक महौल का निर्माण करेंगे और दसवों योग दिवस भव्य एवं विशाल रूप में मनाया जायेगा.

अंत में आभार ज्ञापन डॉ. ब्रजेश ठाकुर ने किया. कार्यक्रम में कृति यादव एवं यशी यादव ने कृष्ण वंदना पर नृत्य, कामिनी चौबे ने योग गीत प्रस्तुत किया. विभागीय विद्यार्थियों ने योगाभ्यासों की प्रस्तुति की.

विश्वविद्यालय में शोध एवं विकास की असीमित संभावनाएं – प्रो. नीलिमा गुप्ता

शोध उत्कृष्टता के लिए विश्वविद्यालय में अंतर विभागीय बैठक आयोजित

डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय स्थित जनसंख्या अनुसंधान केंद्र, सागर की शोध गतिविधियों की समग्र उपयोगिता को विश्वविद्यालय के अन्य शैक्षणिक विभागों के साथ साझा करने तथा शिक्षकों, शोधार्थियों एवं स्नातकोत्तर छात्रों में शोध दक्षता

विकास तथा शोध कौशल आधारित कार्यक्रमों पर विचार विमर्श करने हेतु विश्वविद्यालय की माननीय कुलपति प्रो.नीलिमा गुप्ता की अध्यक्षता में दिनांक 26 मार्च को बैठक आयोजित हुई. कुलपति द्वारा पी.आर.सी. में किए गए शोध प्रोजेक्ट्स से प्राप्त डाटा की उपादेयता तथा इसके अन्य शोध उपयोगों के माध्यम से शोध दक्षता विकास तथा रोजगारोन्मुख शोध पाठ्यक्रमों को प्रारम्भ करने की दिशा में पी.आर.सी. द्वारा प्रस्तावित नवाचारों की सराहना की. पी.आर.सी. द्वारा किए जा रहे प्रस्तावित डाटा डाइलॉग, शोध समृद्धि, शोध सागर, शोध शक्ति तथा समग्र शोध आदि कार्यक्रमों की रूपरेखा को उन्होने

सहमति प्रदान करते हुए शैक्षणिक विभागों को इस केंद्र के साथ समन्वित प्रयासों से शोध कौशल आधारित लघु अवधि के प्रशिक्षण कार्यक्रमों की आवश्यकता पर बल दिया. कुलपति ने डाटा डाइलॉग कार्यक्रम को प्राथमिकता के साथ आयोजित किए जाने का निर्देश देते हुए कहा कि विभाग स्तर पर भी गुणवत्तापरक शोध क्षमता विकास हेतु प्रशिक्षण कार्यक्रमों को शीघ्र आयोजित किया जाए. इस प्रशिक्षण के माध्यम से पी.आर.सी. की शोध अवधारणाओं, केंद्र के पास उपलब्ध डाटा स्रोतों, नवीन शोध विधियों के बारे में विद्यार्थियों में दक्षता उन्नयन की असीमित संभावनाएं केंद्र के माध्यम से उपलब्ध है. कुलपति ने कहा कि विश्वविद्यालय में शोध की असीमित संभावनाएं विद्यमान है, विद्यार्थियों, शोधार्थियों तथा फेकल्टी को मिलकर संस्था हित में इनका उपयोग करना है.

लोक स्वास्थ्य के शोध विषयों हेतु प्रशिक्षित महिला शोधार्थियों के अभाव की पूर्ति केंद्र के शोध शक्ति प्रशिक्षण कार्यक्रम के द्वारा पूर्ण की जा सकती है. इस हेतु विश्वविद्यालय की छात्राओं को इस प्रशिक्षण कार्यक्रम हेतु प्रोत्साहित किया जाना चाहिए. शोध समृद्धि प्रशिक्षण कार्यक्रम में मुख्य रूप से शोध विधियों, डाटा विश्लेषण, डाटा प्रस्तुतीकरण तथा आधिकारिक डाटा स्रोतों की शोध उपयोगिता के बारे में तीन दिवसीय विभागीय शोध कार्यशाला को भी शीघ्र आरंभ करने हेतु योजनाबद्ध तरीके से करवाए जाने हेतु जनसंख्या अनुसंधान केंद्र के अधिकारियों को निर्देश दिये. इनमें डाटा डाइलॉग, शोध समृद्धि एवं शोध शक्ति (छात्रा विशेष प्रशिक्षण) कार्यक्रम विश्वविद्यालय स्तर पर तथा यथार्थ शोध एवं शोध सागर कार्यक्रम राष्ट्रीय स्तर पर आयोजित करवाए जायेंगे. इस कड़ी में आगामी अप्रैल तथा मई माह में कुछ विभागों में प्रशिक्षण आयोजित करवाए जायेंगे. केंद्र के माध्यम से लघु अवधि के कौशल दक्षता पाठ्यक्रम तथा सर्टिफ़िकेट प्रोग्राम आरंभ किए जाने का भी सुझाव दिया.

इस बैठक में जनसंख्या अनुसंधान केंद्र के मानद निदेशक प्रो. विनोद कुमार भारद्वाज तथा डॉ. निखिलेश परचुरे, शोध अन्वेषक द्वारा जनसंख्या अनुसंधान केंद्र की शोध गतिविधियों के बारे में विस्तृत प्रेजेंटेशन दिया गया। केंद्र के निदेशक, प्रो. विनोद कुमार भारद्वाज द्वारा बताया गया कि केंद्र द्वारा शिक्षकों, शोधार्थियों एवं स्नातकोत्तर विद्यार्थियों में शोध क्षमता विकास एवं शोध ज्ञान संवर्द्धन के प्रयोजन से विभिन्न प्रशिक्षण कार्यक्रम प्रस्तावित हैं और उनकी विस्तृत रूपरेखा तथा फेकल्टी, शोधार्थियों, एवं विद्यार्थियों के हित में उपादेयता रेखांकित की.

इस बैठक में निदेशक छात्र गतिविधि, निदेशक फेकल्टी अफेयर तथा निदेशक अकादमिक गतिविधि तथा भूगोल, समाजशास्त्र, राजनीतिशास्त्र, मानवविज्ञान, अपराधशास्त्र, अर्थशास्त्र, सांख्यिकी एवं मनोविज्ञान विभाग के विभागाध्यक्ष तथा शिक्षकों ने सहभाग किया. इस बैठक में केंद्र के मानद निदेशक प्रो. विनोद कुमार भारद्वाज के साथ केंद्र के शोध अधिकारी डॉ. रीना बासु, तथा डॉ. निखिलेश परचुरे एवं डॉ. निकलेश कुमार तथा भूगोल विभाग के डॉ सतीश, डॉ अनुरागी, डॉ हेमंत एवं डॉ परवेन्द्र कुमार भी उपस्थित रहे.

इन प्रशिक्षण कार्यक्रमों को आरंभ करने हेतु कुलपति के बहुमूल्य सुझावों एवं सभी उपस्थित विभागाध्यक्षगणों का प्रो. विनोद कुमार भारद्वाज द्वारा आभार व्यक्त किया गया.

--------//--------

खबरों में विश्वविद्यालय

विश्वविद्यालयः सरस्वती कन्या छात्रावास को किया 'राष्ट्र को समर्पित'

श्रेष्ठ शैक्षिक परिवेश ज्ञानार्जन को सहज और मानवीय बनाता है : डॉ. वीरेंद्र कुमार

जन चिंगारी- गजेंद्र ठाकुर

सागर। डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर में सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्रालय, भारत सरकार के सौजन्य से अन्य पिछड़े वर्ग की छात्राओं के लिए नव-निर्मित सरस्वती कन्या छात्रावास का लोकार्पण एवं 'राष्ट्र को समर्पण' कार्यक्रम विश्वविद्यालय के अभिमंच सभागार में आनलाइन माध्यम से आयोजित किया गया।

कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में बोलते हुए सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्री डॉ. वीरेंद्र कुमार ने कहा कि देश के अनुसूचित एवं अन्य पिछड़ा वर्ग के विद्यार्थियों के उत्थान एवं उनको शिक्षा एवं समाज की मुख्य धारा से जोड़ने के लिए प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता अनेक पहल कर रहा है इसी कड़ी में आज पूरे देश के विभिन्न क्षेत्रों के कुल 10 ओबीसी छात्रावासों को राष्ट्र के नाम समर्पित किया गया है. जिसमें लगभग 1400 छात्रों के रहने की व्यवस्था हो सकेगी. यह भी अत्यंत महत्वपूर्ण है कि इनमें चार छात्रावास सिर्फ छात्राओं के लिए आरक्षित है. मंत्रालय द्वारा सिर्फ छात्रावास के भवनों का ही नहीं अपितु इन छात्रावासों के सम्पूर्ण संसाधनो का भी विकास किया गया है जिससे इस संवर्ग के विद्यार्थियों को शिक्षा हेतु बेहतर सुविधा मिल सके।

हमारा मानना है कि एक श्रेष्ठ शैक्षिक परिवेश ज्ञान के संधान को सहज और मानवीय बनाने में सहयोगी बनता है. कार्यक्रम को सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्रालय के राज्य मंत्री माननीय डॉ. रामदास अठावले, राज्य मंत्री ए. नारायण स्वामी, राज्य मंत्री सुश्री प्रतिमा भौमिक ने भी संबोधित किया। विश्वविद्यालय में अभिमंच सभागार में कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रभारी कुलपति प्रो. पी के कठल ने किया इस अवसर पर प्रभारी कुलसचिव डॉ एस पी उपाध्याय, प्रो चंदा बेन, प्रो आनंद कुमार त्रिपाठी सहित अनेक गणमान्य शिक्षक, अधिकारी, कर्मचारी एवं विद्यार्थी उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संचालन एवं आभार ज्ञापन डॉ शशि कुमार सिंह ने किया।

ज्ञान और संसाधनों का पारस्परिक विनिमय भविष्य की मांग है : प्रो. गुप्ता

डा. हरीसिंह गौर व हिमाचल प्रदेश के केंद्रीय विवि के बीच हुआ अकादमिक अनुबंध

सागर(नवदुनिया प्रतिनिधि)। डाक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर एवं हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय धर्मशाला के मध्य शैक्षिक अनुसंधान कौशल विकास, गुणवत्ता उन्नयन, सामाजिक सरोकार से संबंधित विभिन्न विषयों को लेकर एक पूर्ण कालिक समझौता ज्ञापन हस्ताक्षर किया गया।

इस समझौता ज्ञापन के अनुसार दोनों विश्वविद्यालयों में विभिन्न शैक्षणिक विषयों में अनुसंधान, शिक्षा एवं नवाचारी परियोजनाओं को एक दूसरे के समन्वय से पूर्ण करने की बात कही गई।

इसके साथ ही साथ दोनों विश्वविद्यालय अपनी भौगोलिक एवं क्षेत्रीय विविधता के आधार विभिन्न कौशल विकास कार्यक्रम जैसे मधुमक्खी पालन, मत्स्य पालन, रेशम कीट पालन, मशरूम की खेती, पर्यटन और ट्राइबल से संबंधित पाठ्यक्रमों को शुरू करने एक दूसरे का सहयोग करेंगे।

इस अवसर पर हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय की ओर से कुलपति प्रो. सत प्रकाश बंसल, कुलसचिव प्रो. सुमन शर्मा, अधिष्ठाता विद्यार्थी कल्याण प्रो. सुनील एवं एवं हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर की कुलपति प्रोफेसर नीलिमा गुप्ता उपस्थित रहे।

डाक्टर हरीसिंह गौर विवि एवं हिमाचल प्रदेश के केंद्रीय विश्वविद्यालय के मध्य अकादमिक अनुबंध करते हुए कुलपति। • नवदुनिया

प्रभावी पाठ्यक्रमों को निर्मित करने का प्रयास करेंगे

इस अवसर पर कुलपति प्रोफेसर नीलिमा गुप्ता ने कहा कि दोनों विवि ज्ञान, संस्कृति, सामाजिक सरोकार और संसाधनों के पारस्परिक विनिमय के माध्यम से प्रभावी पाठ्यक्रमों को निर्मित करने का प्रयास करेंगे।

जिससे दोनों विश्वविद्यालय के विद्यार्थी एवं हितधारक इसका भरपूर लाभ ले सकें। इसके अलावा मूल्य शिक्षा से संबंधित पाठ्यक्रम, आउटरेज कार्यक्रम दूरस्थ शिक्षा पाठ्यक्रम आदि से संबंधित नए डिप्लोमा प्रमाण पत्र, पीजी डिप्लोमा, अल्पकालिक पाठ्यक्रम आदि विकसित किए जाएंगे। समझौता ज्ञापन की समय अवधि के दौरान शोध के परिणामों को संयुक्त रूप से पेटेंट कराया जाएगा और पेटेंट से प्राप्त परिणामों का लाभ एक-दूसरे से साझा किया जाएगा।

आंतरिक, राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय एजेंसियों द्वारा वित्त पोषण के लिए विभिन्न अनुसंधान कार्यक्रमों को विकसित करने पर जोर देने की बात भी कही गई।

डॉ. हरीसिंह गौर विवि एवं हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विवि के मध्य हुआ अकादमिक अनुबंध

सागर, देशबन्धु। डॉ. हरीसिंह गौर विवि एवं हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विवि धर्मशाला के मध्य शैक्षिक अनुसंधान, कौशल विकास, गुणवत्ता उन्नयन, सामाजिक सरोकार से संबंधित विभिन्न विषयों को लेकर एक पूर्ण कालिक समझौता ज्ञापन हस्ताक्षर किया गया। इस अवसर पर हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विवि की ओर से कुलपति प्रो. सत प्रकाश बंसल, कुलसचिव प्रो. सुमन शर्मा, अधिष्ठाता विद्यार्थी कल्याण प्रो. सुनील एवं हरीसिंह गौर विवि की कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता उपस्थित रहे। इस समझौता ज्ञापन के अनुसार दोनों विवि में विभिन्न शैक्षणिक विषयों में अनुसंधान, शिक्षा एवं नवाचारी परियोजनाओं को एक दूसरे के समन्वय से पूर्ण करने की बात कही गई। इसके साथ ही साथ दोनों विवि अपनी भौगोलिक एवं क्षेत्रीय विविधता के आधार विभिन्न कौशल विकास कार्यक्रम जैसे मधुमक्खी पालन, मत्स्य पालन, रेशम कीट पालन, मशरूम की खेती, पर्यटन और ट्राइबल से संबंधित पाठ्यक्रमों को शुरू करने एक दूसरे का सहयोग करेंगे। इस अवसर पर डॉ. हरीसिंह गौर विवि की कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने कहा कि दोनों विवि ज्ञान, संस्कृति, सामाजिक सरोकार और संसाधनों के पारस्परिक विनिमय के माध्यम से प्रभावी पाठ्यक्रमों को निर्मित करने का प्रयास करेंगे।

राष्ट्रीय परिपेक्ष्य में मप्र की कला एवं संस्कृति अप्रतिम है: प्रो. जैन

आचरण संवाददाता

सागर। डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय में प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्त्व विभाग एवं भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद के संयुक्त तत्वावधान में 'मध्यप्रदेश की कला एवं संस्कृति' विषय पर आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी के दूसरे दिवस के दौरान आज 29 फरवरी 2024 को तृतीय एवं चतुर्थ सत्र का आयोजन किया गया जिसमें अनेक शोधपत्रों का प्रस्तुतिकरण किया गया। तत् पश्चात् समापन सत्र का आयोजन किया गया। जिसमें मुख्य अतिथि के रूप में प्रोफेसर सुमन जैन, विभागाध्यक्ष, प्राचीन भारतीय इतिहास संस्कृति एवं पुरातत्त्व विभाग, काशी हिंदू विश्वविद्यालय ने कहा मध्यप्रदेश की भौगोलिक स्थिति के कारण इसका राजनीतिक संस्कृति एवं सामाजिक इतिहास की निरंतरता रही है।

यहाँ का इतिहास अत्यधिक सम्पन्न है, मध्य प्रदेश प्रागैतिहासिक काल से लेकर वर्तमान काल तक के इतिहास को अपने आप में समायोजित किये हुए है, इतिहास के प्रारंभिक युग से ही महाकाव्यों में भी मध्य प्रदेश का इतिहास है, जिनपर कार्य किये जाने की आवश्यकता है, विभिन्न राजवंशों के काल में मिले प्रश्रय के कारण इस क्षेत्र का अत्यधिक सांस्कृतिक विकास हुआ। जो निश्चय ही भारतीय इतिहास के गौरवमयी क्षणों को अपने आप में समाहित किये हुए है। अनेक राजवंश जिनके विषय में अत्यल्प जानकारी थी, उनके विषय में कार्य किया जा रहा है और वे जानकारियां लगातार प्रकाश में आ रहीं हैं। परंतु अभी भी बोधि वंश, पांडव वंश, शैल वंश इत्यादि अनेक छोटे राजवंशों के विषय में अत्यल्प जानकारी उपलब्ध है, अतः आवश्यकता है, इनपर और अन्य विषयों पर गहन शोधकार्य करके आवश्यक जानकारी एकत्र कर मध्य प्रदेश के गौरवशाली इतिहास को उजागर करने की इसके साथ ही उन्होंने तिथियों के संबंध में आने वाली विभिन्न समस्याओं को हल करने हेतु विभिन्न सुझाव प्रस्तुत किए साथ ही एरण को विश्व विरासत स्थल में शामिल करने की उम्मीद जताई। समापन सत्र के विशिष्ट अतिथि के रूप में प्रोफेसर आर. ए. शर्मा, पूर्व विभागाध्यक्ष, प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्त्व विभाग, जीवाजी विश्वविद्यालय, ग्वालियर ने राष्ट्रीय संगोष्ठी के सफल आयोजन के लिए बधाई देते हुए अपील किया कि मध्य प्रदेश के विभिन्न क्षेत्रों में उपलब्ध प्राचीन ऐतिहासिक स्रोतों पर अभी भी शोध करने की आवश्यकता है, विश्व में केवल दो विश्वकर्मा हैं, प्रथम ब्रह्मा द्वितीय मनुष्य एक ब्रह्मा जिसने समस्त सृष्टि की रचना की है और दूसरा स्वयं मानव है, जिसने अनेक अविष्कार किये हैं, उसने स्वयं ईश्वर की अवधारणा का विकास किया है। प्राचीन कलाकृतियाँ जो कई शताब्दी पहले की रचना है, ये सब भी मनुष्य की रचना है। वर्तमान में आवश्यकता है, पुनः रचयिता की तरह उत्कृष्ट शोध कार्य करने की आवश्यकता है ,मध्य प्रदेश के विभिन्न क्षेत्रों के प्राचीनतम् इतिहास के बारे में जानने की और उनपर शोध कार्य करने की और साथ ही शोधार्थियों को चाहिए की वे उनके समय में चल रहे विभिन्न शोध कार्यों के संबंध में भी जागरूक रहें तथा उनसे सामंजस्य बनाकर ये पता करके कार्य करें की कहीं उनके कार्यों की पुनरावृत्ति तो नहीं हो रही शोधार्थियों का कार्य है की बेहतर शोधकार्य करें और साथ ही उसे प्रकाशित कराने का कार्य करें। समापन सत्र की अध्यक्षता विभागाध्यक्ष प्रोफेसर नागेश दुबे ने की, अपने अध्यक्षीय उद्बोधन के दौरान उन्होंने राष्ट्रीय संगोष्ठी की उपयोगिता पर प्रकाश डाला।

कार्यक्रम में आये विभिन्न विद्वतजनों का आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम के समन्यवक् और निदेशक डॉ सुरेंद्र यादव ने दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी के दौरान हुए गतिविधियों का संक्षिप्त प्रतिवेदन प्रस्तुत किया। कार्यक्रम में विभाग के अतिथि विद्वान डॉ शिव कुमार परोचे, डॉ मशकूर अहमद कादरी, संस्कृत विभाग के प्रो. आनन्द प्रकाष त्रिपाठी, डॉ शशि कुमार सिंह, डॉ नौनिहाल गौतम, डॉ संजय कुमार, डॉ किरण आर्या, डॉ संजय बारोलिया, डॉ प्रीति बागड़े, शोधार्थी कीरत अहिरवार, यामिनी योगी, भरत यादव, आनंद जायसवाल, संजय आठिया, सोहन, ईशा के साथ विभाग के कर्मचारी मो. आदिल, हाषिम, राजेन्द्र, मोहन आदि उपस्थित थे।

कला एवं संस्कृति को लेकर दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी

मध्यप्रदेश भारतवर्ष की संस्कृति और सभ्यता का प्रतिनिधित्व करता है: प्रो. विभा त्रिपाठी

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
patrika.com

सागर. डॉ. हरिसिंह गौर विवि के प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग व भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद के संयुक्त तत्वावधान में शुक्रवार को दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी की शुरूआत हुई। इस संगोष्ठी के माध्यम से मध्यप्रदेश की कला एवं संस्कृति के विभिन्न पक्षों पर शोध पत्र प्रस्तुत किए जा रहे हैं। उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता प्रभारी कुलपति प्रो. पीके कठल ने की। प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. नागेश दुबे ने स्वागत उद्बोधन दिया।

मुख्य वक्ता काशी हिंदू विवि की प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग की प्रो. विभा त्रिपाठी ने बताया की मध्यप्रदेश भारतवर्ष की संस्कृति और सभ्यता का प्रतिनिधित्व करता है, जिससे भारत के हृदय स्थल के रूप में इसकी पहचान और प्रभावी हो जाती है। मध्यप्रदेश भारतीय सभ्यता और संस्कृति के केंद्र बिंदु में रखे जाने के विभिन्न कारणों को अपने अंदर सहेजे हुए है। उन्होंने शोधार्थियों से आगे विभिन्न पुरातात्विक महत्व के अनछुए पहलुओं पर स्वतंत्र सोच के साथ काम करने की सलाह दी।

मुख्य अतिथि प्रो. आलोक त्रिपाठी, अतिरिक्त महानिदेशक, भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग नई दिल्ली ने औपनिवेशिक मानसिकता से हटकर पुरातात्विक महत्व के पुरास्थलों और प्राप्त सामग्री की स्वतंत्र व्याख्या करने पर बल दिया। उन्होंने अपील की, कि प्राप्त अवशेषों का अध्ययन उस समय के मानव और उनके कार्यप्रणाली उनकी सामाजिक, आर्थिक व्यवस्था को जानने की आवश्यकता है, न कि परंपरागत मानसिकता के अनुसार साथ। इस अवसर पर प्रो. पीके कठल व अधिष्ठाता प्रो. डीएस राजपूत ने भी संबोधित किया।

इस अवसर डॉ. हरिसिंह गौर विवि के प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग व बीरबल साहनी पुराविज्ञान संस्थान लखनऊ उप्र के बीच विभिन्न अकादमिक व शोध कार्यों के बीच एमओयू साइन किया गया। संचालन डॉ. पंकज सिंह व आभार कार्यक्रम समन्वयक डॉ. सुरेंद्र यादव ने व्यक्त किया। उद्घाटन सत्र के बाद दो दो तकनीकी सत्रों का आयोजन किया गया। तकनीकी सत्र में कुल 10 शोध पत्र प्रस्तुत किए गए।

कैंपस प्लेसमेंट में शामिल हुए 70 विद्यार्थी

सागर। कंप्यूटर विज्ञान एवं अनुप्रयोग विभाग द्वारा गुरुवार को कैंपस प्लेसमेंट का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में लगभग 70 विद्यार्थियों ने भाग लिया। कार्यक्रम का उद्घाटन प्रो. जीएल पुण्ताम्बेकर, समन्वयक, प्लेसमेंट कौशल विकास एवं स्टार्टअप सेल एवं डा. अभिषेक बंसल, विभागाध्यक्ष, कम्प्यूटर विज्ञान विभाग द्वारा किया गया। इस दौरान कंपनी से आए एचआर हेड सतीश तिवारी ने अपने विचार रखकर विद्यार्थियों को प्लेसमेंट से संबंधित जानकारी दी। डा. रंजीत रजक, विभागीय प्लेसमेंट इंचार्ज, कम्प्यूटर विज्ञान विभाग द्वारा उद्घाटन सत्र में धन्यवाद ज्ञापित किया गया। इस दौरान कमलकान्त अहिरवार, गौरव जैन, प्रशान्त कुमार नामदेव, रिचा पाठक, सतीश चैरसिया आदि मौजूद थे। -नप्र

दूरस्थ शिक्षा से संबंधित डिप्लोमा, अल्पकालिक पाठ्यक्रम विकसित किए जाएंगेः कुलपति

भास्कर संवाददाता | सागर

डॉ. हरीसिंह गौर विवि, सागर एवं हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय धर्मशाला के बीच शैक्षिक अनुसंधान, कौशल विकास, गुणवत्ता उन्नयन, सामाजिक सरोकार से संबंधित विभिन्न विषयों को लेकर पूर्णकालिक एमओयू हुआ। इस मौके पर सागर विवि की कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता, धर्मशाला विवि के कुलपति प्रो. सतप्रकाश बंसल, कुलसचिव प्रो. सुमन शर्मा, डीएसडब्ल्यू प्रो. सुनील मौजूद रहे। एमओयू के अनुसार दोनों विश्वविद्यालयों में विभिन्न शैक्षणिक विषयों में अनुसंधान, शिक्षा एवं नवाचारी परियोजनाओं को एक दूसरे के समन्वय से पूर्ण करने की बात हुई। साथ ही साथ दोनों विश्वविद्यालय अपनी भौगोलिक एवं क्षेत्रीय विविधता के आधार विभिन्न कौशल विकास कार्यक्रम जैसे मधुमक्खी पालन, मत्स्य पालन, रेशम कीट पालन, मशरूम की खेती, पर्यटन और ट्राइबल से संबंधित पाठ्यक्रमों को शुरू करने एक दूसरे का सहयोग करेंगे। कुलपति प्रो. गुप्ता ने कहा दोनों विश्वविद्यालय ज्ञान, संस्कृति, सामाजिक सरोकार और संसाधनों के पारस्परिक विनिमय के माध्यम से प्रभावी पाठ्यक्रमों को निर्मित करने का प्रयास करेंगे। जिससे दोनों विवि के विद्यार्थी एवं हितधारक इसका भरपूर लाभ ले सकें। इसके अलावा मूल्य शिक्षा से संबंधित पाठ्यक्रम, आउटरीच कार्यक्रम, दूरस्थ शिक्षा पाठ्यक्रम आदि से संबंधित नए डिप्लोमा प्रमाण पत्र, पीजी डिप्लोमा, अल्पकालिक पाठ्यक्रम आदि विकसित किए जाएंगे। समझौता ज्ञापन की समय अवधि के दौरान शोध के परिणामों को संयुक्त रूप से पेटेंट कराया जाएगा। पेटेंट से प्राप्त परिणामों का लाभ एक-दूसरे से साझा किया जाएगा। आंतरिक, राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय एजेंसियों द्वारा वित्त पोषण के लिए विभिन्न अनुसंधान कार्यक्रमों को विकसित करने पर जोर देने की बात भी कही गई।

सिंगल क्लिक पर ऑनलाइन होगा दस्तावेजों का सत्यापन

विवि में विद्यार्थियों की तैयार हो रही वन नेशन वन आइडी

12 अंक की होगी यूनिक आइडी, आधार से लिंक कर विद्यार्थी खुद तैयार कर सकेंगे अपना पासवर्ड

पत्रिका स्पॉट लाइट

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
patrika.com

सागर. देश में आधार के बाद अब विद्यार्थियों की भी एक यूनिक आइडी होगी। मिनिस्ट्री ऑफ एजुकेशन ने इसे एपीएएआर (ऑटोमेटेड परमानेंट एकेडमिक अकाउंट रजिस्ट्री) नाम दिया है।

12 अंकों की यह यूनिक आइडी वन नेशन वन आइडी के तौर पर काम करेगी, यानी इस आइडी को खोलने पर उसमें संबंधित विद्यार्थी का पूरा एकेडमिक रिकॉर्ड दिख जाएगा। विद्यार्थी के संस्था में प्रवेश लेने के बाद एपीएएआर आइडी बनेगी और इसके बाद उसे सुरक्षित करने के लिए विद्यार्थी खुद आधार नंबर से लिंक करते हुए उसका पासवर्ड जनरेट कर सकेगा।

डॉ. हरिसिंह गौर केंद्रीय विश्वविद्यालय ने एपीएएआर आइडी को लेकर काम तेज कर किया है। विवि अब तक अपने 1.45 लाख से ज्यादा विद्यार्थियों की एपीएएआर आइडी जनरेट कर चुका है। सबसे अच्छी बात यह है कि विश्वविद्यालय ने वर्तमान में पढने वालों के अलावा पिछले 15 साल में यहां अध्ययन करने वाले विद्यार्थियों का अकादमिक रिकॉर्ड भी डिजिटल फॉर्म में कन्वर्ट कर दिया है। जिसको लेकर हाल ही में विश्वविद्यालय को राष्ट्रीय स्तर पर सम्मानित भी किया जा चुका है। विश्वविद्यालय ने एपीएएआर आइडी को प्रवेश लेने वाले हर विद्यार्थी के लिए अनिवार्य कर दिया है। यदि विद्यार्थी ने एपीएएआर पंजीयन में लापरवाही बरती तो वह परीक्षा में बैठने के लिए पात्र नहीं होगा। विश्वविद्यालय के परीक्षा नियंत्रक डॉ. सुरेंद्र पी गादेवार में बताया कि एपीएएआर आइडी की लॉन्चिंग मिनिस्ट्री ऑफ एजुकेशन ने की है। शुरुआत में 2021 के बाद प्रवेश लेने वाले हर विद्यार्थी की आइडी बनाकर उसका क्रेडिट स्कोर दर्ज करने को लेकर प्लानिंग थी। हमने विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता के निर्देश पर प्लानिंग से एडवांस काम किया और 2009 यानी जब से विश्वविद्यालय केंद्रीय हुआ था, तब से लेकर अब तक विश्वविद्यालय में पढने वाले सभी विद्यार्थियों का एकेडमिक रिकॉर्ड डिजिटल रूप में तैयार कर दिया है। ऐसा कर हम देश में अग्रणी विश्वविद्यालय के रूप में पहचान स्थापित कर चुके हैं।

फर्जीवाड़ा पर लगेगी लगाम

अभी तक यह देखने में आता था कि लोग फर्जी अंकसूची, डिग्री, डिप्लोमा समेत अन्य एकेडमिक रिकॉर्ड तैयार करा लेते थे और इन्हीं फर्जी दस्तावेजों के सहारे नौकरी या शैक्षणिक संस्था में प्रवेश पा लेते थे। दस्तावेजों का सत्यापन एक बड़ी चुनौती थी, लेकिन एपीएएआर की प्रक्रिया पूर्ण होने के बाद यह फर्जीवाड़ा पूरी तरह से समाप्त हो जाएगा, क्योंकि सारा रिकॉर्ड ऑनलाइन होगा और सिंगल क्लिक पर सभी दस्तावेजों का सत्यापन हो जाएगा।

जल्द स्कूल स्तर पर भी शुरू होगी प्रक्रिया

एपीएएआर आइडी की व्यवस्था शुरुआत में तो केवल उच्च शिक्षा में ही लागू की गई थी लेकिन अब स्कूल स्तर पर भी काम शुरू किया जाएगा। मिनिस्ट्री ने सभी बोर्ड को इसके लिए दिशा-निर्देश जारी किए हैं। यानी अब स्कूल में प्रवेश लेते ही विद्यार्थी का सारा एकेडमिक रिकॉर्ड डिजिटल रूप में ऑनलाइन उपलब्ध होगा।

ये है उद्देश्य

एपीएएआर आइडी का उद्देश्य विद्यार्थियों के एकेडमिक क्रेडिट, डिग्री, डिप्लोमा समेत अन्य एकेडमिक सूचनाओं को डिजिटल रूप में ऑनलाइन करना है। इससे नौकरी व शैक्षणिक संस्थानों में आयोजित होने वाली प्रवेश प्रक्रिया में पारदर्शिता आएगी। विद्यार्थी एजुकेशन मिनिस्ट्री की वेबसाइट एबीसी.जीओवी.इन पर खुद पंजीयन कर सकते हैं।

पथरिया गांव में घर-घर जाकर समझाया वोट का महत्व

राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई ने गांव में चलाया मतदान जागरुकता अभियान

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
patrika.com

सागर. डॉ. हरिसिंह गौर केंद्रीय विश्वविद्यालय में संचालित राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई ने आगामी लोकसभा चुनाव को लेकर मतदाता जागरुकता अभियान चलाया। टीम के सदस्यों ने विश्वविद्यालय परिसर व पथरिया गांव में घर-घर जाकर मतदाताओं को मतदान के लिए जागरूक किया।

इस अभियान के तहत आगामी लोकसभा चुनाव के मद्देनजर विश्वविद्यालय के मुख्य चौराहों और मार्गों पर विद्यार्थियों को मतदान के लिए प्रेरित किया गया। "मेरा पहला वोट देश के नाम" अभियान का आयोजन पहली बार वोट दे रहे युवाओं एवं मतदाताओं को उनके चुनावी अधिकारों के महत्त्व पर सशक्त और शिक्षित करने के लिए एक कारगर कदम है। साथ ही इस पहल का उद्देश्य युवाओं को भारत में लोकतंत्र के भविष्य को आकार देने में उनके वोटों की महत्वपूर्ण भूमिका के बारे में बताना था।

स्वयंसेवकों ने वयस्क नागरिकों को उनके मत अधिकार और लोकतंत्र में उनकी भूमिका के संदर्भ में बातचीत की। जागरूक करने और सक्रिय योगदान को सुनिश्चित करने के उद्देश्य से एक सेल्फी पाइंट भी बनाया गया, जिसमें विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों, गांव के युवक-युवतियों और महिलाओं ने बढ़-चढ़कर भाग लिया। सेल्फी को अपने अपने सोशल मीडिया प्रोफाइल पर प्रेषित कर अन्य को भी जागरूक करने का आह्वान किया गया।

मप्र की कला एवं संस्कृति में उत्कृष्ट शोध की आवश्यकताः प्रो. राम अवतार शर्मा

सागर, देशबन्धु। प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्त्व विभाग, डॉ. हरीसिंह गौर विवि में मप्र की कला एवं संस्कृति विषय पर राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता प्रो. पीके कठल ने की। उद्घाटन सत्र की शुरुआत पुरातत्त्व विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. नागेश दुबे के स्वागत उद्बोधन से हुआ। मुख्य वक्ता काशी हिंदू विवि के पुरातत्त्व विभाग की एमिरेट्स प्रो. विभा त्रिपाठी ने अपने बीज वक्तव्य में बताया की किस प्रकार मप्र भारतवर्ष की संस्कृति और सभ्यता का प्रतिनिधित्व करता है, जिससे भारत के हृदय स्थल के रूप में इसकी पहचान और प्रभावी हो जाती है, मप्र भारतीय सभ्यता और संस्कृति के केंद्र बिंदु में रखे जाने के विभिन्न कारणों को अपने अंदर सहेजे हुए है। द्वितीय तकनीकी सत्र की अध्यक्षता प्रो. आनंद प्रकाश त्रिपाठी ने की। विषय विशेषज्ञ प्रो. शिवाकांत वाजपेयी रहे, इस तकनीकी सत्र का संचालन डॉ. आरपी सिंह ने किया। इस तकनीकी सत्र के दौरान कुल 10 शोध पत्र प्रस्तुत किये गये। समापन सत्र की अध्यक्षता विभागाध्यक्ष प्रो. नागेश दुबे ने की, अपने अध्यक्षीय उद्बोधन के दौरान उन्होंने राष्ट्रीय संगोष्ठी की उपयोगिता पर प्रकाश डाला।

लेखांकन व कराधान में एआई के उपयोग से अर्थव्यवस्था के लक्ष्य को प्राप्त करना और भी सरल होगाः कुलपति

भास्कर संवाददाता | सागर

सागर। कॉमर्स विभाग में सेमिनार में मौजूद कुलपति एवं अन्य।

वाणिज्य विभाग डॉ हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय में "लेखांकन नवाचार एवं सतत प्रबंधन" पर आयोजित राष्ट्रीय सेमिनार में कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने कहा बहीखाता प्रणाली से हम कंप्यूटर युग में एवं कंप्यूटर युग से अब कृत्रिम बुद्धिमत्ता अर्थात आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के युग में आ गए हैं, जहां लेखांकन प्रणालियों की कार्य कुशलता से औद्योगिक, व्यावसायिक एवं उद्यमी जीवन में सहायता और लेखांकन परिणाम की धारिता बढ़ रही है। वाणिज्य विभाग सतत प्रबंधन की अवधारणा को लेखांकन नवाचार से जोड़कर कौटिल्य की अर्थशास्त्र की यात्रा को वाणिज्य तक और वाणिज्य से प्रबंधन विशेषज्ञ तक पहुंचा। अपने आगे भारत सरकार एवं प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा हरित तकनीकी तथा लेखांकन और कराधान में कृत्रिम बुद्धिमत्ता के सतत उपयोग से 5 ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था के लक्ष्य को प्राप्त करना सरल एवं सहज होगा।

मुख्य वक्ता चार्टर्ड अकाउंटेंट डॉ प्रियेश जैन ने बताया आज लेखांकन प्रक्रिया का संपादन घंटे की जगह मिनट में कुछ उंगलियों द्वारा संचालन से पूरा हो जाता है। लेखांकन की भाषा शाश्वत एवं वैश्विक है, जिसमें नवीन तकनीकी के विकास के बाद भी कोई परिवर्तन नहीं होगा। मुख्य अतिथि हरियाणा केंद्रीय विश्वविद्यालय के प्रो. आशीष माथुर ने कहा कि हमें सतत विकास की अवधारणा में सफलता तभी प्राप्त होगी जब हम गैर ब्रांडेड सामान को विकसित बाजार में ब्रांडेड सामान के तौर पर बेच सकेंगे।

वाणिज्य विभागाध्यक्ष एवं सेमिनार निर्देशक प्रो. जेके जैन ने कहा लेखांकन परिदृश्य में शोध के नए विषय उदित हो रहे हैं, जिसमें मानव संसाधन प्रबंध लेखांकन, पर्यावरणीय लेखांकन, हरित लेखांकन, सामाजिक एवं नैतिक लेखांकन, फॉरेंसिक लेखांकन, हैप्पीनेस लेखांकन एवं वित्तीय फ्रॉड आदि नए विषयों पर शोध के लिए बल दिया। प्रो. जैन ने बताया विभाग ने विभागीय शिक्षाविदों के सम्मान में पांच सर्वोच्च शोध पत्र अवार्ड संस्थापित किए हैं। प्रो. अमर नारायण अग्रवाल विभाग संस्थापक श्रेष्ठ शोध पत्र पुरस्कार, प्रो. हरिशचंद्र सैनी (वित्त में) श्रेष्ठ शोध पत्र पुरस्कार, प्रो. रमेश कुमार भारती (लेखांकन में) श्रेष्ठ शोध पत्र पुरस्कार, प्रो. प्रफुल कुमार सेठ (कराधान में) श्रेष्ठ शोध पत्र पुरस्कार, प्रो. बिमल कुमार जैन स्मृति (मानव संसाधन तथा विपणन में) को श्रेष्ठ शोध पत्र पुरस्कार दिए जाएंगे। संचालन शोधार्थी पर्णवी निगानिया व अदिति स्वामी ने किया। आभार प्रो. मनविंदर सिंह पाहवा ने माना।

राष्ट्रीय सेमिनार | **विवि के वाणिज्य विभाग में बहीखाता एवं लेखांकन पर हुई चर्चा**

कम्प्यूटर से अब हम कृत्रिम बुद्धिमत्ता के दौर में प्रवेश कर चुके . प्रो .गुप्ता

नवभारत न्यूज

सागर 4 मार्च. विवि के वाणिज्य विभाग में लेखांकन नवाचार एवं सतत प्रबंधन राष्ट्रीय सेमिनार में कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने कहा कि बहीखाता प्रणाली से हम कंप्यूटर युग मे एवं कंप्यूटर युग से अब कृत्रिम बुद्धिमत्ता अर्थात आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के युग में आ गए है.

उन्होने कहा कि लेखांकन प्रणालियों की कार्य कुशलता से औद्योगिक व्यावसायिक एवं उद्यमी जीवन में सहायता और लेखांकन परिणाम की धारिता बढ़ रही है. वाणिज्य विभाग द्वारा लेखांकन के नवाचार पर युक्त इस राष्ट्रीय सेमिनार से लेखांकन शोध के क्षेत्र में एक नई क्रांति का अभ्युदय होगा. मुख्य वक्ता सीए डॉ. प्रियेश जैन ने बताया कि आज लेखांकन प्रक्रिया का संपादन घंटे की जगह मिनट में कुछ उंगलियां द्वारा संचालन से पूरा हो जाता है. हरियाणा केंद्रीय विश्वविद्यालय के प्रो. आशीष माथुर ने कहा कि हमें सतत विकास की अवधारणा में सफलता तभी प्राप्त होगी जब हम गैर ब्रांडेड सामान को विकसित बाजार में ब्रांडेड सामान के तौर पर बेच सकेंगे.

कार्यक्रम का संचालन विभाग में शोधार्थी पर्णवी निगानिया व अदिति स्वामी ने किया तथा आभार प्रो. मनविंदर सिंह पाहवा ने माना.

ब्लॉकचेन की जानकारी

वाणिज्य विभागाध्यक्ष एवं सेमिनार निर्देशक प्रो. जेके जैन लेखांकन शुद्धता की यात्रा को एक प्रविष्टि प्रणाली से ब्लॉकचेन तकनीकी तक की चर्चा करते हुए कहा कि लेखांकन परिदृश्य में शोध के नए विषय उदित हो रहे हैं. जिसमें मानव संसाधन प्रबंध लेखांकन, पर्यावरणीय लेखांकन आदि शामिल हैं.

कला एवं संस्कृति पर सेमिनार

ननवभारत न्यूज

सागर 5 मार्च. प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्त्व विभाग, डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय में मप्र की कला एवं संस्कृति विषय पर आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया.

उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता प्रो. पीके कठल ने की. प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्त्व विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. नागेश दुबे स्वागत भाषण दिया. मुख्य वक्ता प्रो. विभा त्रिपाठी ने बताया कि किस प्रकार मप्र भारतवर्ष की संस्कृति और सभ्यता का प्रतिनिधित्व करता है, जिससे भारत के हृदय स्थल के रूप में इसकी पहचान और प्रभावी हो जाती है, मप्र भारतीय सभ्यता और संस्कृति के केंद्र बिंदु में रखे जाने के विभिन्न कारणों को अपने अंदर सहेजे हुए है. प्रो. आलोक त्रिपाठी, प्रो. डीएस राजपूत ने भी कला और संस्कृति के विषय पर विचारों को साझा किया. कार्यक्रम का संचालन डॉ पंकज सिंह के द्वारा किया गया.

21वीं सदी में भी डॉ. आंबेडकर के विचारों का महत्व और वे प्रासंगिक हैं : प्रो.सीमा प्रसाद

जागरण, सागर। डॉ.हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय एवं डॉ.अंबेडकर चेयर पटना विश्वविद्यालय बिहार द्वारा संयुक्त रूप से 21वीं सदी में डॉ. अम्बेडकर के विचारों की प्रासंगिकता विषय पर ऑनलाइन राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। मुख्य अतिथि एवं वक्ता पटना विश्वविद्यालय के डॉ.अंबेडकर चेयर की प्राध्यापक प्रो.सीमाप्रसाद ने संबोधित करते हुए कहा कि डॉ.अंबेडकर ने समाज में भेदभाव खत्म करने एवं शिक्षा को महत्व दिया। शिक्षा और प्रशिक्षण के माध्यम से पिछड़े और गरीब का आर्थिक विकास हो सकता है। विश्व में डॉ. अंबेडकर के विचार को महत्व दिया और आज भी उनके विचार महत्वपूर्ण है। कार्यक्रम के मुख्य वक्ता के रूप में संपादक डॉ. अंबेडकर फाउण्डेशन सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्रालय भारत सरकार दिल्ली के सुधीर हिलशयन ने कहा कि डॉ.अंबेडकर ने अपना जीवन समाज और राष्ट्र कल्याण में लगाया। डॉ. अंबेडकर का

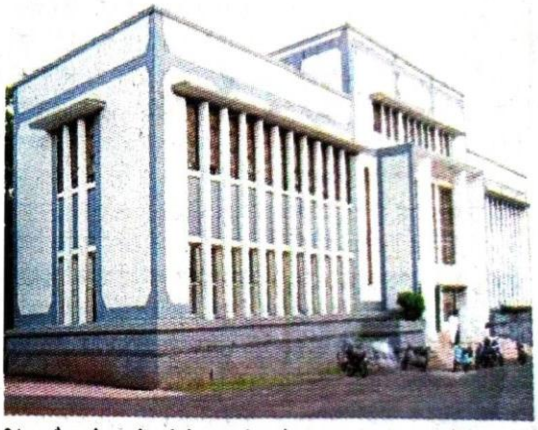

चिंतन और दर्शन 21वीं सदी में उतना ही महत्वपूर्ण है जितना पहले था और आने वाले समय में भी रहेगा। प्रो.राजेश गौतम ने कहा कि डॉ. अंबेडकर समता मूलक समाज का निर्माण करना चाहते थे। संगोष्ठी की अध्यक्षता करते हुए प्रो.चंदा बैन ने कहा कि भारतीय समाज ज्ञान को महत्व देने वाला है। कार्यक्रम में आभार प्रदर्शन सहायक प्राध्यापक डॉ.अंबेडकर चैयर पटना विश्वविद्यालय के डॉ.हुलेस मांझी ने किया एवं डॉ. मनोज गुप्ता, मऊ विश्वविद्यालय इंदौर द्वारा द्वितीय सत्र में अपना उद्बोधन भी दिया। महाराष्ट्र, दिल्ली, उत्तर प्रदेश, बिहार, उत्तराखंड, हिमाचल प्रदेश, राजस्थान, मध्यप्रदेश, पंजाब आदि से प्राध्यापक एवं शोध छात्रों ने शोध पत्रों का वाचन किया। ऑनलाइन संगोष्ठी में 116 प्रतिभागी उपस्थित थे।

मूट कोर्ट के आयोजनों के बिना अधूरी है विधिक शिक्षा: प्रमोद

हर्षिता, प्रशांत व दर्शना ने जीती मूट कोर्ट प्रतियोगिता

सागर, आचरण संवाददाता।

दो दिवसी अंतर विभागीय मूट कोर्ट प्रतियोगिता फाइनल राउंड व समापन सत्र के आयोजन के साथ मंगलवार को संपन्न हुई इस प्रतियोगिता के फाइनल राउंड मे निर्णायक की भूमिका मे न्यायाधीश मनीष भट्ट, न्यायाधीश अब्दुल्लाह, प्रो पी पी सिंह व प्रो हिमांशु पांडेय रहे, जिनके दिये गये अंकों के आधार पर हर्षिता, प्रशांत व दर्शना की टीम विजयी रही तथा सुनंद दीप सिंह, अर्नव यादव व ऋषभ कुमार की टीम उपविजेता रही। बेस्ट स्पीकर प्रशांत तिवारी व बेस्ट रिसर्चर यशस्वी ताम्रकार को चुना गया। कार्यक्रम की समापन सत्र के दौरान मुख्य अतिथि के रूप में सागर जोन के पुलिस महानिरीक्षक आईपीएस प्रमोद वर्मा, विशिष्ट अतिथि के रूप में प्रोफेसर हिमांशु पांडे, कुलपति प्रो. निलिमा गुप्ता, प्रो पीपी सिंह मौजूद रहे तथा कार्यक्रम की अध्यक्षता विभागाध्यक्ष प्रो मनविंदर सिंह पाहवा ने की। पुलिस महानिरीक्षक प्रमोद वर्मा ने छात्रों को सम्बोधित करते हुए कहा कि जिस तरह भौतिक विज्ञान व रसायन विज्ञान की पढ़ाई बिना प्रयोगशाला के संभव नहीं है ठीक उसी प्रकार विधि की भी पढ़ाई बिना मूट कोर्ट के संभव नहीं है। श्री वर्मा ने इस बात पर भी सहमति व्यक्त की कि जवाहर लाल नेहरू पुलिस अकादमी विश्वविद्यालय के साथ तीनों नये कानूनों भारतीय न्याय संहिता, भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता व भारतीय साक्ष्य अधिनियम को लोगों तक पहुँचाने तथा पुलिस प्रशिक्षण के लिए जल्द ही एमओयू हस्ताक्षरित करेगी। कुलपति प्रोफेसर नीलिमा गुप्ता ने विधि विभाग को अपने पहले अंतर विभागीय मूट कोर्ट प्रतियोगिता के आयोजन के लिए शुभकामनाएं देते हुए इसे भावी अधिवक्ताओं के व्यक्तित्व को निखारने वाला बताया तथा ऐसे हर आयोजन में अपना पूर्ण सहयोग देने की बात कही। विशिष्ट अतिथि प्रो हिमांशु पांडेय ने विद्यार्थियों को इस प्रतियोगिता में भाग लेने के लिए बधाई दी तथा इसके महत्व को समझाते हुए बताया कि कोई भी ज्ञान बिना उसके व्यावहारिक प्रयोग के अधूरा है,विधिक ज्ञान को व्यवहारिक रूप से प्रयोग किया जाना आवश्यक है। श्री पांडेय ने छात्रों को मूट कोर्ट की बारीकियों से भी अवगत कराया। विभागाध्यक्ष प्रो मनविंदर सिंह पाहवा ने इस शानदार कार्यक्रम के आयोजन के लिए सभी को बधाई दी तथा अतिथियों को पौधा व स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया।

कार्यक्रम के दौरान प्रतियोगिता संयोजक सहायक अध्यापक विवेक दुबे व सह संयोजक सहायक अध्यापक डॉ विकास अग्रवाल, सहायक अध्यापक कृष्ण कुमार, सहायक अध्यापक डॉ अनुपमा पंडित सक्सेना, शोध छात्र ऋषि मिश्रा व छात्र समन्वयक शांतनु भटेले, हर्षिता बादल, अदिति त्रिपाठी, शुभ शर्मा, शिवांग शर्मा, बृज बिहारी मिश्रा, अर्पित यादव, आदित्य सिंह जादौन, यश ठाकुर समेत विश्वविद्यालय के कई छात्र उपस्थित रहे।

लेखांकन नवाचार से सामाजिक एवं पर्यावरणीय प्रतिबद्धता को बढ़ावा मिलेगा: प्रो. अग्रवाल

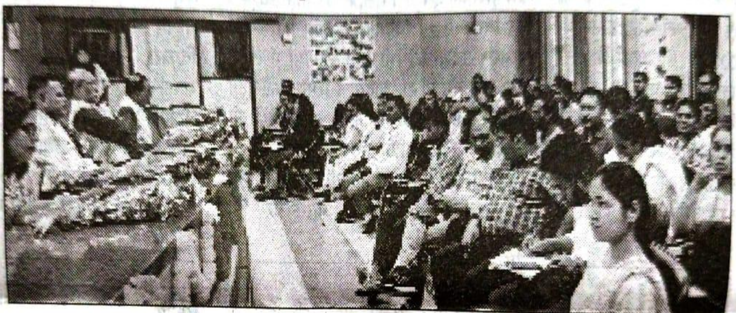

सागर, देशबन्धु। वाणिज्य विभाग डॉ. हरिसिंह गौर विवि में दो दिवसीय राष्ट्रीय सम्मेलन चार तकनीकी सत्रों का आयोजन किया गया जिनका विषय लेखांकन नवाचार एवं सतत प्रबंधन रहा। इसमें 90 से अधिक शोध पत्र पढ़े गये जिसमें 40 ऑफ लाइन तथा 50 ऑनलाइन रुप में पढ़े गये। तकनीकी सत्र की अध्यक्ष प्रो. कुशल जैन भोपाल रहीं व मुख्य वक्ता के रूप में प्रो. राजीव अग्रवाल ने अपने वक्तव्य में बताया कि आज की तेज तकनीकी प्रगति ने लेखांकन में नये आयाम उत्पन्न किये हैं और व्यवसायों को सतत प्रबंधन की दिशा में बढ़ाने का अवसर प्रदान किया है। अगले तकनीकी सत्र में भौतिक रूप से लगभग 42 शोध पत्र पढ़े गये। जिसमें शोध पत्रों के मुख्य विषय नवाचार लेखांकन, लागत न्युन्तमीकरण लेखांकन, रोजगार एवं बजट लेखांकन, कर लेखांकन तथा मानव संसाधन प्रबंध लेखांकन रहा। इस सत्र के अध्यक्ष प्रो. केशव टेकाम ने कहा कि अर्थशास्त्र के विभिन्न सिद्धांतों से लेखांकन प्रणालियों का उद्भव वर्तमान में बट वृक्ष की तरह से पल्लवित हो रहा है। आपने सूक्ष्म शोध प्रविधियां तथा काई स्क्वायर टेस्ट, इनोवा प्रतिगमन, सह संबंध आदि के बेहतर उपयोग पर भी प्रयास डाला। इस सत्र की मुख्य वक्ता डॉ. अनिता कुमारी रही जिन्होंने सतत प्रबंधन पर प्रकाश डाला। कार्यक्रम के समापन सत्र में पत्रकार पंकज सोनी ने कहा कि समाज उन लोगों पर टिका हुआ है जो कर्तव्यनिष्ठा एवं ईमानदारी से अपने दायित्वों का निर्वाहन कर रहे हैं। आपने वर्तमान परिपेक्ष में पत्रकारिता की चुनौतियों के मध्य ईमानदार रहकर कार्य करने की प्रेरणा को व्यक्तित्व विकास का एक महत्वपूर्ण आयाम माना। वाणिज्य विभागाध्यक्ष एवं सेमिनार निर्देशक प्रो. जेके जैन द्वारा संपूर्ण राष्ट्रीय अधिवेशन पर चर्चा के परिणामों को प्रस्तुत किया। दो दिवसीय सेमिनार के प्रतिवेदन का वाचन डॉ. सुषमा यादव द्वारा किया गया एवं धन्यवाद डॉ. रुपाली सैनी द्वारा ज्ञापित किया गया।

शोधार्थी छात्रों को बेस्ट ऑरल प्रेजेंटेशन से किया सम्मानित

सागर। डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय के शोधार्थी छात्र शिवम कुमार कोरी और सत्यमश्याम विश्वकर्मा ने फार्मास्युटिकल साइंस विभाग से बेस्ट ऑरल प्रेजेंटेशन का सम्मान प्राप्त किया है। उन्होंने 27.28 फरवरी को स्वामी विवेकानंद विश्वविद्यालय, सागर, मध्य प्रदेश में आयोजित 12वें इंटरडिसिप्लिनरी सिनर्जी इंजीनियरिंग, फार्मेसी, कृषि, विज्ञान और शिक्षा में अंतराल को पाटना पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में सिंथेसिस, बायोलॉजिकल इवैल्यूएशन, और इन.सिलिको एनालिसिस ऑफसम नॉवेल नाइट्रोजन कंटेनिंग हेटेरोसाइक्लिक कंपाउंड्स एंड डिऑर्फनाइजेशन ऑफ ऑर्फन जीपीआर 52 रिसेप्टर यूजिंग इन.सिलिको स्टडीज विषय पर ऑरल प्रेजेंटेशन किया। इस ऑरल प्रेजेंटेशन के दौरान उन्होंने द्वितीय और तृतीय स्थान हासिल किया।मेडिसिनल कैमिस्ट्री में प्रो. सुशील कुमार काशव और प्रोणु गजभिये के सुपरवाइजन में शोध कर रहे हैं। इस महत्वपूर्ण उपलब्धि के लिए उन्होंने कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता विभागाध्यक्ष प्रो. वंदना सोनी, उनके मार्गदर्शक प्रो. सुशील कुमार काशव, विभाग के सभी शिक्षकों और अपने माता.पिता को समर्पित किया है।

मूट कोर्ट के आयोजनों के बिना अधूरी है विधिक शिक्षा

सागर(नवदुनिया प्रतिनिधि)। दो दिवसीय अंतर विभागीय मूट कोर्ट प्रतियोगिता का फाइनल मुकबला मंगलवार को आयोजित किया गया। प्रतियोगिता के फाइनल राउंड में निर्णायक की भूमिका में न्यायाधीश मनीष भट्ट, न्यायाधीश अब्दुल्लाह, प्रो. पीपी सिंह व प्रो हिमांशु पांडेय रहे, जिनके द्वारा दिए गए अंकों के आधार पर विवि की टीम विजेता रही।

विवि की ओर से विद्यार्थी हर्षिता, प्रशांत व दर्शना की टीम विजयी रही व सुनंद दीप सिंह, अर्नव यादव व ऋषभ कुमार की टीम उपविजेता रही। बेस्ट स्पीकर प्रशांत तिवारी व बेस्ट रिसर्चर यशस्वी ताम्रकार को चुना गया। कार्यक्रम की समापन-सत्र के दौरान मुख्य अतिथि के रूप में सागर जोन के पुलिस महानिरीक्षक आइपीएस प्रमोद वर्मा व विशिष्ट अतिथि के रूप में प्रोफेसर हिमांशु पांडे थे। कार्यक्रम की अध्यक्षता

विजयी खिलाड़ियों को सम्मानित करती हुई कुलपति प्रो . नीलिमा गुप्ता। ● नवदुनिया

विभागाध्यक्ष प्रो मनविंदर सिंह पाहवा ने की।

पुलिस प्रशिक्षण के लिए जल्द होगा एमओयू: पुलिस महानिरीक्षक प्रमोद वर्मा ने छात्रों को संबोधित करते हुए कहा कि जिस तरह भौतिक विज्ञान व रसायन विज्ञान की पढ़ाई बिना प्रयोगशाला के संभव नहीं है ठीक उसी प्रकार विधि की भी पढ़ाई बिना मूट कोर्ट के संभव नहीं है। श्री वर्मा ने इस बात पर भी सहमति व्यक्त की कि जवाहर लाल नेहरू पुलिस अकादमी विवि के साथ तीनों नए कानूनों भारतीय न्याय संहिता, भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता व भारतीय साक्ष्य अधिनियम को लोगों तक पहुंचाने व पुलिस प्रशिक्षण के लिए जल्द ही एमओयू हस्ताक्षरित करेगी। कुलपति प्रोफेसर नीलिमा गुप्ता ने विधि विभाग को अपने पहले अंतर विभागीय मूट कोर्ट प्रतियोगिता के आयोजन के लिए शुभकामनाएं देते हुए इसे भावी अधिवक्ताओं के व्यक्तित्व को निखारने वाला कदम बताया। ऐसे हर आयोजन में अपना पूर्ण सहयोग देने की बात कही।

कोई भी ज्ञान बिना उसके व्यावहारिक प्रयोग के अधूरा है: विशिष्ट अतिथि प्रो हिमांशु पांडेय ने इसके महत्व को समझाते हुए बताया कि कोई भी ज्ञान बिना उसके व्यावहारिक प्रयोग के अधूरा है।

विभागाध्यक्ष प्रो मनविंदर सिंह पाहवा ने इस शानदार कार्यक्रम के आयोजन के लिए सभी को बधाई दी। इस दौरान अतिथियों को पौधा व स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया।

कार्यक्रम में प्रतियोगिता संयोजक सहायक अध्यापक विवेक दुबे, सह संयोजक सहायक अध्यापक डा. विकास अग्रवाल, कृष्ण कुमार, अनुपमा पंडित सक्सेना, शोध छात्र ऋषि मिश्रा।

शांतनु भटेले, हर्षिता बादल, अदिति त्रिपाठी, शुभ शर्मा, शिवांग शर्मा, बृज बिहारी मिश्रा, अर्पित यादव, आदित्य सिंह जादौन, यश ठाकुर आदि उपस्थित रहे।

लेखांकन नवाचार से सामाजिक पर्यावरणीय प्रतिबद्धता को बढ़ावा

जागरण, सागर। केंद्रीय विवि के वाणिज्य विभाग में दो दिवसीय राष्ट्रीय सम्मेलन आयोजित किया जा रहा है। बुधवार को चार तकनीकी सत्रों का विषय लेखांकन नवाचार एवं सतत प्रबंधन रहा। इसमें 90 से अधिक शोध पत्र पढ़े गए जिसमें 40 ऑफलाइन तथा 50 ऑनलाइन रुप में पढ़े गए। इन शोध पत्रों के अध्ययन से पता चला कि सामाजिक और पर्यावरणीय रूप से अधिक मजबूत अर्थव्यवस्था बनने के लिए सार्वजनिक निजी भागीदारी, वैश्विक कॉर्पोरेट नागरिकता और सामाजिक उद्यमिता स्तंभ के रूप में कार्य करेंगे। तकनीकी सत्र की अध्यक्ष प्रो.कुशल जैन भोपाल रहीं व मुख्य वक्ता के रूप में प्रो.राजीव अग्रवाल ने अपने वक्तव्य में बताया कि आज की तेज तकनीकी प्रगति ने लेखांकन में नए आयाम उत्पन्न किए हैं और व्यवसायों को सतत प्रबंधन की दिशा में बढ़ने का अवसर प्रदान किया है। लेखांकन में हुए नवीन तकनीकी की शिक्षा से नैतिकता और दैहिकता की दृष्टि से विकासशील प्रबंधन में सुधार हो रहा है। इससे सामाजिक और पर्यावरणीय प्रतिबद्धता को बढ़ावा मिल रहा है और व्यवसायों को अधिक जिम्मेदार

नागरिक के रूप में उत्कृष्ट की दिशा में आगे बढ़ने का सामर्थ्य मिल रहा है। अगले तकनीकी सत्र में भौतिक रूप से लगभग 42 शोध पत्र पढ़े गए। वरिष्ठ शिक्षाविद् एवं समाजसेवी सुनील देव ने कार्यक्रम में कहा कि भारतीय मानवीय एवं सांस्कृतिक शैली पर हो रही लेखांकन शोध, विषय को एक नई पहचान दे रहा है। वाणिज्य विभागाध्यक्ष एवं सेमिनार निर्देशक प्रो.जे.के. जैन द्वारा संपूर्ण राष्ट्रीय अधिवेशन पर चर्चा के परिणामों को प्रस्तुत किया और कहा कि लेखांकन क्षेत्र में शोध का अपरिमित संभावनाएं हैं।

संगोष्ठी | **संगीत विभाग में दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी प्रारंभ**

भारतीय संगीत के आधुनिक स्वरुप में संगीत का शरीर एवं मन पर प्रभाव महत्वपूर्ण है जिस पर शोध को प्राथमिकता दी जानी चाहिए

सागर, आचरण संवाददाता।

संगीत विभाग डॉक्टर हरिसिंह गौर विश्वविद्यालय में दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का प्रारंभ हुआ। प्रथम सत्र का प्रारंभ मां सरस्वती की वंदना से हुआ इस सत्र में मुख्य अतिथि के रूप में विश्वविद्यालय की कुलपति प्रोफ़ेसर नीलिमा गुप्ता विशिष्ट अतिथि प्रो. दिवाकर राजपूत उपस्थित थे। संगोष्ठी के संयोजक डॉ. राहुल स्वर्णकार ने संगोष्ठी की समस्त रूपरेखा पर प्रकाश डाला। विश्वविद्यालय की कुलपति के द्वारा संगीत के महत्व पर प्रकाश डाला गया। उन्होंने कहा पारंपरिक भारतीय संगीत के आधुनिक स्वरूप में संगीत का शरीर एवं मन पर प्रभाव महत्वपूर्ण है जिस पर शोध को प्राथमिकता दी जानी चाहिए। प्रो दिवाकर राजपूत द्वारा संक्षिप्त व्याख्यान प्रस्तुत किया गया।

प्रथम सत्र में अध्यक्षीय उद्बोधन प्रो. अशोक अहिरवार द्वारा दिया गया। प्रथम सत्र में विषय विशेषज्ञ के रूप में डॉक्टर शारंगधर साठे रहे। उन्होंने संवादिनी पर बड़ी सुंदर प्रस्तुति दी। तबले पर संगत ह्रषिकेश सुरवसे द्वारा किया गया। तत्पश्चात दिल्ली से पधारे जुहैब अहमद खान ने एकल तबला वादन की प्रस्तुति दी जिसमें हारमोनियम पर संगत श्री ललित के द्वारा की गई। सत्र में विषय विशेषज्ञ की रूप में दरभंगा से पधारीं प्रोफ़ेसर लावण्या कीर्ति सिंह रहीं। अपने उद्बोधन में उन्होंने कहा कि संगीत की माया से कोई भी ना बच सका। उन्होंने अपने व्याख्यान में भारतीय संगीत के इतिहास पर संक्षिप्त रुप में प्रकाश डाला। इस सत्र में द्वितीय विषय विशेषज्ञ के रूप में शंकुमय देवनाथ रहे उन्होंने राग मुल्तानी एवं राग पटदीप में अपनी प्रस्तुति दी। तत्पश्चात डॉक्टर देवीका बोरठाकुर द्वारा सत्रीय नृत्य की मनमोहक प्रस्तुति दी। कार्यक्रम का आभार व्यक्त कार्यक्रम संयोजक डॉ अवधेश प्रताप सिंह तोमर द्वारा किया गया।

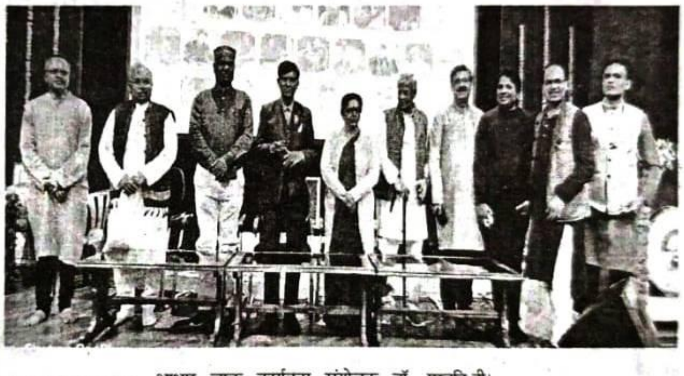

द्वितीय एवं समापन दिवस 6 मार्च को प्रथम सत्र का प्रारंभ मां सरस्वती की वंदना से हुआ इस सत्र में मुख्य अतिथि के रुप में विश्वविद्यालय की कुलसचिव डॉ. पॉल एवं डॉ. संतोष सहगौरा उपस्थित रहे। प्रथम सत्र में विषय विशेषज्ञ के रुप में सुब्रत डे रहे। जिन्होंने सितार पर राग अहिर भैरव की प्रस्तुति दी।

तबला पर संगति गगन राज ने की। तत्पश्चात सुश्री निकिता लेले ने राग नट भैरव एवम नाट्य गीत की प्रस्तुति दी। इस सत्र के अंतिम विशेषज्ञ के रुप में पंडित देवेंद्र वर्मा रहे। उन्होंने गायन वादन और नृत्य तीनों पर सूक्ष्मता से प्रकाश डाला। संगोष्ठि के द्वितीय सत्र में प्रवीण कासलीकर ने एकल हारमोनियम वादन किया। तत्पश्चात शारंगधर साठे एवं प्रवीण कासलीकर ने जुगलबंदी की। तबले पर संगत ह्रषिकेश सुरवसे एवं शैलेन्द्र राजपूत रहे। तत्पश्चात सुश्री नंदिनी गायकवाड़ से राग शुद्ध सारंग में ख्याल गायन प्रस्तुत किया। तबले पर ह्रषिकेश सुरवसे और हारमोनियम पर प्रवीण ने संगत की। तत्पश्चात डॉ. अमृतेश मिश्रा ने राग किरवानी में ख्याल गायन तथा उपशास्त्रीय गायन प्रस्तुत किया। हारमोनियम पर श्री प्रवीण तथा तबले पर ह्रषिकेश सुरवसे ने संगत की।

संगोष्ठी में पंडित देवेंद्र वर्मा, दरभंगा से पधारी प्रोफ़ेसर लावण्या कीर्ति सिंह, डॉक्टर देवीका बोरठाकुर, डॉ हरिओम सोनी, कीर्ति सोनी, प्रेम कुमार चतुर्वेदी, भुवनेश्वर तिवारी, पं. विभूति मलिक, अभिनाश देसाई, दुर्गेश मिश्रा, मोहन दास, डॉक्टर शशि कुमार सिंह एवं सिद्धार्थ शुक्ला सहित विश्वविद्यालय एवं शहर के गणमान्य नागरिक उपस्थित रहे। कार्यक्रम का आभार व्यक्त कार्यक्रम संयोजक डॉक्टर अवधेश प्रताप सिंह तोमर द्वारा किया गया तथा कार्यक्रम संयोजक डॉ. राहुल स्वर्णकार ने कार्यक्रम का पूर्ण प्रतिवेदन प्रस्तुत किया।

विश्वविद्यालय और जूलॉजिकल सर्वे ऑफ इंडिया के संयुक्त तत्त्वावधान में दो दिवसीय कार्यशाला आयोजित

प्राणी अध्ययन में ज्ञान का भण्डार है जेडएसआई: प्रो. नीलिमा गुप्ता

विजय मत, ब्यूरो, सागर

डॉ हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर के जूलॉजी विभाग में बुधवार को जेडएसआई के संयुक्त तत्वाधन में दो दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। कुलगुरू प्रो। नीलिमा गुप्ता की अध्यक्षता में यह कार्यशाला हुई जिसमें जेडएसआई से डॉ अंजुम रिजवी मुख्य अतिथि थीं।कार्यशाला के विषिष्ट अतिथि पूर्व विभागाध्यक्ष प्रो डी।पी। गुप्ता रहे।

मिट्टी एवं जलीय जीवों को अलग करने एवं लक्षण वर्णन तकनीकि विषय पर दो दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। प्रो वर्षा शर्मा ने कार्यशाला की प्रारंभिक जानकारी दी। कार्यशाला को-आर्डिनेटर प्रो श्वेता यादव ने कहा कि कार्यशाला एप्टरीगोट्स नेमाटोड केंचुए और मछलियाँ मुख्य रूप से एप्टीगोटस नेमाटोडस केंचुए और मछलियों पर केंद्रित है। उन्होंने कहा कि कार्यशाला में लगभग 65 विद्यार्थियों ने पंजीयन किया। प्रशिक्षण में विद्यार्थियों को परंपरागत पहचान की तकनीकि की जानकारी दी जायेगी। अनुसंधान एवं विकास के निर्देशक प्रो। एच थामस ने विश्वविद्यालय विभिन्न कार्यक्रम की जानकारी दी। कार्यशाला की अध्यक्षता जेडएसआई डॉ। अंजुम रिजवी ने कहा जेडएसआई विभिन्न राज्यों के जीवों का अध्ययन एवं क्षेत्रीय जीव संरक्षण पर कार्य कर रही है। इसके साथ ही हम भारत में परिस्थिति की अध्ययन एवं पर्यावरण प्रभाव का आकलन पर भी कार्य कर रहे है। इस कार्यशाला में परंपरागत पहचान की तकनीकि पर चर्चा करेगें।

कुलगुरू प्रो नीलिमा गुप्ता ने कहा कि इस कार्यशाला के माध्यम से जेडएसआई और विश्वविद्यालय मिलाकर कार्य कर रहे है जिससे विद्यार्थियों को अधिक से अधिक नई तकनीकि की जानकारी दी जा सकें। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय अभी तक 69 एमओयू साईन कर चुका है। अभी हाल ही में हिमाचल विश्वविद्यालय के साथ एमओयू साईन किया गया है। जिससे विभिन्न क्षेत्र के विधार्थियों को अन्य क्षेत्र में रिसर्ज में मदद मिलेगी। जूलॉजिकल सर्वे ऑफ इंडिया (जेडएसआई) पर्यावरण और वन मंत्रालय का एक अधीनस्थ संगठन है। ये प्राणियों के बारे में ज्ञान का भण्डार है। जेडएसआई के 16 केंद्र है। उन्होंने कहा कि शीघ्र ही विश्वविद्यालय की ओर जेडएसआई के साथ एमओयू साईन किया जायेगा। जिससे विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों को इसका लाभ मिल सकें। कार्यशाला के विषिष्ट अतिथि पूर्व विभागाध्यक्ष प्रो डीपी गुप्ता ने कहा कि जूलॉजी विभाग के लिये सौभाग्य है कि वर्तमान में माननीय कुलपति प्रो नीलिमा गुप्ता भी जूलॉजी विभाग से ही है। जिससे विभाग को भविष्य इसका लाभ मिलेगा। कार्यशाला में दोपहर तकनीकि मत्स्य वैज्ञानिक प्रो। जर्नद प्रसाद शुक्ला इंदिरा गांधी ट्रॉयबल विश्वविद्यालय अमरकंट भी उपस्थित रहे जो मत्स्य परजीवि के अध्ययन की तकनीकी विद्यार्थियों को सिखायेगे डॉ। गुरूपदा मडल मृदा के सूक्षम कीटों के बारे में गहन अध्ययन कराया सत्र पूर्व विभागाध्यक्ष प्रो। स्मिता बेनर्जी ने लिया। सभी आभार डॉ। पायल महोबिया ने किया। कार्यषाला में पूर्व विभागाध्यक्ष प्रो सुबोध जैन, प्रो यू।एस गुप्ता, डॉ जी।पी। शुक्ला, रीतिका, प्रो एम। एल। खान, डॉ। राजकुमार कोईरी, सहित अन्य फैकेल्टी उपस्थित रही।

प्राणी अध्ययन में ज्ञान का भण्डार है जेडएसआई

सागर, आचरण संवाददाता।

डॉ हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर के जूलॉजी विभाग में बुधवार को जेडएसआई के संयुक्त तत्वावधान में दो दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया. कुलगुरू प्रो. नीलिमा गुप्ता की अध्यक्षता में यह कार्यशाला हुई जिसमें जेडएसआई से डॉ अंजुम रिजवी मुख्य अति-; थीं।कार्यशाला के विशिष्ट अतिथि पूर्व विभागाध्यक्ष प्रो डी.पी. गुप्ता रहे। मिट्टी एवं जलीय जीवों को अलग करने एवं लक्षण वर्णन तकनीकी विषय पर दो दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। प्रो वर्षा शर्मा ने कार्यशाला की प्रारंभिक जानकारी दी. कार्यशाला कोऑर्डिनेटर प्रो श्वेता यादव ने कहा कि कार्यशाला एप्टरीगोट्स नेमाटोड केंचुए और मछलियां मुख्य रूप से एप्टीगोटस नेमाटोडस केंचुए और मछलियों पर केंद्रित है. उन्होंने कहा कि कार्यशाला में लगभग 65 विद्यार्थियों ने पंजीयन किया. प्रशिक्षण में विद्यार्थियों को परंपरागत पहचान की तकनीक की जानकारी दी जायेगी. अनुसंधान एवं विकास के निदेशक प्रो. एच थॉमस ने विश्वविद्यालय विभिन्न कार्यक्रम की जानकारी दी. कार्यशाला की अध्यक्षता जेडएसआई डॉ. अंजुम रिजवी ने कहा जेडएसआई विभिन्न राज्यों के जीवों का अध्ययन एवं क्षेत्रीय जीव संरक्षण पर कार्य कर रही है। इसके साथ ही हम भारत में परिस्थिति की अध्ययन एवं पर्यावरण प्रभाव का आकलन पर भी कार्य कर रहे है।

इस कार्यशाला में परंपरागत पहचान की तकनीकि पर चर्चा करेगें। कुलगुरू प्रो नीलिमा गुप्ता ने कहा कि इस कार्यशाला के माध्यम से जेडएसआई और विश्वविद्यालय मिलाकर कार्य कर रहे है जिससे विद्यार्थियों को अधिक से अधिक नई तकनीकि की जानकारी दी जा सकें. उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय अभी तक 69 एमओयू साइन कर चुका है. अभी हाल ही में हिमाचल विश्वविद्यालय के साथ एमओयू साइन किया गया है. जिससे विभिन्न क्षेत्र के विद्यार्थियों को अन्य क्षेत्र में रिसर्च में मदद मिलेगी. जूलॉजिकल सर्वे ऑफ इंडिया (जेडएसआई) पर्यावरण और वन मंत्रालय का एक अधीनस्थ संगठन है. ये प्राणियों के बारे में ज्ञान का भण्डार है. जेडएसआई के 16 केंद्र है। उन्होंने कहा कि शीघ्र ही विश्वविद्यालय की ओर जेडएसआई के साथ एमओयू साइन किया जायेगा। जिससे विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों को इसका लाभ मिल सकें।

कार्यशाला के विशिष्ट अतिथि पूर्व विभागाध्यक्ष प्रो डीपी गुप्ता ने कहा कि जूलॉजी विभाग के लिये सौभाग्य है कि वर्तमान में कुलपति प्रो नीलिमा गुप्ता भी जूलॉजी विभाग से ही हैं। जिससे विभाग को भविष्य इसका लाभ मिलेगा. कार्यशाला में दोपहर तकनीकि मत्स्य वैज्ञानिक प्रो. जर्नद प्रसाद शुक्ला इंदिरा गांधी ट्रॉयबल विश्वविद्यालय अमरकंट भी उपस्थित रहे जो मत्स्य परजीवि के अध्ययन की तकनीकी विद्यार्थियों को सिखायेगे डॉ. गुरूपदा मडल मृदा के सूक्षम कीटों के बारे में गहन अध्ययन कराया सत्र पूर्व विभागाध्यक्ष प्रो. स्मिता बेनर्जी ने लिया। सभी आभार डॉ. पायल महोबिया ने किया। कार्यशाला में पूर्व विभागाध्यक्ष प्रो सुबोध जैन, प्रो यू.एस गुप्ता, डॉ जी.पी. शुक्ला, रीतिका, प्रो एम. एल. खान, डॉ. राजकुमार कोईरी, सहित अन्य फैकेल्टी उपस्थित रही।

मूट कोर्ट के बिना विधि की पढ़ाई संभव नहीं है: आईजी वर्मा

सागर | डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय के विधि विभाग में दो दिवसीय अंतर विभागीय मूट कोर्ट प्रतियोगिता फाइनल राउंड के साथ पूरी हो गई। इस प्रतियोगिता के फाइनल राउंड में निर्णायक न्यायाधीश मनीष भट्ट, न्यायाधीश अब्दुल्लाह, प्रो पीपी सिंह व प्रो हिमांशु पांडेय रहे।

इनके द्वारा दिए गए अंकों के आधार पर हर्षिता, प्रशांत व दर्षना की टीम विजयी रही तथा सुनंद दीप सिंह, अर्नव यादव व ऋषभ कुमार की टीम उपविजेता रही। बेस्ट स्पीकर प्रशांत तिवारी व बेस्ट रिसर्चर यशस्वी ताम्रकार को चुना गया। अध्यक्षता विभागाध्यक्ष प्रो मनविंदर सिंह पाहवा ने की। पुलिस महानिरीक्षक प्रमोद वर्मा ने कहा कि जिस तरह भौतिक विज्ञान व रसायन विज्ञान की पढ़ाई बिना प्रयोगशाला के संभव नहीं है ठीक उसी प्रकार विधि की भी पढ़ाई बिना मूट कोर्ट के संभव नहीं है।वर्मा ने इस बात पर भी सहमति व्यक्त की कि जवाहर लाल नेहरू पुलिस अकादमी विश्वविद्यालय के साथ तीनों नए कानूनों भारतीय न्याय संहिता, भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता व भारतीय साक्ष्य अधिनियम को लोगों तक पहुंचाने तथा पुलिस प्रशिक्षण के लिए जल्द ही एमओयू हस्ताक्षरित करेगी। कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने विधि विभाग को अपने पहले अंतर विभागीय मूट कोर्ट प्रतियोगिता के आयोजन के लिए शुभकामनाएं देते हुए इसे भावी अधिवक्ताओं के व्यक्तित्व को निखारने वाला बताया। विशिष्ट अतिथि प्रो. हिमांशु पांडेय ने विद्यार्थियों को इस प्रतियोगिता में भाग लेने के लिए बधाई दी तथा इसके महत्व को समझाते हुए बताया कि कोई भी ज्ञान बिना उसके व्यावहारिक प्रयोग के अधूरा है। विधिक ज्ञान को व्यवहारिक रूप से प्रयोग किया जाना आवश्यक है। बतौर अतिथि विभागाध्यक्ष प्रो. पीपी सिंह भी शामिल हुए। कार्यक्रम के दौरान प्रतियोगिता संयोजक डॉ. विवेक दुबे, सहसंयोजक डॉ. विकास अग्रवाल, डॉ. कृष्ण कुमार, डॉ. अनुपमा पंडित सक्सेना आदि मौजूद थे।

विवि में मना हॉस्टल-डे, छात्राओं ने गीत से लेकर श्रीकृष्ण लीलाओं की दी प्रस्तुति

सागर | डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर के स्वर्ण जयंती सभागार में बालिका छात्रावास का हॉस्टल डे मनाया गया, जिसमें छात्राओं ने मनोरंजक एवं मनमोहक सांस्कृतिक प्रस्तुतियां दीं। इस अवसर पर फार्मेसी विभाग की विभागाध्यक्ष उपस्थित रहीं।

कार्यक्रम के पूर्व मुख्य छात्रावास अधीक्षिका डॉ रश्मि सिंह ने छात्रावास की गतिविधियों से संबंधित वार्षिक प्रतिवेदन प्रस्तुत किया। उन्होंने बताया कि हॉस्टल में भारत के विभिन्न प्रान्तों से आई छात्राएं रह रही हैं। छात्राओं को प्रसन्न रखने के लिए समय-समय पर मनोरंजक गतिविधियों का भी आयोजन किया जाता है। महिला क्लब की सदस्य भी इस आयोजन में उपस्थित रहीं। कार्यक्रम का संचालन डॉ वंदना राजौरिया ने किया।

कार्यक्रम में अंशिका तिवारी ने मनमोहक कत्थक की प्रस्तुत दी। जया ने वेस्टर्न, मोहिनी ने मुरली की धुन पर प्रस्तुति दी। मोनालिसा ने ओडिशा का संबलपुरी नृत्य प्रस्तुत किया। अंशिका और अनुष्का ने गीत प्रस्तुत किया। महाराष्ट्र के लोक नृत्य की प्रस्तुति हर्षिता साहू एवं तृप्ति द्वारा दी गई। सौम्या शुक्ला, अनुमाश्री, अंजली पटेल ने मंच संचालन किया।

महिलाएं समाज का अभिन्न अंग

सागर. महिला दिवस के दिन सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक सहित विभिन्न क्षेत्रों में महिलाओं के अभूतपूर्व कार्यो और उनकी उपलब्धियों को याद किया जाता है।

पिछले वर्षो में महिलाओं के अधिकारों की रक्षा और उन्हें आगे बढने के लिए प्रोत्साहित करने के लिए लोगों में उत्साह दिखा है। सत्य यह है कि संयुक्त राष्ट्र के मुताबिक दुनिया का कोई भी देश यह दावा नहीं कर सकता है कि उसके देश में महिलाओं को पुरुषों के ही समान सभी अधिकार मिले हुए हैं। दुनिया की करीब 1.3 अरब महिलाएं पुरुषों की तुलना में अधिक गरीब हैं। समान कार्य के लिए महिलाओं को पुरुषों की तुलना में औसतन तीस से चालीस प्रतिशत कम वेतन दिया जाता है। महिलाएं हिंसा की शिकार होती हैं। बलात्कार और घरेलू हिंसा के साथ विकलांगता जैसी कई गंभीर स्थितियों से उन्हें गुजरना पड़ता है। आज हम लगभग सभी देशों में लैंगिक समानता की बात करते हैं, लेकिन राष्ट्रों द्वारा बड़ी प्रगति के बावजूद भी यह विचार एक सपना बना हुआ है। यह अनुमान लगाया गया है कि दुनिया भर में लगभग 60 प्रतिशत महिलाएं आर्थिक रूप से कमजोर समाज से हैं एवं उनके और अधिक गरीबी में जाने का खतरा है। विश्व स्तर पर महिलाएं पुरुषों की तुलना में 23 प्रतिशत कम कमाती हैं। महिला दिवस मनाने की जड़ें 1908 के महिलाओं के एक आंदोलन से जुड़ी हुई हैं। 1910 में जर्मनी में सोशल डेमोक्रेटिक पार्टी की महिला कार्यालय की एक नेता क्लारा जेटकिन ने महिला दिवस को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर मनाने का विचार पेश किया। 17 देशों की 100 से अधिक महिलाओं के एक सम्मेलंन ने उनके सुझाव पर सहमति व्यक्त की और आईडब्ल्यूडी अर्थात अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस का गठन किया गया। 1911 में महिला दिवस पहली बार ऑस्ट्रिया डेनमार्क जर्मनी और स्विट्जरलैंड में 19 मार्च को मनाया गया। 1913 में आईडब्ल्यूडी अर्थात अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस को 8 मार्च को मनाने का निर्णय लिया गया तब से यह 8 मार्च को मनाया जाता है। इस साल 2024 में महिला दिवस की थी इंस्पायर इंक्लूजनश है। जिसका अर्थ होता है ऐसी दुनियाए जहां हर किसी को बराबर का हक और सम्मान मिले।

टॉपिक एक्सपर्ट

प्रो. नीलिमा गुप्ता, कुलपति, डॉ. हरिसिंह गौर विवि

विवि में प्रवेशित विद्यार्थियों में 44% छात्राएं, गोल्ड मेडलिस्ट 62.5%, फैकल्टी में महिलाओं की सहभागिता 36%

प्रो. नीलिमा गुप्ता
कुलपति, डॉ. हरीसिंह गौर विवि

पिछले वर्षों में महिलाओं के अधिकारों की रक्षा और उन्हें आगे बढ़ने के लिए प्रोत्साहित करने के लिए लोगों में उत्साह दिखा है। सत्य यह है कि संयुक्त राष्ट्र के मुताबिक दुनिया का कोई भी देश यह दावा नहीं कर सकता कि उसके देश में महिलाओं को पुरुषों के ही समान सभी अधिकार मिले हुए हैं। दुनिया की 1.30 अरब महिलाएं पुरुषों की तुलना में अधिक गरीब हैं। समान कार्य के लिए महिलाओं को पुरुषों की तुलना में औसतन 30 से 40 प्रतिशत कम वेतन दिया जाता है। महिलाएं हिंसा की शिकार होती हैं, बलात्कार और घरेलू हिंसा के साथ विकलांगता जैसी कई गंभीर स्थितियों से उन्हें गुजरना पड़ता है। एक अनुमान के मुताबिक दुनिया में 60% महिलाएं आर्थिक रूप से कमजोर समाज से हैं। उनके और अधिक गरीबी में जाने का खतरा है।

विश्व स्तर पर महिलाएं पुरुषों की तुलना में 23% कम.कमाती हैं। दुनियाभर में संसदीय सीटों पर केवल 24% महिलाएं हैं। उत्तर कोरिया में महिला साक्षरता दर 100% है। पोलैंड, रूस और यूक्रेन 99.7%, इटली 99.0%, सर्बिया 97.5%, चीन 95.2%, यहां तक कि हमारे पड़ोसी छोटे देश श्रीलंका में यह 91.0% है। जबकि हमारे भारत में यह 65.8% है। पाकिस्तान में यह 46.5% अफगानिस्तान में 29.8%, चाड में 14.0% और नाइजर में 11.0% है। नेपाल की महिला श्रम शक्ति भागीदारी दर 81.4%, वियतनाम 72.73%, सिंगापुर 61.97%, यूके 58.09%, यूएसए 56.76%, सर्बिया 47.92% है, जबकि भारत ग्रामीण आधारित देश है यहाँ पर दर केवल 20.7% है। इसलिए अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस भारत में महिलाओं की स्थिति को ऊपर उठाने के लिए जागरूकता, प्रयास और श्रम प्रेरणा का आह्वान करता है। वर्ष 1975 में संयुक्त राष्ट्र द्वारा महिला दिवस को अंतरराष्ट्रीय मान्यता मिलने के बाद हर साल विषय रखने का भी नियम बनाया गया। तभी से हर साल महिला दिवस के लिए कोई न कोई थीम रखी जाती है। इस साल 2024 में महिला दिवस की थीम इंस्पायर इन्क्लूजन है। जिसका अर्थ है- एक ऐसी दुनिया, जहां हर किसी को बराबर का हक और सम्मान मिले। नेशनल स्टेटिस्टिकल ऑफिस ने राष्ट्रीय सर्वेक्षण में पाया कि नर का साक्षर दर 84.7% है जबकि नारियों का 70.3%। भारत में जहां एक ओर 67% पुरुष कार्य करते हैं, वहीं महिलाएं मात्र 33% वर्किंग हैं। यदि हमें राष्ट्र की आर्थिक स्थिति में सुधार लाना है तो साक्षरता दर बढ़ानी होगी। जिससे छात्राएं उच्च शिक्षा प्राप्त कर, उचित नौकरी पा सकें और देश को आर्थिक सहयोग प्रदान कर सकें। किसी भी समाज की उन्नति उस समाज की औरतों की उन्नति से मापी जा सकती है।

डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय में पिछले सत्र 2023-24 में कुल प्रवेशित 3022 विद्यार्थियों में से 44% छात्राएं हैं। यूनिवर्सिटी मेडल-2023 की लिस्ट में जिन 56 विद्यार्थियों को गोल्ड मेडल मिलने हैं उनमें 35 यानी 62.5% छात्राएं हैं। वर्तमान में गेस्ट और रेगुलर फैकल्टी के 250 सदस्यों में एक तिहाई से भी अधिक 36% यानी 90 महिला फैकल्टी हैं। इस अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर हम संकल्प लें कि हम ज्यादा से ज्यादा महिलाओं को उनकी कुशलता, क्षमता, दक्षता एवं शिक्षा के आधार पर 'वर्किंग विमेन' की श्रेणी में लाने के लिए प्रोत्साहित करें। जिससे न केवल समाज में बदलाव आएगा बल्कि देश की अर्थव्यवस्था नई ऊंचाइयां छू सकेगी। इन प्रयासों से हम महिलाओं को समाज में पूर्ण रूप से जोड़ पाने में सक्षम होंगे और भारत सफलता के नए आयाम छूने में सफल होगा।

आयोजन विश्वविद्यालय में अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस कार्यक्रम आयोजित

महिलाओं के बुलंद इरादे चट्टानों को तोड़ देती हैं

सागर(नवदुनिया प्रतिनिधि)। अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के उपलक्ष्य में डाक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय के स्वर्ण जयन्ती सभागार में अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस अवसर पर 'इन्वेस्टिंग इन वूमेन : एक्सीलरेट प्रोग्रेस' विषय पर व्याख्यान का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम में कुलपति प्रो नीलिमा गुप्ता ने कहा कि एक समय था जब महिलाओं को केवल घरेलू कार्यों एवं बच्चे संभालने के लिए जाना जाता था। आज महिलाएं घर से बहार निकलकर घर और बाहर दोनों जिम्मेदारियां संभाल रही हैं। यह केवल अवसर मिलने के कारण ही संभव हुआ है। एक महिला जब बुलंद इरादों के साथ आगे बढ़ती है तो वह बड़ी से बड़ी चट्टान को तोड़ देती है। आज विज्ञान, तकनीकी, इंजीनियरिंग, जैसे क्षेत्रों में महिलायें आगे हैं और पायलट, प्रशासनिक अधिकारी और राजनीतिक नेतृत्व जैसे कठिन कार्यों को बखूबी निभा रही हैं। महिलायें पहले से ही सशक्त हैं। समाज को खुद पहल करनी चाहिए और महिलाओं को प्रोत्साहन देना चाहिए।

स्त्री शक्ति के सपनों को उड़ान दें, देश अपने आप प्रगति करेगा

विशिष्ट अतिथि डा. अनीता भटनागर जैन ने कहा कि पूरी दुनिया में आज स्त्री की आधी आबादी है और भारत में भी है। सबसे मजबूत तथ्य यह है कि हमारे देश की आधी आबादी की आयु 15-67 वर्ष के बीच है जो काफी सशक्त है। यह एक सशक्त समूह है जिसके सहयोग से भारत एक विकसित और सशक्त राष्ट्र बन सकता है। देश के कई सर्वे रिपोर्ट यह बताते हैं कि महिलाओं के प्रति हिंसा का ग्राफ अभी भी काफी है। हम सब लड़कियों के सपनों को उड़ान दें, उन्हें अभिव्यक्ति की आजादी दें। देश अपने आप प्रगति करेगा। कार्यक्रम का संचालन डा. वंदना विनायक ने किया। इस अवसर पर प्रो. कुसुम भूरिया, प्रो. स्मिता बनर्जी, प्रो निवेदिता मैत्रा, प्रो अर्चना पांडे, प्रो चन्दा बेन, प्रो वंदना सोनी, रश्मि सिंह मंचासीन रही। कार्यक्रम में खाद्य सुरक्षा एवं औषधि प्रशासन विभाग की पूर्व अपर मुख्य सचिव डा. अनीता भटनागर जैन उपस्थित रही।

हास्टल डे उत्सव में छात्राओं ने दी सांस्कृतिक प्रस्तुतियां

स्वर्ण जयंती सभागार में बालिका छात्रावास का हास्टल डे मनाया गया, जिसमें छात्राओं ने मनोरंजक एवं मनमोहक सांस्कृतिक प्रस्तुतियां दी। कार्यक्रम के पूर्व मुख्य छात्रावास अधीक्षिका डा. रश्मि सिंह ने छात्रावास की गतिविधियों से सम्बंधित वार्षिक प्रतिवेदन प्रस्तुत किया। उन्होंने बताया कि हॉस्टल में भारत के विभिन्न प्रान्तों से आई छात्राएं रह रही है और यहां उन्हें सर्व सुविधाएं उपलब्ध है।

जैसे वाईफाई, हेल्थ, भोजन, आदि। छात्रों को उल्लसित रखने के लिए समय समय पर मनोरंजक गतिविधियों का भी आयोजन किया जाता रहा है। कार्यक्रम का संचालन वंदना राजौरिया ने किया। कार्यक्रम का उद्देश्य छात्राओं में शैक्षणिक गतिविधियों के अतिरिक्त सर्वांगीण विकास और उनमें नई ऊर्जा उत्पन्न करना था। कार्यक्रम में अंशिका तिवारी ने मनमोहक कत्थक की प्रस्तुत किया। जाया ने वेस्टर्न करके सभी का मन मोह लिया।

बालिका छात्रावास में हॉस्टल डे पर कार्यक्रम

नवभारत न्यूज

सागर 8 मार्च. डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय के स्वर्ण जयंती सभागार में बालिका छात्रावास का हॉस्टल डे मनाया गया जिसमें छात्राओं ने सांस्कृतिक प्रस्तुतियां दीं.

कार्यक्रम के पूर्व मुख्य छात्रावास अधीक्षिका डॉ रश्मि सिंह ने छात्रावास की गतिविधियों से सम्बंधित वार्षिक प्रतिवेदन प्रस्तुत किया. उन्होंने बताया कि हॉस्टल में भारत के विभिन्न प्रान्तों से आई छात्राएं रह रही है. संचालन डॉ वंदना राजौरिया ने किया. कार्यक्रम का उद्देश्य छात्राओं में शैक्षणिक गतिविधियों के अतिरिक्त सर्वांगीण विकास और उनमें नई ऊर्जा उत्पन्न करना था. कार्यक्रम में अंशिका तिवारी ने कत्थक की प्रस्तुत किया. जाया ने वेस्टर्न, मोहिनी ने मुरली की धुन पर प्रस्तुति दी. उड़ीसा का संबलपुरी नृत्य सीखा और मोनालिसा ने प्रस्तुत किया. अंशिका और अनुष्का ने गीत प्रस्तुति की. महाराष्ट्र का लोक नृत्य की प्रस्तुति हर्षिता साहू एवं तृप्ति द्वारा दी गई. राजस्थान संस्कृत की प्रस्तुति कल्पना द्वारा की गई.

संगीत देश की सीमाओं से परे सार्वभौमिक मनुष्यता का परिचायक हैः प्रो. अहिरवार

सागर | डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय के संगीत विभाग में दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी हुई। संगोष्ठी के संयोजक डॉ. राहुल स्वर्णकार ने रूपरेखा बताई। कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने कहा पारंपरिक भारतीय संगीत के आधुनिक स्वरूप में संगीत का शरीर व मन पर प्रभाव महत्वपूर्ण है।

इसमें शोध को प्राथमिकता दी जानी चाहिए। प्रो. दिवाकर राजपूत ने भी व्याख्यान दिया। अध्यक्षता कर रहे विभागाध्यक्ष प्रो. अशोक अहिरवार ने कहा दुनिया के इतिहास पर नजर डाली जाए तो दुनिया में युद्ध और हिंसा के लिए जो जिम्मेदार लोग हैं, उन जीवन में संगीत और कला का अभाव रहा है। जिस दौर में संगीत और कला को मानने वाले शासक रहे हैं, उस दौर में दुनिया में अमन, शांति और सद्भावना रही है। आज भी संगीत के विस्तार से मानवीय संवेदनाओं का विस्तार जुड़ा हुआ है। संगीत आत्मा की शांति और मनुष्य में अहिंसा को जन्म देता है। संगीत देश की सीमाओं से परे होकर सार्वभौमिक मनुष्यता का परिचायक है।

विषय विशेषज्ञ डॉ. शारंगधर साठे ने संवादिनी पर सुंदर प्रस्तुति दी। तबले पर संगत हृषिकेश सुरवसे ने किया। दिल्ली से आए जुहैब अहमद खान ने एकल तबला वादन की प्रस्तुति दी। हारमोनियम पर संगत ललित ने की। विषय विशेषज्ञ प्रो. लावण्या कीर्ति सिंह ने कहा संगीत की माया से कोई भी नहीं बच सका। विषय विशेषज्ञ शंकुमय देवनाथ ने राग मुल्तानी एवं राग पटदीप में अपनी प्रस्तुति दी। इसके बाद डॉ. देविका बोरठाकुर ने शास्त्रीय नृत्य की प्रस्तुति दी। आभार कार्यक्रम संयोजक डॉ. अवधेश प्रताप सिंह तोमर ने माना। समापन दिवस के पहले सत्र में मुख्य अतिथि संयुक्त कुलसचिव संतोष सोहगौरा ने कार्यक्रम की शुरुआत की। बतौर अतिथि सहायक कुलसचिव आरके पाल भी मौजूद थे।

भारतीय भाषाओं के साथ-साथ मातृभाषा में भी शोध करें: देव

भास्कर संवाददाता | सागर

डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय के वाणिज्य विभाग में राष्ट्रीय सम्मेलन के तहत चार तकनीकी सत्रों का आयोजन किया गया, जिनका विषय "लेखांकन नवाचार एवं सतत प्रबंधन" रहा। इसमें 90 से अधिक शोध पत्र पढ़े गए। इन शोध पत्रों के अध्ययन से पता चला कि सामाजिक और पर्यावरणीय रूप से अधिक मजबूत अर्थव्यवस्था बनने के लिए सार्वजनिक निजी भागीदारी, वैश्विक कॉर्पोरेट नागरिकता और सामाजिक उद्यमिता स्तंभ के रूप में कार्य करेंगे।

तकनीकी सत्र की अध्यक्ष प्रो. कुशल जैन भोपाल रहीं व मुख्य वक्ता के रूप में प्रो. राजीव अग्रवाल ने अपने वक्तव्य में बताया कि आज की तेज तकनीकी प्रगति ने लेखांकन में नए आयाम उत्पन्न किए हैं और व्यवसायों को सतत प्रबंधन की दिशा में बढ़ाने का अवसर प्रदान किया है। अगले तकनीकी सत्र में भौतिक रूप से 42 शोध पत्र पढ़े गए। जिसमें शोध पत्रों के मुख्य विषय नवाचार लेखांकन, लागत न्यून्तमीकरण लेखांकन, रोजगार एवं बजट लेखांकन, कर लेखांकन तथा मानव संसाधन प्रबंध लेखांकन रहा। इस सत्र के अध्यक्ष प्रो. केशव टेकाम ने कहा कि अर्थशास्त्र के विभिन्न सिद्धांतों से लेखांकन प्रणालियों का उद्भव वर्तमान में वटवृक्ष की तरह पल्लवित हो रहा है। इस सत्र की मुख्य वक्ता डॉ. अनिता कुमारी रहीं जिन्होंने सतत प्रबंधन पर प्रकाश डाला।

मुख्य वक्ता पत्रकार पंकज सोनी ने कहा कि समाज उन लोगों पर टिका हुआ है जो कर्तव्यनिष्ठा एवं ईमानदारी से अपने दायित्वों का निर्वहन कर रहे हैं। मुख्य अतिथि समाजसेवी सुनील देव ने कहा भारतीय मानवीय एवं सांस्कृतिक शैली पर हो रहा लेखांकन शोध, विषय को एक नई पहचान दे रहा है। भारतीय भाषाओं के साथ-साथ मातृभाषा को अंगीकार करते हुए उनमें शोध करें।

वाणिज्य विभागाध्यक्ष एवं सेमिनार निर्देशक प्रो. जेके जैन ने संपूर्ण राष्ट्रीय अधिवेशन पर चर्चा के परिणामों को प्रस्तुत किया। दो दिवसीय सेमिनार के प्रतिवेदन का वाचन डॉ. सुषमा यादव ने किया।

उपलब्धि | **सशक्त बनाने की कोशिश करने वाली महिलाओं के नाम शामिल**

कुलपति गुप्ता को शिक्षा में सबसे प्रभावशाली महिलाओं में स्थान मिला

सागर, आचरण संवाददाता।

डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता को शिक्षा में सबसे प्रभावशाली महिलाओं में स्थान मिला है। विश्वविद्यालय, सागर शहर, बुंदेलखंड सहित समूचे मध्य प्रदेश के लिए यह गौरवपूर्ण उपलब्धि है। प्रतिष्ठित संस्था बिजनेस वर्ल्ड के बीडब्ल्यू एजुकेशन समूह प्रत्येक वर्ष अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर शिक्षा के क्षेत्र में पचास सबसे प्रभावशाली महिलाओं की सूची जारी करता है जिसका उद्देश्य इन महिलाओं को सम्मान प्रदान करना और पाठकों और आम जनमानस को प्रेरणा प्रदान करना है। इस सूची में राजनीतिक क्षेत्र, सांस्थानिक नेतृत्व, विज्ञान, कला, मानविकी और रचनात्मक क्षेत्रों में महिलाओं के साथ-साथ एडटेक, जमीनी स्तर पर काम करने वाली और अपने श्रमसाध्य काम के माध्यम से दूसरों को सशक्त बनाने की कोशिश करने वाली महिलाओं के नाम शामिल हैं। यह सूची साहित्य, मीडिया, कला, शिक्षा, प्रशासन और मीडिया जैसे क्षेत्रों की नामचीन हस्तियों के सलाहकार पैनल द्वारा अनुशंसित है जिसे कई स्तरों के परीक्षणों के बाद तैयार किया जाता है। इस सूची में पूर्व शिक्षिका एवं भारत की महामहिम राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मू, भारत सरकार की शिक्षा राज्य मंत्री अन्नपूर्णा देवी, दिल्ली की शिक्षा मंत्री आतिशी मारलेना, भारतीय मुद्रा कोष की उप प्रबंध निदेशक गीता गोपी नाथ, एनएसडी की पूर्व निदेशक अनुराधा कपूर सहित देश के प्रख्यात विश्वविद्यालयों की महिला कुलपतियों, शिक्षकों, कला, रंगमंच, तकनीकी एवं महत्त्वपूर्ण प्रशासनिक दायित्वों का निर्वहन कर रही महिलाओं के नाम शामिल हैं। गौरतलब है कि डॉक्टर हरीसिंह गौर केंद्रीय विश्वविद्यालय, सागर की कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता का शैक्षणिक और नेतृत्व रिकॉर्ड उपलब्धियों भरा रहा है। डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय से पहले वह तिलका मांझी भागलपुर विश्वविद्यालय, छत्रपति साहूजी महाराज कानपुर विश्वविद्यालय की कुलपति रह चुकी हैं।

कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता का नाम प्रभावशाली महिलाओं में

सागर। डा. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता को शिक्षा में सबसे प्रभावशाली महिलाओं में स्थान मिला है। प्रतिष्ठित संस्था बिजनेस वर्ल्ड के बीडब्ल्यू एजुकेशन समूह प्रत्येक वर्ष अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर शिक्षा के क्षेत्र में पचास सबसे प्रभावशाली महिलाओं की सूची जारी करता है। इसका उद्देश्य इन महिलाओं को सम्मान प्रदान करना और पाठकों और आम जनमानस को प्रेरणा प्रदान करना है। इस सूची में राजनीतिक क्षेत्र, सांस्थानिक नेतृत्व, विज्ञान, कला, मानविकी और रचनात्मक क्षेत्रों में महिलाओं के साथ-साथ एडटेक, जमीनी स्तर पर काम करने वाली और अपने श्रमसाध्य काम के माध्यम से दूसरों को सशक्त बनाने की कोशिश करने वाली महिलाओं के नाम शामिल हैं। यह सूची साहित्य, मीडिया, कला, शिक्षा, प्रशासन और मीडिया जैसे क्षेत्रों की नामचीन हस्तियों के सलाहकार पैनल द्वारा अनुशंसित है जिसे कई स्तरों के परीक्षणों के बाद तैयार किया जाता है। इस सूची में पूर्व शिक्षिका एवं राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू, केंद्रीय शिक्षा राज्य मंत्री अन्नपूर्णा देवी, दिल्ली की शिक्षा मंत्री आतिशी मारलेना, भारतीय मुद्रा कोष की उप प्रबंध निदेशक गीता गोपी नाथ, एनएसडी की पूर्व निदेशक अनुराधा कपूर सहित देश के प्रख्यात विश्वविद्यालयों की महिला कुलपतियों, शिक्षकों, कला, रंगमंच, तकनीकी एवं महत्त्वपूर्ण प्रशासनिक दायित्वों का निर्वहन कर रही महिलाओं के नाम शामिल हैं। –नप्र

प्रो. नीलिमा गुप्ता।

सीयूईटी पीजी-2024 की सिटी स्लिप के बाद एडमिट कार्ड भी जारी, टेस्ट कल से

भास्कर संवाददाता | सागर

डॉ. हरीसिंह गौर केंद्रीय विश्वविद्यालय सहित देश के अन्य विश्वविद्यालयों में पीजी के विभिन्न पाठ्यक्रमों में सत्र 2024-25 में प्रवेश के लिए आयोजित होने वाली सीयूईटी प्रवेश परीक्षा के लिए एनटीए द्वारा एडमिट कार्ड जारी कर दिए गए हैं। कॉमन यूनिवर्सिटी एंट्रेस एग्जाम पीजी-2024 के लिए सिटी स्लिप पहले जारी कर दी गई थी। अब एडमिट कार्ड भी जारी कर दिए गए हैं। इस परीक्षा में शामिल होने वाले आवेदक ऑफिशियल वेबसाइट pgcuet.samarth.ac.in पर जाकर एडमिट कार्ड डाउनलोड कर सकेंगे। साल 2024 में कुल 4,62,589 आवेदकों ने रजिस्ट्रेशन कराया है। सीयूईटी पीजी एडमिट कार्ड एडवांस परीक्षा सिटी स्लिप से अलग है।

ऐसे करें एडमिट कार्ड डाउनलोड

- बसे पहले ऑफिशियल वेबसाइट pgcuet.samarth.ac.in पर जाएं।
- यहां होम पेज पर मौजूद CUET PG 2024 Admit Card लिंक पर क्लिक करें।
- फिर वहां लॉगिन करने के लिए मांगी जाने वाली जरूरी डिटेल्स भरें। इसके बाद एडमिट कार्ड लिंक आपके सामने आ जाएगा।
- उसे डाउनलोड करके प्रिंट निकालकर अपने पास रख लें।

परीक्षा कल से 28 मार्च तक: सीयूईटी पीजी-2024 के लिए जारी शेड्यूल के मुताबिक एनटीए 11 से 28 मार्च तक कंप्यूटर आधारित परीक्षण मोड में 44 पालियों में परीक्षा आयोजित करेगा। आवेदकों को अधिकतम 4 पेपर चुनने की अनुमति है।

सामग्री वितरण के साथ हुई दीक्षांत समारोह की रिहर्सल

विवि में अधिकारियों एवं विद्यार्थियों ने पूर्वाभ्यास किया। ● नवदुनिया

सागर(नवदुनिया प्रतिनिधि)। डाक्टर हरीसिंह गौर केंद्रीय विश्वविद्यालय का 32 वां दीक्षांत समारोह 13 मार्च को आयोजित किया जा रहा है।

दीक्षांत समारोह में भाग लेने वाले पंजीकृत अभ्यर्थियों ने बड़ी संख्या में गौर प्रांगण से डिग्री फाइल और ड्रेस सामग्री (पगड़ी और स्टोल) प्राप्त की। दीक्षांत सामग्री और डिग्री फाइल 12 मार्च को भी वितरित की जाएगी।

कुलपति, कार्यपरिषद एवं विद्या परिषद सदस्यों सहित मेडल पाने वाले विद्यार्थियों ने सोमवार को पूर्वाभ्यास किया। दीक्षांत समारोह में शामिल होने वाले विद्यार्थियों एवं अधिकारियों ने सभागार में पूर्वाभ्यास किया। इस दौरान विद्वत शोभायात्रा सहित मेडल प्रदान किए जाने की पूरी प्रक्रिया के संचालन का पूर्वाभ्यास किया। इस अवसर पर कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता, कार्यपरिषद सदस्यों एवं विद्या परिषद के सदस्यों ने पगड़ी पहनकर फोटो सेशन भी किया। कुलपति ने सम्पूर्ण कार्यक्रम के सफल एवं सुचारू संचालन के लिए आवश्यक दिशा निर्देश दिए।

विश्वविद्यालय का 32वां दीक्षांत समारोह आज, 1200 विद्यार्थियों को मिलेगी डिग्री

सागर | डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय का 32वां दीक्षांत समारोह बुधवार को स्वर्ण जयंती सभागार में सुबह 10:30 बजे से होगा। मुख्य अतिथि दक्षिण एशियाई विवि के अध्यक्ष प्रो. केके अग्रवाल का दीक्षांत भाषण होगा।

गौर अतिथि पंजाब विवि के पूर्व कुलपति पद्मश्री प्रो. आरसी सोबती हैं। अध्यक्षता विवि के कुलाधिपति कन्हैया लाल बेरवाल करेंगे। कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता वार्षिक प्रगति प्रतिवेदन प्रस्तुत करेंगी। दीक्षांत समारोह में सीबीसीएस प्रणाली के 11 अध्ययन शालाओं सहित संबद्ध महाविद्यालयों के 1200 विद्यार्थियों ने पंजीयन कराया है। इनमें स्नातक के 478, पीजी के 376 एवं पीएचडी के 97 विद्यार्थियों सहित कुल 951 विद्यार्थी उपस्थित होकर उपाधि हासिल करेंगे। शेष विद्यार्थियों को इन अब्सेंशिया उपाधि दी जाएगी।

विद्यार्थी बुंदेली पारंपरिक वेश-भूषा में अपनी उपाधियां हासिल करेंगे। समारोह का लाइव प्रसारण विवि के ईएमआरसी सागर के यू-ट्यूब चैनल से किया जाएगा। समारोह के मुख्य समन्वयक प्रो. नवीन कानगो ने मेडल एवं उपाधि पाने वाले विद्यार्थियों से सुबह 9.30 बजे उपस्थित होने को कहा है। मंगलवार को दीक्षांत सामग्री वितरित की गई। फाइनल रिहर्सल भी हुई।

आयोजन विवि का 32 वां दीक्षांत समारोह आज, दक्षिण एशियाई विवि के अध्यक्ष प्रो. अग्रवाल देंगे दीक्षांत भाषण

समारोह में बुंदेली वेश-भूषा में विद्यार्थी लेंगे उपाधि

सागर (नवदुनिया प्रतिनिधि)। डा. हरीसिंह गौर केन्द्रीय विश्वविद्यालय का 32वां दीक्षांत समारोह बुधवार को विश्वविद्यालय के स्वर्ण जयन्ती सभागार में सुबह 10:30 बजे से आयोजित होगा। समारोह के मुख्य अतिथि दक्षिण एशियाई विश्वविद्यालय के अध्यक्ष प्रो. केके अग्रवाल दीक्षांत भाषण देंगे। गौर अतिथि प्रख्यात शिक्षाविद्, पंजाब विश्वविद्यालय, चंडीगढ़ व बाबासाहेब भीमराव आंबेडकर विवि लखनऊ पूर्व कुलपति पद्मश्री प्रो. आरसी सोबती हैं।

विश्वविद्यालय के कुलाधिपति कन्हैया लाल बेरवाल, आइपीएस समारोह की अध्यक्षता करेंगे। विवि की कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता स्वागत वक्तव्य के साथ ही वार्षिक प्रगति प्रतिवेदन प्रस्तुत करेंगी। दीक्षांत समारोह में सीबीसीएस प्रणाली के 11 अध्ययनशालाओं सहित 2 संबद्ध महाविद्यालयों के लगभग 12 सौ

दीक्षांत समारोह के चलते पूर्वाभ्यास करते हुए विवि के अधिकारी एवं विद्यार्थी। ● नवदुनिया

विद्यार्थियों ने पंजीयन कराया है, जिसमें स्नातक के 478, पीजी 376 एवं पीएचडी के 97 छात्रों सहित कुल 951 छात्र उपस्थित होकर उपाधि प्राप्त करेंगे। इसके अतिरिक्त शेष विद्यार्थियों को इन अब्सेंशियाज् उपाधि प्रदान की जाएगी। समारोह में समस्त विद्यार्थी बुन्देली पारंपरिक वेश-भूषा में अपनी उपाधियां प्राप्त करेंगे। दीक्षांत समारोह के सम्पूर्ण कार्यक्रम का लाइव प्रसारण विवि के ईएमआरसी सागर के यूट्यूब चैनल से किया जाएगा। चैनल की लिंक विश्वविद्यालय की वेबसाइट पर उपलब्ध कराई गई है।

गौर की समाधि के समक्ष पुष्पांजलि देंगे अतिथि

दीक्षांत समारोह के आरम्भ होने से पूर्व गणमान्य अतिथि गौर समाधि पर पुष्पांजलि देंगे। मेडल एवं उपाधि पाने वाले विद्यार्थी प्रातः 9:30 बजे तक अपनी उपस्थिति देंगे। दीक्षांत समारोह के मुख्य समन्वयक प्रो. नवीन कानगो ने बताया कि सर्वोच्च अंक पाने वाले विद्यार्थियों को मंचस्थ अतिथियों द्वारा मेडल प्रदान किया जाएगा।

मेडल पाने वाले विद्यार्थियों की बैठक व्यवस्था स्वर्ण जयन्ती सभागार में निर्धारित की गई है। यूजी, पीजी और पीएचडी उपाधि पाने वाले छात्र-छात्राएं इंट्री पास पर लिखित बैठक व्यवस्था के अनुसार समय पूर्व निर्धारित स्थान ग्रहण कर लें। उपाधि पाने वाले सभी छात्र-छात्राएं निर्धारित परिधान (छात्र, सफ़ेद कुर्ता-पायजामा एवं छात्राएं सलवार-कुर्ता) एवं विश्वविद्यालय द्वारा प्रदान किए बुन्देली पगड़ी एवं स्टोल में ही सम्मिलित होंगे। कार्यक्रम में उपस्थित यूजी (पुरुष) छात्रों और अभिभावकों हेतु बैठक व्यवस्था अभिमंच सभागार में की गई है।

कार्यक्रम में एनसीसी कैडेट्स करेंगे सहयोग

दीक्षांत समारोह आयोजन में विश्वविद्यालय के एनसीसी कैडेट्स भी सहयोग करेंगे। पूरे कार्यक्रम के दौरान एनसीसी और अनुशासन समिति के सदस्य विभिन्न स्थानों पर अनुशासन एवं सहयोग के लिए अपनी भूमिका का निर्वहन करेंगे।

कुलाधिपति, कुलपति सहित विद्यार्थियों द्वारा पूर्वाभ्यास

दीक्षांत समारोह में शामिल होने वाले विद्यार्थियों, शिक्षकों एवं अधिकारियों ने विश्वविद्यालय के स्वर्ण जयन्ती सभागार में आयोजित पूर्वाभ्यास में भाग लिया और विद्वत शोभायात्रा सहित मेडल प्रदान करने की पूरी प्रक्रिया के संचालन का पूर्वाभ्यास किया। इस अवसर पर विश्वविद्यालय के कुलाधिपति कन्हैया लाल बेरवाल, कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता मौजूद रहे।

56 मेधावी विद्यार्थियों को गोल्ड मेडल, 951 ने प्रत्यक्ष रूप से ली डिग्री

मंगलाचरण के साथ दीक्षांत समारोह का हुआ शुभारंभ स्वर्ण पदक व डिग्री पाकर खिले विद्यार्थियों के चेहरे

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
patrika.com

सागर. डॉ. हरिसिंह गौर केंद्रीय विश्वविद्यालय का 32वां दीक्षांत समारोह बुधवार को मंगलाचरण के साथ शुरू हुआ। समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में सार्क देशों द्वारा स्थापित दक्षिण एशियाई विश्वविद्यालय के अध्यक्ष प्रो. केके अग्रवाल, गौर अतिथि के रूप में शिक्षाविद् पंजाब विश्वविद्यालय चंडीगढ़ व बाबासाहेब भीमराव आंबेडकर विश्वविद्यालय लखनऊ के पूर्व कुलपति पद्मश्री प्रो. आरसी सोबती उपस्थित रहे।

कार्यक्रम की अध्यक्षता विवि के कुलाधिपति कन्हैया लाल बेरवाल ने की। सभी अतिथि आयोजन के पूर्व गौर समाधि पर पहुंचे और डॉ. सर गौर पुष्पांजलि अर्तित की। कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने स्वागत वक्तव्य के साथ विश्वविद्यालय की वार्षिक प्रगति का प्रतिवेदन प्रस्तुत किया। लोकवाद्य व मंगलाचरण के साथ अकादमिक विद्वत शोभायात्रा समारोह स्थल तक पहुंची, जिसकी अगवानी विवि के ध्वज के साथ प्रभारी कुलसचिव डॉ. सत्यप्रकाश उपाध्याय ने की।

विवि के स्वर्ण जयंती सभागार में आयोजित इस 32वें दीक्षांत समारोह में बुंदेली वेश-भूषा में विभिन्न विषयों के 56 मेधावी विद्यार्थियों को स्वर्ण पदक और प्रमाण-पत्र प्रदान किए। वहीं आयोजन में स्नातक, स्नातकोत्तर व पीएचडी पूरी कर चुके 951 विद्यार्थियों ने प्रत्यक्ष रूप से डिग्री प्राप्त की। डिग्री लेने के बाद विद्यार्थियों के चेहरे पर एक अलग ही खुशी देखने को मिली।

सर गौर जैसे बनने का संकल्प लें

मुख्य अतिथि प्रो. केके अग्रवाल ने दीक्षांत भाषण देते हुए कहा शिक्षा का काम ज्ञात समस्या का समाधान करना है, जबकि दीक्षा अज्ञात समस्याओं के समाधान के लिए दी जाती हैं। दीक्षा प्राप्त करने के बाद अब आप जीवन और समाज में कार्य करने के लिए तैयार हो चुके हैं। विद्यार्थी इस विवि के संस्थापक डॉ. सर हरिसिंह गौर के जैसा महान बनने का संकल्प लें।

उन्होंने कहा आज शिक्षा में आउटकम बेस्ड लर्निंग की बात की जा रही है, विद्यार्थी केंद्रित शिक्षा की बात की जा रही है। हम सभी को विश्वविद्यालय में ऐसा वातावरण बनाना है कि हम लगातार डॉ. सर गौर जैसे व्यक्तित्व पैदा कर सकें। यही हमारी सफलता व उत्कृष्टता का मानक होगा।

शिक्षा के साथ संस्कार व पात्रता बेहद जरूरी

कुलाधिपति कन्हैयालाल बेरवाल ने कहा उपाधि मिलना विद्यार्थी के जीवन का सबसे सुखद क्षण होता है। सामान्यतय: सभी शैक्षणिक संस्थाओं में दीक्षांत समारोह का आयोजन किया जाता है, लेकिन महान दानवीर, प्रतिभा के धनी, महान समाज सुधारक, दृढ प्रतिज्ञ डॉ. हरिसिंह गौर द्वारा स्थापित इस विश्वविद्यालय में दीक्षांत का आयोजन कई मायनों में विलक्षण है। डिग्री मिल गई है इसके बाद आपके जीवन की वास्तिविक परीक्षा शुरू होगी। उन्होंने कहा शिक्षा के साथ संस्कार व पात्रता बेहद जरूरी है, तभी व्यक्ति को सफलता मिलती है। गौर अतिथि पद्मश्री प्रो. आरसी सोबती ने कहा प्रकृति सबसे बड़ी शिक्षक है प्रकृति से सीखने की आवश्यकता ही शिक्षण पद्धति का अंग है। कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने कहा विवि राष्ट्रीय व वैश्विक स्तर के शैक्षिणक मानकों पर अपनी प्राचीन विरासत को संजोकर आगे बढ़ रहा है। यहां के विद्यार्थियों का राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय संस्थानों में चयन इस बात का प्रतीक है।

दीक्षा अज्ञात समस्याओं के समाधान के लिए दी जाती है

शिक्षा ● विवि का 32 वां दीक्षांत समारोह, बुंदेली वेश-भूषा में प्राप्त की उपाधियां, मुख्य अतिथि दक्षिण एशियाई विवि के अध्यक्ष प्रो. केके अग्रवाल शामिल

सागर(नवदुनिया प्रतिनिधि)। शिक्षा का काम ज्ञात समस्या का समाधान करना है जबकि दीक्षा अज्ञात समस्याओं के समाधान के लिए दी जाती है। तार्किक दृष्टि ही विद्यार्थी का सर्वश्रेष्ठ गुण होता है। दीक्षा प्राप्त करने के बाद अब आप जीवन और समाज में कार्य करने के लिए तैयार हो चुके हैं। डा. सर हरीसिंह गौर का इस विवि की स्थापना में महती योगदान है। विद्यार्थी उनके जैसा महान बनने का संकल्प लें। यह बात विवि के स्वर्ण जयंती सभागार में आयोजित 32 वें दीक्षांत समारोह के मुख्य अतिथि सार्क देशों द्वारा स्थापित दक्षिण एशियाई विवि के अध्यक्ष प्रो. केके अग्रवाल ने कही।

उन्होंने कहा कि आज शिक्षा के क्षेत्र में बहुअनुशासनिकता की बात की जा रही है। दुनिया के महान विज्ञानी और अनुसंधानकर्ताओं की चित्तवृत्ति बहुअनुशासनिक रही है तभी उनके अनुसंधान परिणाम नवोन्मेषी एवं जनकल्याणकारी रहे हैं। उन्होंने कहा कि जीवन में उद्देश्य का होना बहुत आवश्यक है तभी आप सफल हो सकते हैं। आज शिक्षा में आउटकम बेस्ड लर्निंग की बात की जा रही है। हम सभी को ऐसा वातावरण बनाना है कि हम लगातार डा. गौर जैसे व्यक्तित्व पैदा कर सकें। यही हमारी सफलता एवं उत्कृष्टता का मानक होगा। विद्यार्थियों में प्रश्नाकुलता पैदा करें, उन्हें प्रेरित करें, उनमें आलोचनात्मक दृष्टि विकसित करें। यही नवाचारी शोधकर्ता के गुण हैं।. उन्होंने पदक एवं उपाधि प्राप्त करने वाले सभी विद्यार्थियों को जीवन में सदैव बेहतर कार्य करने की प्रेरणा देते हुए शुभकामनाएं दीं।

समारोह के दौरान विद्यार्थियों को सम्मानित करते हुए अतिथि ।● नवदुनिया

समारोह कार्यक्रम को संबोधित करते हुए अतिथि ।● नवदुनिया

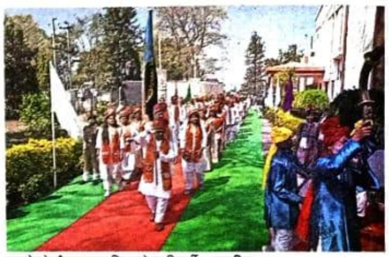
समारोह के दौरान जुलूस निकालते हुए विद्यार्थी ।● नवदुनिया

दीक्षांत समारोह के दौरान डिग्री मिलने के बाद खुशियां मनाते हुए विवि के विद्यार्थी ।● नवदुनिया

समारोह के दौरान डिग्री लेने वाले विद्यार्थी पगड़ी व सफेद कपड़ो मे नजर आए ।● नवदुनिया

जीवन में ज्ञान और कौशल का विवेकसम्मत उपयोग करें विद्यार्थी - कुलाधिपति : विश्वविद्यालय के कुलाधिपति कन्हैयालाल बेरवाल ने अध्याक्षीय उद्बोधन देते हुए कहा कि उपाधि मिलना किसी भी विद्यार्थी के जीवन का सबसे सुखद क्षण होता है। सामान्यतय: सभी शैक्षणिक संस्थाओं में दीक्षांत समारोह का आयोजन किया जाता है, लेकिन महान दानवीर, प्रतिभा के धनी, महान समाज सुधारक, दृढ प्रतिज्ञ डा. हरीसिंह गौर द्वारा स्थापित इस विवि में दीक्षांत का आयोजन कई मायनों में विलक्षण हैं। कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने कहा कि आज विश्वविद्यालय राष्ट्रीय एवं वैश्विक स्तर के शैक्षिणक मानकों पर अपनी प्राचीन विरासत को संजो का आगे बढ़ रहा है साथ ही यहां के विद्यार्थियों का विभिन्न राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय संस्थानों में चयन इस बात का प्रतीक है कि हम अपनी गौरवपूर्ण यात्रा को समय एवं समाज के तारतम्य के साथ-साथ आगे बढ़ा रहे हैं।

ज्ञान एवं संस्कृति के सह-आस्तित्व को शिक्षा में पोषित करने की आवश्यकता - पद्मश्री : गौर अतिथि पद्मश्री प्रो. आरसी सोबती ने भारतीय ज्ञान एवं संस्कृति के सह-आस्तित्व को शिक्षा में पोषित करने की क्षमता पर कहा कि प्रकृति सबसे बड़ी शिक्षक है। प्रकृति से सीखने की आवश्यकता ही शिक्षण पद्धति का महत्त्वपूर्ण अंग है। भारतीय जीवन संस्कृति, पाश्चत्य संस्कृति से बहुत ही वैज्ञानिक एवं तार्किक है व भारतीय शिक्षा पद्धति प्रारंभ से ही एकीकृत रही है। उन्होंने विद्यार्थियों का आह्वान करते हुए कहा की ज्ञान प्राप्त करने के साथ ही साथ संसार एवं समाज की सेवा मानवीय मूल्यों के पथ पर चल कर करने का संकल्प लें।

भव्यता के साथ निकली विद्वत शोभायात्रा : कार्यक्रम में लोकवाद्य एवं मंगलाचरण के साथ अकादमिक विद्वत शोभायात्रा समारोह स्थल तक पहुंची। प्रभारी कुलसचिव डा. सत्यप्रकाश उपाध्याय ने विश्वविद्यालय ध्वज के साथ शोभायात्रा की आगवानी की। कार्यक्रम का संचालन डा. आशुतोष ने किया। दीक्षांत की औपचारिक कारंवाई प्रभारी कुलसचिव डा. सत्यप्रकाश उपाध्याय ने संचालित की और आभार व्यक्त किया। राष्ट्रगान के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ। दीक्षांत समारोह के शुभारंभ अवसर पर अतिथियों ने गौर समाधि पहुंचकर पर डा. गौर को पुष्पांजलि अर्पित की। दीक्षांत समारोह के आयोजन में विवि के एनसीसी कैडेट्स और अनुशासन व्यवस्था समिति के सदस्यों ने सहयोग किया।

56 मेधावी विद्यार्थियों को दिए स्वर्ण पदक एवं प्रमाण पत्र : विश्वविद्यालय के विभिन्न अध्ययनशालाओं के 56 मेधावी विद्यार्थियों को अतिथियों ने स्वर्ण पदक और प्रमाण-पत्र प्रदान किया दीक्षांत समारोह में सीबीसीएस प्रणाली के 11 अध्ययनशालाओं सहित 2 सम्बद्ध महाविद्यालयों के 12 सौ विद्यार्थियों को उपाधि दी गई। इनमें स्नातक के 478, पीजी 376 एवं पीएचडी के 97 छात्रों सहित कुल 951 छात्र उपस्थित होकर उपाधि प्राप्त किया। दीक्षांत समारोह के सम्पूर्ण कार्यक्रम का लाइव प्रसारण विश्वविद्यालय के ईएमआरसी सागर के यूट्यूब चैनल से किया गया। देश के कई हिस्सों से जो विद्यार्थी सहभागिता नहीं कर सके साथ ही उनके अभिभावकों ने लाइव प्रसारण देखा।

दीक्षांत समारोह • स्वर्ण जयंती सभागार में विद्यार्थियों को दी गईं डिग्री, 2187 विद्यार्थियों की डिग्री डिजीलॉकर में जारी की

जीवन में उद्देश्य का होना बहुत आवश्यक है तभी आप सफल हो सकते हैं, विद्यार्थी डॉ. हरीसिंह गौर जैसा महान बनने का संकल्प लें: प्रो. अग्रवाल

भास्कर संवाददाता | सागर

सागर | विवि के 32 वें दीक्षांत समारोह में विद्यार्थियों को डिग्री प्रदान की गई। दूसरे चित्र में कार्यक्रम के दौरान आईने में देखकर पगड़ी को संवारती कुलपति नीलिमा गुप्ता।

शिक्षा का काम ज्ञात समस्या का समाधान करना है। जबकि दीक्षा अज्ञात समस्याओं के समाधान के लिए दी जाती है। दीक्षा प्राप्त करने के बाद अब आप जीवन और समाज में कार्य करने के लिए तैयार हो चुके हैं। विद्यार्थी डॉ. हरीसिंह गौर के जैसा महान बनने का संकल्प लें। यह बात स्वर्ण जयंती सभागार में हुए डॉ. हरीसिंह गौर विवि के 32वें दीक्षांत समारोह के मुख्य अतिथि सार्क देशों द्वारा स्थापित दक्षिण एशियाई विश्वविद्यालय के अध्यक्ष प्रो. केके अग्रवाल ने कही। उन्होंने कहा जीवन में उद्देश्य का होना बहुत आवश्यक है, तभी आप सफल हो सकते हैं। आज शिक्षा में आउटकम बेस्ड लर्निंग की बात की जा रही है। विद्यार्थी केंद्रित शिक्षा की बात की जा रही है। हम सभी को ऐसा वातावरण बनाना है कि हम लगातार डॉ. गौर जैसे व्यक्तित्व पैदा कर सकें। यही हमारी सफलता एवं उत्कृष्टता का मानक होगा। गौर अतिथि पद्मश्री प्रो. आरसी सोबती ने कहा प्रकृति सबसे बड़ी शिक्षक है। प्रकृति से सीखने की आवश्यकता ही शिक्षण पद्धति का महत्वपूर्ण अंग है। भारतीय जीवन संस्कृति, पाश्चात्य संस्कृति से बहुत ही वैज्ञानिक एवं तार्किक है। विद्यार्थी ज्ञान प्राप्त करने के साथ ही संसार एवं समाज की सेवा मानवीय मूल्यों के पथ पर चल कर करने का संकल्प लें। दीक्षांत समारोह के पहले अतिथियों ने गौर समाधि पर पुष्पांजलि अर्पित की। एनसीसी कैडेट्स अनुशासन व्यवस्था समिति के सदस्यों ने बैठक व्यवस्था में सहयोग किया। विवि के ईएमआरसी के चैनल से लाइव प्रसारण भी हुआ। संचालन डॉ. आशुतोष ने किया। आभार प्रभारी कुलसचिव डॉ. सत्यप्रकाश उपाध्याय ने माना।

अब विद्यार्थियों के जीवन में परीक्षाएं आरंभ होंगी, जिनमें सफल होना है : कुलाधिपति

अध्यक्षता कर रहे विवि के कुलाधिपति कन्हैयालाल बेरवाल ने कहा उपाधि मिलना किसी भी विद्यार्थी के जीवन का सबसे सुखद क्षण होता है। डॉ. गौर द्वारा स्थापित इस विवि में दीक्षांत का आयोजन कई मायनों में विलक्षण है। उपाधि लेने के बाद अब विद्यार्थी के जीवन में परीक्षाएं आरंभ होंगी जिनमें उन्हें सफल होना है।

राष्ट्रीय एवं वैश्विक स्तर पर अपनी प्राचीन विरासत को संजोकर आगे बढ़ रहा है विवि : कुलपति

कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने वार्षिक प्रतिवेदन प्रस्तुत कर शिक्षकों, विद्यार्थियों की उपलब्धियों को बताया। उन्होंने इंफ्रास्ट्रक्चर, नए पाठ्यक्रमों और शैक्षणिक समझौतों का उल्लेख कर विवि की प्रगति को साझा किया। उन्होंने कहा विवि राष्ट्रीय एवं वैश्विक स्तर के शैक्षिणक मानकों पर अपनी प्राचीन विरासत को संजोकर आगे बढ़ रहा है। विवि राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के अनुपालन में अपना श्रेष्ठ योगदान दे रहा है। राष्ट्रीय स्तर पर शिक्षा एवं अनुसंधान के लिए प्रधानमंत्री के मार्गदर्शन में चलाए जा रहे विभिन्न नवोन्मेषी एवं गुणवत्तापूर्ण योजनाओं को विश्वविद्यालय क्रियान्वित कर रहा है। जिसके तहत एकेडमिक बैंक ऑफ क्रेडिट की स्थापना, डिग्रियों का डिजीलॉकर में अपलोड, भारतीय ज्ञान परंपरा, भारतीय संस्कृति एवं मूल्यों से संबंधित पाठ्यक्रमों का संचालन, संगीत, ललित कला और प्रदर्शनकारी कला में राष्ट्रीय स्तर पर उल्लेखनीय प्रदर्शन, स्वच्छ भारत अभियान के तहत विभिन्न जनजागरूकता कार्यक्रम, कौशल विकास और रोजगारपरक पाठ्यक्रमों के संचालन जैसे महत्त्वपूर्ण कार्य कर रहा है।

2023 के विद्यार्थियों की ग्रेड शीट व ट्रांसक्रिप्ट भी जल्द होगी ऑनलाइन

विश्वविद्यालय ने दीक्षांत समारोह के मौके पर वर्ष-2023 में डिग्री पूरी करने वाले यूजी के 1391, पीजी के 674 एवं पीएचडी के 122 विद्यार्थियों सहित 2187 विद्यार्थियों के डिग्री सर्टिफिकेट डिजिलॉकर पर जारी कर दिए। विद्यार्थी इसे निकाल सकते हैं। परीक्षा नियंत्रक डॉ. सुरेंद्र पी गादेवार ने बताया वर्ष-2023 में पाठ्यक्रम पूर्ण करने वाले विद्यार्थियों के ग्रेड शीट एवं ट्रांसक्रिप्ट भी जल्दी ही डिजिलॉकर पर उपलब्ध हो जाएंगे। कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने कहा विवि ने रिकॉर्ड समय में विद्यार्थियों की डिग्री डिजिलॉकर पर उपलब्ध कराई हैं। एक तरफ वे दीक्षांत में डिग्री फाइल प्राप्त कर रहे हैं, दूसरी तरफ उनकी डिजिटल डिग्री भी आज से ही उपलब्ध है। यह विवि की बड़ी उपलब्धि है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के डिजिटल इंडिया अभियान में विवि ने एक कीर्तिमान स्थापित करते हुए यह कार्य संभव किया है। भारत सरकार ने डिजिटल डिग्री की मान्यता मूल डिग्री के बराबर कर दी है। लिहाजा हमारे विद्यार्थी डिजीलॉकर पर उपलब्ध डिजिटल अकादमिक सर्टिफिकेट का उपयोग कर देश को डिजिटल रूप से सशक्त समाज और अर्थव्यवस्था बदलने में सहभागी बनें।

डिजिलॉकर पर 2187 विद्यार्थियों की डिग्री जारी

जागरण, सागर। डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय ने 32वें दीक्षांत समारोह के अवसर पर वर्ष 2023 में पाठ्यक्रम पूर्ण करने वाले यूजी के 1391, पीजी के 674 एवं पीएचडी के 122 विद्यार्थियों सहित कुल 2187 डिग्री सर्टिफिकेट डिजिलॉकर पर जारी कर दी है। संबंधित विद्यार्थी अब अपनी डिजिटल डिग्री डिजिलॉकर से भी निकाल सकते हैं. परीक्षा नियंत्रक डॉ.एसपी गादेवार ने बताया कि विद्यार्थियों के ग्रेड शीट एवं ट्रांसक्रिप्ट भी उपलब्ध कराने का कार्य भी प्रगति पर है जो जल्द ही विद्यार्थियों को डिजिलॉकर पर उपलब्ध हो जाएगा।

प्रो दिवाकर शोध उपाधि समिति में हुए मनोनीत

सागर. डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय के समाजशास्त्र एवं समाजकार्य विभाग के अध्यक्ष तथा मानविकी एवं समाज विज्ञान संकाय के अधिष्ठाता प्रो दिवाकर सिंह राजपूत को छत्तीसगढ़ के अंबिकापुर में स्थित संत गहिरा गुरु विश्वविद्यालय, सरगुजा में शोध उपाधि समिति का सदस्य मनोनीत किया गया है. उल्लेखनीय है कि प्रो. राजपूत मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़, राजस्थान, गुजरात, उत्तरप्रदेश, उत्तराखंड और महाराष्ट्र आदि प्रदेशों के विभिन्न विश्वविद्यालयों में अनेक समितियों के सदस्य हैं.

विश्वविद्यालय के 7 विद्यार्थी बने सहायक भूजलविद, अंकित को देश में दूसरी रैंक

सागर | यूपीएससी द्वारा घोषित असिस्टेंट हाइड्रोजियालॉजिस्ट भर्ती का रिजल्ट जारी कर दिया है। कुल 70 पदों के लिए हुई भर्ती में 7 विद्यार्थी डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय के एप्लाइड जियोलॉजी विभाग से चुने गए। अंकित जैन को ऑल इंडिया लेवल पर दूसरी रैंक हासिल हुई है। जबकि शिवानी सोनी को 11वीं, शुभांशु तिवारी को 21वीं, शालिनी तिवारी को 22वीं, शिप्रा सुरभि को 27वीं, मोनिका बोमार्दे को 36वीं एवं संदीप कुमार बर्मन को 42वीं रैंक मिली है। शालिनी और शिवानी ने सागर विवि से बीएससी की है। विभाग से हर साल भूगर्भशास्त्री और भूजल विज्ञानी निकलते रहे हैं। लिखित परीक्षा का रिजल्ट आने के बाद विभाग के शिक्षकों ने इंटरव्यू के लिए खास तौर पर मेहनत की। विद्यार्थियों को जरूरी टिप्स दिए। विभाग के प्रो. एच थॉमस, प्रो. पीके कठल, प्रो. आरके त्रिवेदी, प्रो. एसएच आदिल, प्रो. आरके रावत आदि शिक्षकों ने विद्यार्थियों को विशेष मार्गदर्शन दिया।

सनातन ज्ञान की पुनर्व्याख्या कर आत्मसात करें

अर्थशास्त्र विभाग में वर्तमान परिपेक्ष्य में सनातन आर्थिक चिंतन की प्रासंगिकता पर संगोष्ठी

नवभारत न्यूज

सागर 14 मार्च. डॉ. हरीसिंह गौर विवि के अर्थशास्त्र विभाग एवं वसुधा आर्थिक अनुसंधान संस्थान के तत्वावधान में अंतर्राष्ट्रीय बहुअनुशासनिक संगोष्ठी वर्तमान परिप्रेक्ष्य में सनातन आर्थिक चिंतन की प्रासंगिकता विषय पर हुई.

आर्थिक व्यवहार के तीन तरीके बताए गए

अध्यक्षता करते हुए कुलगुरु प्रो. नीलिमा गुप्ता ने कहा कि भारतीय ज्ञान परम्परा अति समृद्ध है और इसमें हर विषय पर चिंतन और दर्शन पहले से विद्यमान है. आज जरूरत है कि हम प्राचीन और सनातन ज्ञान की पुनार्वाख्या कर उसे वर्तमान के परिप्रेक्ष्य में आत्मसात करें और उनको अपने जीवन में लागू करें. संयोजिका डॉ. वीणा ने बताया कि सनातन अर्थशास्त्र का अध्ययन करना क्यों आवश्यक है क्योंकि यह सबसे पुरानी संस्कृति की निरंतरता है जो शुद्ध और लालच रहित थी. प्रो. दिवाकर सिंह राजपूत ने सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक अध्ययन के शोध की दिशाओं पर प्रकाश डाला. प्रो. केसी जैन ने कहा कि आर्थिक व्यवहार करने के तरीके हैं- पूंजीवादी तथा समाजवादी है लेकिन आज के लिए सबसे अच्छा सनातन तरीका है जिसका दृष्टिकोण संतुलित है. प्रो. नरेंद्र कोष्ठी ने भारत की जीवंत युवा जनसांख्यिकी के बारे में बात की. प्रो. प्रतिभा गायकवाड़ ने अध्ययन आवश्यकता पर केंद्रित किया. अंतर्राष्ट्रीय सेमिनार में दो तकनीकी सत्र भी हुए जिनमें कई शिक्षकों और शोध विद्वानों के शोध पत्र प्रस्तुतियाँ शामिल थीं.

भारत आर्थिक महाशक्ति बनने की ओर अग्रसर है: कुलपति

विश्वविद्यालय के अर्थशास्त्र विभाग एवं वसुधा आर्थिक अनुसंधान संस्थान के सहयोग से दो दिवसीय सेमीनार का आयोजन

आचरण संवाददाता

सागर। डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर में अर्थशास्त्र विभाग एवं वसुधा आर्थिक अनुसंधान संस्थान के तत्वावधान में दो दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय बहुअनुशासनिक संगोष्ठी का आयोजन किया जा रहा है जिसका विषय वर्तमान परिप्रेक्ष्य में सनातन आर्थिक चिंतन की प्रासंगिकता है। अभिमंच सभागार में उद्घाटन सत्र सभी अतिथियों द्वारा देवी सरस्वती एवं डॉ. गौर के चित्र पर माल्यार्पण एवं दीप प्रज्जवलन के साथ प्रारम्भ हुआ। संगोष्ठी में मुख्य अतिथि मुंबई से प्रो. प्रतिभा एस गायकवाड, विशिष्ट अतिथि मध्यप्रदेश लोकसेवा आयोग के सदस्य प्रो. नरेंद्र कोष्टी, विश्वविद्यालय के सेवानिवृत्त शिक्षक प्रो. के सी जैन थे. कार्यक्रम की अध्यक्षता कुलगुरु प्रो. नीलिमा गुप्ता द्वारा ने की. इस अवसर पर डीन प्रो. दिवाकर सिंह राजपूत, विभागाध्यक्ष प्रो. प्रकाश शंकर काम्बले, संगोष्ठी समन्वयक डॉ. वीणा थावरे मंच पर उपस्थित थे।

अध्यक्षता करते हुए विश्वविद्यालय की कुलगुरु प्रो. नीलिमा गुप्ता ने अपने उद्बोधन में कहा कि भारतीय ज्ञान परम्परा अति समृद्ध है और इसमें हर विषय पर चिंतन और दर्शन पहले से विद्यमान है. आज जरूरत है कि हम प्राचीन और सनातन ज्ञान की पुनर्व्याख्या कर उसे वर्तमान के परिप्रेक्ष्य में आत्मसात करें और उनको अपने जीवन में लागू करें. उन्होंने खा कि अर्थशास्त्र एक ऐसा विषय है जिसका हर व्यक्ति से सम्बन्ध है चाहे उसने एक विषय के रूप अध्ययन किया हो अथवा न किया हो. उन्होंने विद्यार्थियों एवं शिक्षकों को बौद्धिक चर्चा के लिए प्रेरित करते हुए कहा कि हमें इस महत्वपूर्ण विषय पर चर्चा करनी चाहिए. आज भारत की जीडीपी मजबूत है. प्रधानमंत्री के के नेतृत्व में इसकी और मजबूती के लिए प्रयास किये जा रहे हैं। अब वह समय नहीं रहा कि दुनिया के देश हमें पिछड़ा कहें. उन्होंने कहा कि भारत आर्थिक महाशक्ति बनने के रास्ते पर है. भारत आत्मनिर्भरता की तरफ आगे बढ़ रहा है। प्रो राजपूत ने कहा कि सनातन जीवन शैली जिसमें संयुक्त परिवार संस्कृति, आत्मानिर्भर ग्राम, गांवों के समूह सब शामिल थे जो आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण रहे हैं। उन्होंने सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक अध्ययन के शोध की दिशाओं पर प्रकाश डाला।

प्रो. के.सी. जैन ने कहा कि आज तक सनातन अर्थव्यवस्था जैसे विषयों पर चर्चा नहीं हुई. इस विषय पर चर्चा इसलिए जरूरी है क्योंकि आधुनिक अर्थव्यवस्था मानवीय गुणों को छोड़कर क्रूर और प्रतिस्पर्धी हो गयी है। उन्होंने यह भी बताया कि आर्थिक व्यवहार करने के तरीके हैं- पूंजीवादी तथा समाजवादी है लेकिन आज के लिए सबसे अच्छा सनातन तरीका है जिसका दृष्टिकोण संतुलित है।

प्रोफेसर प्रतिभा गायकवाड़ ने अपना भाषण क्षेत्र में बहुमुखी अध्ययन आवश्यकता पर केंद्रित किया। उन्होंने कहा कि पढ़ाई क्यों जरूरी है, हमें कैसे सीखना चाहिए और सीखने के बाद क्या करना चाहिए। हमें अपने अध्ययन में ज्ञान पर ध्यान देना चाहिए। उन्होंने आज की विरोधाभासी स्थितियों में सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण पर भी ध्यान केंद्रित किया और इसके लिए समग्र दृष्टिकोण कितना आवश्यक है। उन्होंने यह भी बताया कि कैसे वैज्ञानिक और तकनीकी प्रगति हुई।

अंतर्राष्ट्रीय सेमिनार में दो तकनीकी सत्र भी हुए जिनमें कई शिक्षकों और शोध विद्वानों के शोध पत्र प्रस्तुतियाँ शामिल थीं। कार्यक्रम में विश्वविद्यालयों के प्रोफेसरों, शिक्षकों के साथ-साथ शोध विद्वानों ने भी भाग लिया। कार्यक्रम 15 को भी जारी रहेगा । कार्यक्रम का संचालन डॉ आशुतोष मिश्र ने किया एवं प्रो. उत्सव आंनद ने आभार ज्ञापन दिया।

अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी | **सनातन आर्थिक चिंतन की प्रासंगिकता पर हुआ सेमीनार**

भारतीय ज्ञान परम्परा अति समृद्ध है, जिसमें हर विषय का चिंतन व दर्शन : कुलपति

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
patrika.com

सागर. डॉ. हरिसिंह गौर केंद्रीय विश्वविद्यालय अर्थशास्त्र विभाग व वसुधा आर्थिक अनुसंधान संस्थान के तत्वावधान में दो दिवसीय अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया जा रहा है। जिसका विषय वर्तमान परिप्रेक्ष्य में सनातन आर्थिक चिंतन की प्रासंगिकता है। मुख्य अतिथि मुंबई से प्रो. प्रतिभा एस गायकवाड़, विशिष्ट अतिथि मध्यप्रदेश लोकसेवा आयोग के सदस्य प्रो. नरेंद्र कोष्टी व विवि के सेवानिवृत्त शिक्षक प्रो. केसी जैन थे। अध्यक्षता कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने की।

कुलपति ने कहा भारतीय ज्ञान परम्परा अति समृद्ध है और इसमें हर विषय पर चिंतन व दर्शन पहले से विद्यमान है। आज जरूरत है कि हम प्राचीन और सनातन ज्ञान की फिर से व्याख्या कर उसे वर्तमान के परिप्रेक्ष्य में आत्मसात करें, उनको अपने जीवन में लागू करें। उन्होंने कहा अर्थशास्त्र एक ऐसा विषय है जिसका हर व्यक्ति से सम्बन्ध है। चाहे उसने एक विषय के रूप अध्ययन किया हो या न किया हो। प्रो. राजपूत ने कहा सनातन जीवन शैली जिसमें संयुक्त परिवार संस्कृति, आत्मनिर्भर ग्राम, गांवों के समूह सब शामिल थे जो आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण रहे हैं। प्रो. केसी जैन ने कहा आज तक सनातन अर्थव्यवस्था जैसे विषयों पर चर्चा नहीं हुई। इस विषय पर चर्चा इसलिए जरूरी है क्योंकि आधुनिक अर्थव्यवस्था मानवीय गुणों को छोड़कर क्रूर और प्रतिस्पर्धी हो गई है। प्रो. कोष्ठी ने भारत की जीवंत युवा जनसांख्यिकी के बारे में बात की। प्रोफेसर प्रतिभा गायकवाड़ ने कहा हमें अपने अध्ययन में ज्ञान पर ध्यान देना चाहिए। आज की विरोधाभासी स्थितियों में सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण पर भी ध्यान केंद्रित किया और इसके लिए समग्र दृष्टिकोण कितना आवश्यक है। सेमिनार में दो तकनीकी सत्र भी हुए जिनमें कई शिक्षकों और शोध विद्वानों के शोध पत्र प्रस्तुतियां शामिल थीं। कार्यक्रम में विश्वविद्यालयों के प्रोफेसर, शिक्षक के साथ शोध विद्वानों ने भी भाग लिया।

क्यूआर कोड स्कैन कर पढ़ें विस्तृत खबर...

विधि विभाग के छात्रों ने सिंबायोसिस लॉ स्कूल नागपुर में विश्वविद्यालय का लहराया परचम

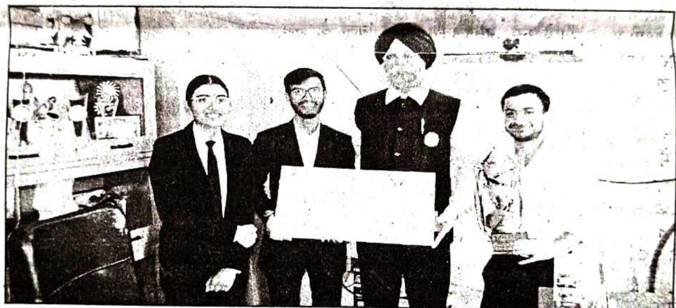

आचरण संवाददाता

सागर। कानूनी बुद्धिमत्ता के एक रोचक प्रदर्शन में, सिंबायोसिस लॉ स्कूल, नागपुर, और राष्ट्रीय मानव अधिकार आयोग के सहयोग से आयोजित मूट कोर्ट प्रतियोगिता ने भारत भर से आए 67 टीमों के बीच कठिन प्रतिस्पर्धा को देखा। इसमें से 20 टीमें मेमोरियल के मूल्यांकन के आधार पर चयन हुई, जो एक तंत्रिक कानूनी युद्ध के लिए मंच सजाने के लिए मेजबानी करने वाली थीं। प्रतियोगिता में सर्वश्रेष्ठ मेमोरियल वादी, एक प्रतिष्ठात्मक सम्मान जिसके साथ एक ट्रॉफी और 10,000 की राशि पुरस्कार की प्रतिष्ठा डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय के विधि विभाग के प्रतिभाशाली छात्रों द्वारा प्राप्त की गई। विजयी टीम में शामिल छात्र कुलदीप केशरवानी (स्पीकर 1), विवेक सोनी (स्पीकर 2), और खुशी चौरसिया (रिसर्चर) थे, जो सभी डॉ. हरिसिंह गौर विश्वविद्यालय, विधि विभाग के छात्र हैं। उनके असाधारण कानूनी कौशल और एक प्रेरित मेमोरियल तैयार करने में उन्हें प्रतिस्पर्धा ने अलग बना दिया।उन्हें न्यायाधीशों और सहप्रतियोगियों की प्रशंसा प्राप्त हुई। विधि विभाग के प्रमुख प्रोफेसर मनविंदर सिंह पहावा ने विजयी टीम को प्रोत्साहित और अभिवादन किया और उनका नए और अन्य छात्रों के लिए रोल मॉडल मानकर स्वागत किया साथ ही उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की।

विजयी हुए प्रतिभागियों ने विभाग अध्यक्ष तथा अन्य शिक्षकों समेत उनके साथी सहपाठी नंदिनी तिवारी, अशोक यादव, वैष्णव शर्मा, वर्णित पंडाग्रे का इस सफलता में सहयोग करने के लिए बहुत बहुत आभार प्रकट किया। छात्रों और शिक्षकों के सहयोग से शिक्षा समुदाय की शक्ति का प्रदर्शन हुआ, जो कानूनी क्षेत्र में उत्कृष्टता को बढ़ावा देता है।

अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन में प्रोफेसर मिश्रा को लाइफटाइम अचीवमेंट अवॉर्ड

सागर | सतना के एकेएस विश्वविद्यालय में एडवांसेज इन साइंस एंड टेक्नोलॉजी फॉर सस्टेनेबल डेवलपमेंट गोल्स विषय पर अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन का हुआ।

इसमें देश सहित अफ्रीकी और एशियाई देशों के विषय विशेषज्ञों नें सहभागिता की। सम्मेलन में डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय के रसायन विज्ञान विभाग के विभागाध्यक्ष और डीन प्रोफेसर एपी मिश्रा को लाइफ टाइम अचीवमेंट अवार्ड से सम्मानित किया गया। प्रोफेसर मिश्रा ने सम्मेलन में मेंटालोड्रग : प्रैक्टिस एंड प्रोस्पेक्ट्स विषय पर अपने अनुसंधान पर प्रकाश डाला। वर्तमान और पूर्व में किए गए शोध पर प्रकाश डाला। उन्होंने अपने अनुसंधान के विषय में चर्चा और इसकी उपयोगिता के बारे में अपने अनुभव साझा किए। रसायन विभाग के शोध छात्र शिवांशु ब्रह्मचारी ने इमाइन आधारित धातु यौगिकों के सिंथेसिस कैरक्टराइजेशन और जैविक गतिविधि विषय पर मौखिक प्रेजेंटेशन दिया। उन्हें इस प्रेजेंटेशन के लिए प्रथम पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

अमरावती विवि की शोध मान्यता समिति में प्रो.राजपूत सदस्य मनोनीत

जागरण, सागर। अमरावती विश्वविद्यालय महाराष्ट्र ने प्रो.दिवाकर सिंह राजपूत को विश्वविद्यालय की शोध मान्यता समिति में सदस्य मनोनीत किया है। डॉ.हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर के समाजशास्त्र एवं समाजकार्य विभाग के अध्यक्ष तथा मानविकी एवं समाज विज्ञान संकाय के अधिष्ठाता प्रो.राजपूत महाराष्ट्र, मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़, राजस्थान, गुजरात, उत्तरप्रदेश, उत्तराखंड आदि प्रदेशों के विभिन्न विश्वविद्यालयों में अनेक समितियों के सदस्य एवं विषय विशेषज्ञ के रूप में मनोनीत किए गए हैं। साथ ही देश एवं प्रदेश की विभिन्न प्रशिक्षण संस्थानों से भी जुड़े हुए हैं। वे एक साथ समाज शास्त्र, समाज कार्य, अपराध शास्त्र, जीवन पर्यंत शिक्षा और पुलिस प्रशासन आदि विषयों की विभिन्न समितियों में विषय विशेषज्ञ के रूप में जुड़े हैं जो कि समाज विज्ञान के क्षेत्र में एक रिकार्ड है।

वि वि के दो शोधार्थियों को फैलोशिप

जागरण, सागर। भारतीय दार्शनिक अनुसन्धान परिषद् नई दिल्ली द्वारा विवि के दर्शनशास्त्र विभाग के दो शोधार्थियों को पोस्ट डॉक्टोरल फैलोशिप एवं जूनियर रिसर्च फैलोशिप प्रदान की गई। दर्शनशास्त्र विभाग के शोधार्थी डॉ.दिनेश कुमार को भारतीय दार्शनिक अनुसन्धान परिषद् नई दिल्ली द्वारा 'चेतना के महायानी व्यवदानी उपक्रम के आलोक में साभ्यतिक अंतर्विरोधों का समीक्षात्मक अध्ययन' विषय पर पोस्ट डॉक्टोरल फैलोशिप प्रदान की गई है। साथ ही विभाग के शोधार्थी शिव कुमार यादव को भी 'पातंजल योगदर्शन में कर्म की अवधारणाः एक समीक्षात्मक अध्ययन' विषय पर जूनियर रिसर्च फैलोशिप प्रदान की गई है। डॉ. दिनेश एवं शिव कुमार विभागाध्यक्ष, प्रो.अम्बिकादत्त शर्मा के निर्देशन में शोध-कार्य कर रहे हैं।

पूजा को योग विज्ञान में स्वर्ण पदक मिला

सागर| डॉ हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय के 32 वें दीक्षांत समारोह में पूजा विजय जैन ने योग विषय में स्वर्ण पदक प्राप्त किया है। पूजा दो बार राष्ट्रीय स्तर पर योग प्रदर्शन कर चुकी है। इस उपलब्धि पर उसके माता पिता एवं गुरुजनों ने हर्ष व्यक्त किया।

आज का युग भौतिक प्रगति के साथ स्थिर विकास को बढ़ावा देने का, भारत इसकी अगुआई कर रहाः कुलपति

भास्कर संवाददाता | सागर

डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय के अभिमंच सभागार में सतत विकास के भविष्य निर्माण : विकास और उन्नति की व्यूह रचना विषय पर दो दिवसीय संगोष्ठी हुई। उद्घाटन सत्र में विवि की कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने कहा आज का युग भौतिक प्रगति के साथ-साथ स्थिर विकास को बढ़ावा देने का है। भारत इसकी अगुआई कर रहा है। यद्यपि भारत ने 2047 में विश्व की तीसरी बड़ी अर्थ व्यवस्था का लक्ष्य बनाया है, परंतु जिस गति से भारत आगे बढ़ रहा है उससे यह लक्ष्य 2030 तक हासिल होने की उम्मीद है। कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि प्रो. उमेश होलानी ने कहा हमारा वैदिक साहित्य सदियों से सतत विकास को ही पोषित और पल्लवित करने वाला है। इसे हम विगत वर्षों में भूल गए थे जो अब पुनः स्थापित करने की आवश्यकता है। दिल्ली विश्वविद्यालय के प्रो. प्रभात मित्तल ने सतत विकास की अवधारणा को परिभाषित करते हुए उसे तकनीकी से जोड़कर नए सिरे से आर्थिक विकास के लक्ष्य निर्धारित करने की आवश्यकता पर बल दिया। ऑनलाइन जुड़ीं महाराजा छत्रसाल विश्वविद्यालय, छतरपुर की कुलपति प्रो. शोभा तिवारी कहा विगत कुछ वर्षों से हमारी अर्थव्यवस्था लालच आधारित हो गई है। यह सतत विकास की राह में सबसे बड़ी बाधा है। इसे जरुरत आधारित बनाने पर सतत विकास के लक्ष्य सँहज ही पाए जा सकते हैं। संगोष्ठी की संयोजक डॉ. पुष्पा सूर्यवंशी ने संगोष्ठी की रुपरेखा प्रस्तुत की। इस दौरान दो पुस्तकों का ई-विमोचन भी अतिथियों ने किया। कार्यक्रम में प्रो. चंदाबेन, प्रोफेसर श्री भागवत, प्रोफेसर जीएल पुणतांबेकर , प्रोफेसर डीके नेमा आदि मौजूद थे।

दो दिनी संगोष्ठी | भारत तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था का लक्ष्य 2030 तक हासिल होने की उम्मीद

वैदिक साहित्य में छुपे हैं सतत विकास के सूत्र: प्रो होलानी

सागर(नवदुनिया प्रतिनिधि)। डा. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर के अभिमंच सभागार में आयोजित दो दिवसीय सतत विकास के भविष्य निर्माण विकास और उन्नति की व्यूह रचना विषय पर दो दिवसीय संगोष्ठी का उद्घाटन सत्र और तकनीकी सत्र आयोजित हुआ।

उद्घाटन सत्र में विवि की कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने कहा कि आज का युग भौतिक प्रगति के साथ-साथ स्थिर विकास को बढ़ावा देने का है और भारत इसकी अगुवाई कर रहा है। यद्यपि भारत ने 2047 में विश्व की तीसरी बड़ी अर्थ व्यवस्था का लक्ष्य बनाया है, लेकिन जिस गति से भारत आगे बढ़ रहा है उससे यह लक्ष्य 2030 तक हासिल होने की उम्मीद है। कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि ग्वालियर से पधारे प्रो. उमेश होलानी ने पश्चिमी और भारतीय विकास अवधारणा की तुलना करते हुए बताया कि हमारा वैदिक साहित्य सदियों से सतत विकास को ही पोषित और पल्लवित करने वाला है और इसे हम विगत वर्षों में भूल गए थे जो अब पुनः स्थापित करने की आवश्यकता है। दिल्ली विश्वविद्यालय के प्रो. प्रभात मित्तल ने सतत विकास की अवधारणा को परिभाषित करते हुए उसे तकनीकी से जोड़कर नए सिरे से आर्थिक विकास के लक्ष्य निर्धारित करने की आवश्यकता पर बल दिया।

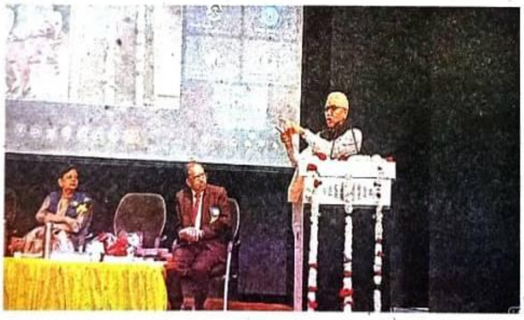

विवि में आयोजित कार्यक्रम को संबोधित करते हुए अतिथि। ● नवदुनिया

हमारी अर्थ व्यवस्था लालच आधारित हो गई है

उद्घाटन सत्र में महाराजा छत्रसाल विश्वविद्यालय छतरपुर की कुलपति प्रो शोभा तिवारी ने आनलाइन जुड़कर कहा कि विगत कुछ वर्षों से हमारी अर्थ व्यवस्था लालच आधारित हो गई है और यह सतत विकास की राह में सबसे बड़ी बांधा है।

इसे नीड बेस (जरुरत आधारित) बनाने पर सतत विकास के लक्ष्य सहज ही पाए जा सकते है। संगोष्ठी की संयोजक डा. पुष्पा सूर्यवंशी ने कहा कि संगोष्ठी में 162 लोगों ने पंजीयन करवाया एवं कुल 87 पेपर प्राप्त हुए जिसके आधार पर दो पुस्तकों का ई-विमोचन अतिथियों द्वारा किया गया। कार्यक्रम में प्रोफेसर चंदाबेन, प्रो. भागवत, प्रो. जीएल पुणतांबेकर, प्रो. डीके नेमा, प्रो. गौरांग रामी, डा. आरबी अनुरागी, डा. परविंदर, डा. किरण आर्या, वीरेंद्र मत्सेनिया, केशव टेकराम, विजय जरीवाला, डा. मनीष, डा. भावेश, डा. राशि, डा. अवंती, डा. अनूप, डा. प्रदीप श्रीवास्तव आदि विश्वविद्यालय एवं अन्य विवि से शिक्षक, शोधार्थी एवं विद्यार्थी उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संचालन डा. शालिनी चौथरानी ने किया एवं धन्यवाद डा. बबीता यादव ने किया।

संवाद कार्यक्रम: प्रकृति और संस्कृति से समृद्धि की राह प्रशस्त करें: प्रो. राजपूत

सागर(नवदुनिया प्रतिनिधि)। डाक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय के समाज शास्त्र विभाग, उन्नत भारत अभियान और मानविकी एवं समाज विज्ञान संकाय के संयुक्त तत्वावधान में शनिवार को "संवाद" कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए अधिष्ठाता एवं नोडल अधिकारी प्रोफेसर दिवाकर सिंह राजपूत ने कहा कि सफलता के रचनात्मक स्वरूप को पाने के लिए प्रकृति की न्याय व्यवस्था और संस्कृति के कल्याण कारी मूल्यों का अनुपालन करना चाहिए। प्रकृति और संस्कृति से व्यक्तित्त्व को निखार मिलता है। उन्होंने शोधार्थियों और छात्र-छात्राओं से सीधा संवाद करते हुए उनको श्रेष्ठता के शिखर पर पहुंचने के लिए शुभकामनाएं देते हुए कहा कि छात्र जीवन जिंदगी का स्वर्णिम काल होता है जो खुद अपनी राह बनाता है खुद का आसमान गढ़ता है और खुद ही अपना इतिहास रच सकता है। इसलिए हमको अपने समय और सामर्थ्य को पहचान कर सदुपयोग करना चाहिए।

प्रतिभागियों को बांटे प्रमाण पत्र: कार्यक्रम में प्रतिभागियों ने अपनी जिज्ञासाएं, समस्याएं एवं सुझाव रखे। कार्यक्रम के अंतिम चरण में प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र वितरित किए गए। संवाद एवं प्रमाण पत्र वितरण कार्यक्रम में समाजशास्त्र समाज कार्य, राजनीतिशास्त्र, इतिहास, मनोविज्ञान, दर्शनशास्त्र, प्राचीन भारतीय इतिहास विभाग के शोधार्थियों विद्यार्थियों ने सहभागिता की और पौधारोपण किया।

प्रो. राजपूत रायपुर विवि की शोध उपाधि समिति में सदस्य मनोनीत

सागर, देशबन्धु। डॉ. हरीसिंह गौर विवि के समाज शास्त्र एवं समाजकार्य विभाग के अध्यक्ष प्रो. दिवाकर सिंह राजपूत को पं. रविशंकर शुक्ल विवि रायपुर छत्तीसगढ़ में शोध उपाधि समिति का सदस्य मनोनीत किया गया है। प्रो. राजपूत छत्तीसगढ़ के सरगुजा विवि अंबिकापुर कुशाभाउ ठाकरे पत्रकारिता विवि रायपुर, शहीद नंदकुमार विवि रायगढ़ आदि विवि की विभिन्न अकादमिक समितियों के भी सदस्य हैं। छत्तीसगढ़ के साथ ही महाराष्ट्र, मप्र, राजस्थान, गुजरात, उप्र, उत्तराखंड आदि प्रदेशों के विभिन्न विवि में अनेक समितियों के सदस्य एवं विषय विशेषज्ञ के रूप में मनोनीत किये गये हैं, साथ ही देश एवं प्रदेश की विभिन्न प्रशिक्षण संस्थानों से भी जुड़े हुए हैं। प्रो. राजपूत को सामाजिक शोध में विशेषज्ञता के कारण विभिन्न क्षेत्रों में अकादमिक सहयोग हेतु निरंतर आमंत्रित किया जाता है।

आयोजन | विश्व गौरैया दिवस के अवसर पर हुआ कार्यक्रम, विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने कहा

'गौरैया की सुरक्षा एवं संरक्षण में विवि की पहल मिसाल है'

सागर (नवदुनिया प्रतिनिधि)। प्रकृति संरक्षण की दिशा में डाक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय के सांस्कृतिक परिषद् के तत्वावधान में महर्षि पतंजलि भवन परिसर में बनी गौर गौरैया आवासीय कालोनी में बुधवार को विश्व गौरैया दिवस कार्यक्रम आयोजन किया गया।

हमारे संस्कारों में हैं पक्षियों को दाना-पानी देना

इस अवसर पर विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने कहा कि पक्षियों का वास हमेशा मनुष्य के समीप ही रहा है। भारतीय परंपरा में पक्षियों को दाना-पानी देने की परंपरा काफी समय पहले से रही है। मनुष्य अपनी जरूरतों के मुताबिक्र जंगलों को काटकर अपने रिहायशी इलाकों का विस्तार करता गया और पक्षियों का आशियाना नष्ट होता गया। दुनिया भर में पक्षियों की कई प्रजातियां खतरे में हैं। गौरैया की संख्या में दुनिया भर में 60 से 70 प्रतिशत तक कमी आ चुकी है, लेकिन गौरैया की सुरक्षा एवं संरक्षण में विवि की पहल देश के लिए मिशाल है।

विवि में विश्व गौरैया दिवस पर कार्यक्रम का आयोजन किया गया। ● नवदुनिया

गौरैया संरक्षण की दिशा में आगे भी होंगे प्रयास

गौरैया के संरक्षण और पुनर्वास के लिए कदम उठाने चाहिए। बढ़ते प्रदूषण के कारण भी उन पर जीवन संकट है। उन्होंने कहा कि गौरैया पक्षी खुशी का प्रतीक है। इनके संरक्षण की दिशा में हमें इसी तरह के अभिनव पहल करने की जरूरत है। उन्होंने कहा कि चिड़ियों की चहचहाहट से दिन की शुरुआत होने से पूरा दिन मंगलमय बीतता है। विवि इस कार्नर को और विकसित करने के साथ ही परिसर में अन्य कई स्थलों को चिन्हित कर गौरैया संरक्षण की दिशा में प्रयास को आगे बढ़ाया जाएगा। उन्होंने बताया कि राष्ट्रीय सेवा योजना के बजट में गौरैया के दाना-पानी और पुनर्वास के लिए बजट स्वीकृत कर दिया गया है। इस दौरान यहां मौजूद लोगों ने गौरैया को दाना भी डाले। कार्यक्रम का संचालन डा. राकेश सोनी द्वारा किया गया। इस अवसर पर योग विभाग के शिक्षक डा. अरुण साव, डा. विवेक जायसवाल, सुरक्षा अधिकारी डा. हिमांशु, योग एवं संगीत विभाग के शिक्षक, शोधार्थी, विद्यार्थी एवं कर्मचारी उपस्थित थे।

विवि में मनाया गया विश्व गौरैया दिवस

गौरैया की संख्या में 70% तक की कमी, पुनर्वास के कदम उठाने चाहिए: कुलपति

भास्कर संवाददाता | सागर

डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय की सांस्कृतिक परिषद के तत्वावधान में प्रकृति संरक्षण की दिशा में अभिनव प्रकल्प के तहत महर्षि पतंजलि भवन परिसर स्थित गौर गौरैया आवासीय कॉलोनी में विश्व गौरैया दिवस मनाया गया।

कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने कहा कि पक्षियों का वास हमेशा मनुष्य के समीप ही रहा है। भारतीय परंपरा में पक्षियों को दाना-पानी देने की परंपरा काफी समय पहले से रही है। मनुष्य अपनी जरूरतों के मुताबिक जंगलों को काटकर अपने रिहायशी इलाकों का विस्तार करता गया और पक्षियों का आशियाना नष्ट होता गया। प्रकृति का इसी तरह दोहन होता रहा तो पर्यावरणीय संकट गंभीर होते जाएंगे। जैव विविधता मनुष्य के अस्तित्व के लिए आवश्यक है। उन्होंने कहा दुनियाभर में पक्षियों की प्रजातियां खतरे में हैं। नीदरलैंड जैसे देश में पक्षियों की कई प्रजातियां विलुप्त हो चुकी हैं। कुछ गंभीर खतरे से गुजर रही हैं। गौरैया की संख्या में दुनियाभर में 70 प्रतिशत तक कमी आ चुकी है। तिनका-तिनका इकट्ठा कर घोंसला बनाने वाली गौरैया के संरक्षण और पुनर्वास के लिए कदम उठाने चाहिए। बढ़ते प्रदूषण के कारण भी उन पर जीवन का संकट है। उनकी त्वचा, जीवनशैली पर भी काफी बुरा प्रभाव पड़ रहा है। पेड़-पौधों की अंधाधुंध कटाई से पारिस्थितिकीय असंतुलन की स्थिति बन रही है और जैव-विविधता घट रही है। उन्होंने कहा गौरैया पक्षी खुशी का प्रतीक है, इनके संरक्षण की दिशा में हमें इसी तरह के अभिनव पहल करने की जरूरत है। नियमित निगरानी के साथ इनकी बढ़ती हुई संख्या पर एक अध्ययन भी किया जा सकता है।

उन्होंने कहा चिड़ियों की चहचहाहट से दिन की शुरुआत होने से पूरा दिन मंगलमय बीतता है। गौरैया की सुरक्षा एवं संरक्षण में विवि की पहल देश के लिए मिसाल है। विश्वविद्यालय इस कॉर्नर को और विकसित करने के साथ ही परिसर में अन्य कई स्थलों को चिह्नित कर गौरैया संरक्षण की दिशा में प्रयास को आगे बढ़ाएगा। राष्ट्रीय सेवा योजना के बजट में गौरैया के दाना-पानी और पुनर्वास के लिए बजट स्वीकृत कर दिया गया है। संचालन डॉ. राकेश सोनी ने किया। इस मौके पर योग विभाग के डॉ. अरुण साव, डॉ. नितिन कोरपाल, डॉ. विवेक जायसवाल, डॉ. हिमांशु सहित विवि परिवार के लोग मौजूद थे।

विश्वविध्यालय : डॉ. सर हरीसिंह विश्वविद्यालय की "भारतीय भाषा प्रकोष्ठ" के माध्यम से भारतीय भाषाओं को जोड़ने की अनुकरणीय पहल

शिरीष सिलाकारी | नवसिंधु समाचार

सागर. डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर के कुलपति सम्मेलन कक्ष में विश्वविद्यालय की माननीया कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता जी की अध्यक्षता में भारतीय भाषा प्रकोष्ठ की बैठक संपन्न हुई. इस बैठक में विश्वविद्यालय द्वारा गठित भारतीय भाषा प्रकोष्ठ के प्रो. देवाशीष बोस, समन्वयक एवं प्रो. वर्षा शर्मा, सह समन्वयक तथा अन्य सदस्य जो भाषा अभिभावक के रूप में कार्य कर रहे उपस्थित रहे. प्रो. देवाशीष बोस ने बैठक के प्रारंभ में भारतीय भाषा प्रकोष्ठ के अंतर्गत लगभग 14 भाषाओं में विश्वविद्यालय के शिक्षकों द्वारा लिखी जा रही पुस्तकों के साथ-साथ पंजाबी, बांग्ला, संस्कृत, तेलगु, मलयालम आदि भाषाओं में लिखी जा रही पुस्तकों की जानकारी दी. उन्होंने अवगत कराया कि गुजराती, पंजाबी, हिंदी, उर्दू, अंग्रेजी, तेलगु, बांग्ला, मलयाली एवं उड़िया में पुस्तकों का लेखन कार्य पूर्ण हो गया है.

माननीया कुलपति महोदया ने समिति के प्रगति प्रतिवेदन पर प्रसन्नता व्यक्त करते हुये निर्देशित किया कि तमिल, मैथिली, मणिपुरी, मराठी, संस्कृत इत्यादि भाषाओं पर जो पुस्तकें लिखी जा रही है, उन पुस्तकों का लेखन कार्य अविलम्ब पूर्ण किया जाये, जिससे विश्वविद्यालय में अध्ययनरत् एवं देश के अन्य विश्वविद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों जो इन भाषाओं में शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं, वे भी इन भाषाओं में उपलब्ध होने वाली पुस्तकों से लाभांन्वित हो सकें. साथ ही उन्होंने इस बात पर भी जोर दिया कि विश्वविद्यालय में देश के विभिन्न राज्यों से शिक्षा हेतु आये हुये विद्यार्थियों के बीच आपस में एक दूसरे की सांस्कृतिक गतिविधियों को जानने समझने और उसकी महत्ता को रेखांकित किये जाने के उद्देश्य से विद्यार्थियों के बीच सांस्कृतिक रीति रिवाजों के आदान प्रदान हेतु विश्वविद्यालय में कार्यक्रमों के आयोजन किये जायें.

माननीया कुलपति महोदया ने यह भी सुझाव दिया कि एक ऐसी हेडबुक - रिफरेंस बुक भी तैयार की जाये जिसमें इन भाषाओं के उपयोगी वाक्य विन्यास का संकलन हो, जिससे विद्यार्थियों को स्थानीय जानकारियों हेतु सुविधा मिल सके. कुलपति महोदया ने एक कैलेण्डर तैयार करने के भी निर्देश दिये जिसमें देश के विभिन्न राज्यों के भाषायी समूह के सांस्कृतिक गतिविधियों की जानकारी एक साथ हो.

भारतीय भाषा प्रकोष्ठ के समन्वय प्रो. देवाशीष बोस ने अवगत कराया कि उनके द्वारा एक स्पेनिश लेग्विज में पुस्तक का लेखन किया गया है. साथ ही भारतीय भाषाओं के साथ अन्य विदेशी भाषाओं यथा स्पेनिश, जर्मन, फ्रेंच आदि में भी पुस्तक लेखन कार्य की योजना है. भारतीय भाषा प्रकोष्ठ का यह समन्वित प्रयास है कि विद्यार्थी अपनी मातृभाषा के साथ-साथ देश की विभिन्न भाषाओं के प्रति जागरूक बनें तथा इन भाषाओं को सीखने के लिए प्रयास करें.

डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर का यह प्रयास न केवल अनुकरणीय है बल्कि इससे भारतीय संस्कृति के अंतर्गत विभिन्न राज्यों/भाषायी समुदायों के माध्यम जो समृद्ध सांस्कृतिक परंपरा है, उसको जानने की दिशा में यह एक महत्वपूर्ण कार्य भारतीय भाषा प्रकोष्ठ के माध्यम से किया जा रहा है.

डॉ. हरीसिंह गौर विवि की भारतीय भाषा प्रकोष्ठ के माध्यम से भारतीय भाषाओं को जोड़ने की अनुकरणीय पहल

सागर, देशबन्धु। डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय के कुलपति सम्मेलन कक्ष में कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता की अध्यक्षता में भारतीय भाषा प्रकोष्ठ की बैठक संपन्न हुई। इस बैठक में विवि द्वारा गठित भारतीय भाषा प्रकोष्ठ के प्रो. देवाशीष बोस, समन्वयक एवं प्रो. वर्षा शर्मा, सह समन्वयक तथा अन्य सदस्य जो भाषा अभिभावक के रूप में कार्य कर रहे उपस्थित रहे। प्रो. देवाशीष ब्रोस ने बैठक के प्रारंभ में भारतीय भाषा प्रकोष्ठ के अंतर्गत लगभग 14 भाषाओं में विवि के शिक्षकों द्वारा लिखी जा रही पुस्तकों के साथ-साथ पंजाबी, बांग्ला, संस्कृत, तेलगु, मलयालम आदि भाषाओं में लिखी जा रही पुस्तकों की जानकारी दी। उन्होंने अवगत कराया कि गुजराती, पंजाबी, हिंदी, उर्दू, अंग्रेजी, तेलगु, बांग्ला, मलयाली एवं उड़िया में पुस्तकों का लेखन कार्य पूर्ण हो गया है। कुलपति ने समिति के प्रगति प्रतिवेदन पर प्रसन्नता व्यक्त करते हुये निर्देशित किया कि तमिल, मैथिली, मणिपुरी, मराठी, संस्कृत इत्यादि भाषाओं पर जो पुस्तकें लिखी जा रही है, उन पुस्तकों का लेखन कार्य अविलम्बपूर्ण किया जाये, जिससे विवि में अध्ययनरत् एवं देश के अन्य विश्वविद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों जो इन भाषाओं में शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं, वे भी इन भाषाओं में उपलब्ध होने वाली पुस्तकों से लाभांन्वित हो सके। साथ ही उन्होंने इस बात पर भी जोर दिया कि विवि में देश के विभिन्न राज्यों से शिक्षा हेतु आये हुये विद्यार्थियों के बीच आपस में एक दूसरे की सांस्कृतिक गतिविधियों को जानने समझने और उसकी महत्ता को रेखांकित किये जाने के उद्देश्य से विद्यार्थियों के बीच सांस्कृतिक रीति रिवाजों के आदान प्रदान हेतु विश्वविद्यालय में कार्यक्रमों के आयोजन किये जाये।

शिविर इसलिए लगाया ताकि संस्कृति का आदान-प्रदान को बढ़ावा मिले

सागर (नवदुनिया प्रतिनिधि)। डाक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय में संचालित राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई के तीन स्वयंसेवकों ने युवा एवं खेल मंत्रालय, भारत सरकार एवं क्षेत्रीय निदेशालय एनएसएस द्वारा हरियाणा के मनोहर मेमोरियल पीजी कालेज में दिनांक 12 मार्च से 18 मार्च तक आयोजित हुए सात दिवसीय राष्ट्रीय एकता शिविर में सहभागिता की।

राष्ट्रीय एकता शिविर में 12 राज्यों से स्वयंसेवकों को हिस्सा लेने के लिए चुना गया था। शिविर में सागर विवि की राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई से श्रद्धा विश्वकर्मा, राजन गुप्ता व अमरनाथ मिश्रा को चयनित किया गया। एनएसएस निदेशालय प्रत्येक वर्ष राष्ट्रीय एकता शिविर का आयोजन करता है ताकि सांस्कृतिक आदान-प्रदान को बढ़ावा मिल सके। शिविर में सभी राज्यों की सांस्कृतिक झलकियां प्रस्तुत की गई। चयनित स्वयंसेवकों ने राष्ट्रीय एकता शिविर में मप्र प्रान्त की ऐतिहासिक-संस्कृति को राष्ट्रीय स्तर पर प्रस्तुत किया साथ ही मप्र की भौगोलिक संपदा, बोलियां, नृत्य आदि की प्रस्तुति विभिन्न गतिविधियों के माध्यम से की गई।

कुलपति प्रो. निलिमा गुप्ता के द्वारा स्वयं सेवकों को प्रोत्साहित किया गया। ● नवदुनिया

कार्यक्रम ही सांस्कृतिक आदान-प्रदान का स्रोत हैं

युवा मामले एवं खेल मंत्रालय, एनएसएस निदेशालय दिल्ली के कार्यक्रम सलाहकार सैमुअल चेल्लिया ने कहा कि सच्चे मायने में इस प्रकार के कार्यक्रम ही सांस्कृतिक आदान-प्रदान का स्रोत हैं और इस प्रकार के कार्यक्रम ही सांस्कृतिक आदान-प्रदान को सार्थक सिद्ध करते हुए इसे चरितार्थ सिद्ध करते हैं। इन तीनों स्वयं सेवकों को कुलपति प्रो. निलिमा गुप्ता के द्वारा प्रोत्साहित किया गया। कुलपति ने भविष्य में भी इस तरह की गतिविधियों में सक्रिय भागीदारी करने की अपेक्षा के साथ राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई के समन्वयक डा. संजय शर्मा, कार्यक्रम अधिकारी डा. वंदना विनायक एवं उपस्थित स्वयं सेवकों को शुभकामनाएं दीं।

विश्वविद्यालय • मानव विज्ञान विभाग की तीन दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला का समापन

'पुरातात्विक मानव विज्ञान का उद्देश्य मानव विकास के समग्र दृष्टिकोण का निर्माण करना'

भास्कर संवाददाता | सागर

डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय के मानवविज्ञान विभाग द्वारा आयोजित तीन दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला का शुक्रवार को समापन हो गया। उद्घाटन समारोह की अध्यक्षता कर रहीं विवि की कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने कहा पुरातात्विक मानव विज्ञान बहुविषयक अध्ययन की वकालत करता है।

यह मानव व्यवहार और सामाजिक संरचनाओं की अंतरदृष्टि को साथ जोड़ता है। पुरातात्विक मानव विज्ञान का उद्देश्य मानव विकास और सांस्कृतिक विकास के समग्र दृष्टिकोण का निर्माण करना है। वर्चुअली जुड़े मुख्य अतिथि नालंदा विवि बिहार के कुलपति प्रो. अभय कुमार सिंह ने कहा नवीन पुरातात्विक मानव ज्ञान की बात भारतीय परीपेक्ष्य में इतिहास, वर्तमान परीपेक्ष्य में

सागर | कार्यशाला को संबोधित करतीं कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता।

बहुत महत्वपूर्ण है। विशिष्ट अतिथि राष्ट्रीय स्मारक प्राधिकरण, संस्कृति मंत्रालय के अध्यक्ष प्रो. केके बासा ने बताया पुरातात्विक मानव विज्ञान भौतिक संस्कृति को समझने का प्रयास करता है। जिसमें पुरातात्विक खनन और उसकी खोज करते हैं। प्रो. देवाशीष बोस ने कहा मानव विज्ञान विभाग शोध एवं अध्यापन में निरंतर प्रगति के पथ पर चल रहा है। समापन समारोह के मुख्य अतिथि तिरुपति विवि के पूर्व विभागाध्यक्ष प्रो. पापा राव अलाहारी ने कहा विश्व में भारत प्राचीन मानव संस्कृति की पहचान करने में अग्रणी देश माना गया है।

यह दर्जा मोहनजोदड़ो की संस्कृति पुरातात्विक वेत्ताओं ने खोज करके दिलाया है। विशिष्ट अतिथि प्रयागराज विवि के प्रो. विजोय एस सहाय ने कहा भारत देश विविधताओं से भरा पड़ा है। हर 10 किलोमीटर पर बोली, भाषा, वस्त्र, आभूषण उपयोगी उपकरण बदल जाते हैं। फिर भी अनेकता में एकता है। यहां का पुरातात्विक अध्ययन करना शोध के क्षेत्र में खजाना है। उनके द्वारा मालिक पुस्तक एंथ्रोपोलॉजिकल थाट का विमोचन किया गया। मुख्य वक्ता डॉ. अविक विश्वास कोलकाता ने कहा मानव के अस्तित्व और उसका प्राचीन इतिहास समझने के लिए हमें पुरातात्विक साक्ष्य महत्वपूर्ण लिंक प्रदान करते हैं। विभागाध्यक्ष प्रो. अजीत जायसवाल ने कार्यशाला की रूपरेखा प्रस्तुत की।

कार्यशाला समन्वयक डॉ. अरिबम विजया सुंदरी देवी ने बताया देश के 25 विश्वविद्यालयों के साथ शोध संस्थानों के 150 से अधिक शोधार्थियों ने इसमें हिस्सा लिया। प्रो. केकेएन शर्मा, डॉ. सोनिया कौशल, काव्या पाल, यामिनी योगी, सिमरन शर्मा ने भी विचार रखे। आभार प्रो. राजेश गौतम ने माना। संचालन मधुश्री डे, समीक्षा दवे ने किया।

कुलपति की अध्यक्षता में हुई नवगठित समिति की बैठक

आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग के विद्यार्थियों के शैक्षणिक उन्नयन के लिए प्रतिबद्ध है विवि

आचरण संवाददाता

सागर। डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर के कुलपति सम्मेलन कक्ष में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, नई दिल्ली द्वारा अपने परिपत्र F.No. F.6-2/2022/part-2 दिनांक 02 जनवरी 2023 के अंतर्गत जारी दिशा निर्देश - सामाजिक-आर्थिक रूप से वंचित समूह के लिए समान अवसर उपलब्ध कराने हेतु दिशा निर्देश (एसईडीजी) को अंगीकृत करते हुये विश्वविद्यालय में उत्कृष्ट शिक्षा, लैंगिक समानता, दिव्यांगजन के लिए सुविधायें, कोई गरीबी नहीं, अच्छे कार्य एवं आर्थिक विकास को हासिल करने के लिये तथा सामाजिक आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग के विद्यार्थियों के शैक्षणिक एवं सामाजिक उन्नयन के साथ-साथ अवसरों की समानता उपलब्ध कराने हेतु गठित समिति की बैठक विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता की अध्यक्षता में संपन्न हुई। कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, नई दिल्ली के द्वारा जारी दिशा-निर्देशों पर त्वरित कार्यवाही करते हुये इस दिशा में तय किये गये मानकों को हासिल करने के उद्देश्य से विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के निर्देशानुसार समिति का गठन करते हुये स्वयं इस समिति की प्रथम बैठक की अध्यक्षता की. बैठक के प्रारंभ में इस समिति के अध्यक्ष प्रो. अनिल कुमार जैन, विभागाध्यक्ष, शिक्षा विभाग ने कुलपति द्वारा इस विषय की गंभीरता को समझते हुये एवं दिव्यांगजनों के लिए अतिआवश्यक सुविधाओं को अविलम्ब उपलब्ध कराने के लिए गठित समिति का अध्यक्ष मनोनीत किये जाने पर धन्यवाद ज्ञापित किया।

इस महत्वपूर्ण बैठक में प्रो. अस्मिता गजभिये, प्रभारी आंतरिक शिकायत समिति, प्रो. श्वेता यादव, विभागाध्यक्ष, प्राणीशास्त्र विभाग, डॉ. बलवंत सिंह भदौरिया, अधिष्ठाता, कला एवं सूचना विज्ञान, डॉ. रजनीश अग्रहरि, सहायक प्राध्यापक, शिक्षा विभाग, डॉ. नवीन सिंह, सहायक प्राध्यापक, शिक्षा विभाग के साथ-साथ विद्यार्थी प्रतिनिधि दिव्यांगजन - सुश्री आकांक्षा नामदेव, शोध छात्रा, प्रौढ़ शिक्षा विभाग, विद्यार्थी प्रतिनिधि दिव्यांगजन - दुष्यंत कुमार मार्को, शोध छात्र, प्रौढ़ शिक्षा विंभाग, सदस्यों के रूप में तथा आशीष तिवारी, सहायक कुलसचिव - सदस्य सचिव के रूप में इस बैठक में उपस्थित हुये।

बैठक की महत्ता को ध्यान में रखते हुये इस बैठक में विश्वविद्यालय के प्रभारी कुलसचिव डॉ. एस.पी. उपाध्याय, पुस्तकालयाध्यक्ष डॉ. मोहन टी.ए., सहायक पुस्तकालयाध्यक्ष डॉ. अनुराग श्रीवास्तव तथा सीनियर सिस्टम एनालिस्ट डॉ. रूपेन्द्र जे. चौरसिया भी इस बैठक में विशेष रूप से आमंत्रित थे। बैठक में आवश्यक बिन्दुओं पर विस्तृत चर्चा की गई तथा उन पर सारगर्भित निर्णय लिये गये। कुलपति ने निर्देशित किया कि रंगनाथन पुस्तकालय में दिव्यांगजन लर्निंग रिसोर्स सेंटर की स्थापना के साथ विश्वविद्यालय में दिव्यांगजनों की विश्वविद्यालय में उपलब्ध सुविधाओं (7 कम्प्यूटर, 2 कीबो, आडियो सामग्री, यू रीड बुक) को त्वरित स्थानान्तरण किया जाये तथा दिव्यांगजन की शिक्षा के लिए जो भी आवश्यक उपकरण हैं। उनको क्रय कर इस सेंटर में संस्थापित किया जाये, जिससे दिव्यांगजन को सम्पूर्ण सुविधाएँ प्रदान की जा सकें. इसमे प्रथमतः ब्रेल प्रिंटर को क्रय किये जाने के संबंध में निर्णय लिया गया. विश्वविद्यालय में विधि एवं हिन्दी विभाग में अध्ययनरत् दिव्यांग विद्यार्थियों के लिए पाठ्य सामग्री ब्रेल लिपि में प्रिंट कराकर अविलम्ब उपलब्ध कराने का भी निर्णय लिया गया। बैठक में दिव्यांग विद्यार्थियों के लिए पाठ्य सामग्री सुगम्य पुस्तकालय जिसका केन्द्र भोपाल में है, की सदस्यता विश्वविद्यालय ने ले ली है जिससे सुगम्य पुस्तकालय में उपलब्ध लगभग 10 लाख ब्रेल पुस्तकें जो ई- लायब्रेरी में उपलब्ध हैं, का लाभ विश्वविद्यालय के समस्त दिव्यांग विद्यार्थियों के साथ-साथ संबद्ध महाविद्यालयों में अध्ययनरत दिव्यांग छात्र-छात्राएँ लाभ ले सकते हैं।

जहाँ-जहाँ दिव्यांग छात्रों को आवश्यकता है, वहाँ-वहाँ रेम्प, टायलेट की सुविधा हेतु आवश्यक कदम उठाये जायेंगे. दिव्यांग छात्र-छात्राओं की परेशानियों को दृष्टि में रखते हुये यह भी निर्णय लिया गया कि दिव्यांग छात्र-छात्राओं की कक्षायें भूतल पर लगाई जायें तथा अग्रिम पंक्ति में उनके बैठने की व्यवस्था की जाये. इस आशय के निर्देश विश्वविद्यालय प्रशासन द्वारा जारी किये जा रहे हैं।

विश्वविद्यालय की वेबसाईट को दिव्यांग छात्र-छात्राओं हेतु यूजर फ्रेंडली बनाये जाने के लिये विश्वविद्यालय के सीनियर सिस्टम एनालिस्ट से सुझाव मांगे गये तथा निर्देशित किया गया कि विश्वविद्यालय की वेबसाईट पर स्क्रीन रीडर एसेस की सुविधा का विस्तार किया जाये। दिव्यांग विद्यार्थियों के लिए खेल कूद की सुविधाओं प्रदान किये जाने हेतु निदेशक शारीरिक शिक्षा विभाग को निर्देशित किया गया है तथा दिव्यांग विद्यार्थियों के लिए सांस्कृतिक गतिविधियों में सहभागिता हेतु सांस्कृतिक समन्वयक कार्य करेंग। कुलपति ने प्रो. अनिल जैन, विभागाध्यक्ष, शिक्षा विभाग को निर्देशित किया कि दिव्यांग विद्यार्थियों की जो भी समस्यायें हैं, उनके निराकरण हेतु प्रबंधन का कार्य करेंगे।

इस बैठक के माध्यम से दिव्यांग विद्यार्थियों के लिए नवोन्मेष योजनाओं के साथ-साथ विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, नई दिल्ली द्वारा तैयार दिशा निर्देशों के अनुपालन में डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर ऐसा प्रथम विश्वविद्यालय है, जिसने दिव्यांग विद्यार्थियों के लिए यूजीसी के कार्यादेश के अनुपालन में सार्थक पहल की है एवं अन्य अनुषांगिक कार्यों को प्रारंभ करने हेतु अपनी प्रतिबद्धिता ज्ञापित की है। कुलपति ने स्पष्ट रूप से यह भावना व्यक्त की है कि इन कार्यों की सतत् निगरानी हेतु वो स्वयं इस समिति की बैठकों में रहेंगी। बैठक के अंत में कुलपति ने कहा कि दिव्यांग होना कोई कमजोरी की निशानी नहीं है, बल्कि दिव्यांगजन के पास स्वयं की एक पहचान होती है, प्रकृति उन्हें उस कमी से लड़ने की शक्ति प्रदान करती है और वह कोई न कोई अतिरिक्त हुनर के धनी होते हैं। उन्होंने कहा कि दिव्यांगजन समाज में अलग नहीं हैं, वे समाज का हिस्सा हैं. विश्वविद्यालय अपने दिव्यांग विद्यार्थियों के लिए उनकी शिक्षा के साथ-साथ स्किल एज्यूकेशन प्रदान करने के लिए भी कार्य योजना तैयार करेगा, जिससे इस विश्वविद्यालय के दिव्यांग छात्र-छात्रायें शिक्षा के साथ-साथ स्किल में भी पारंगत होकर आत्मनिर्भर बनें. विश्वविद्यालय में दिव्यांग अध्ययन केन्द्र की स्थापना प्रक्रियाधीन है। समिति के अध्यक्ष प्रो. अनिल कुमार जैन ने महत्वपूर्ण सुझावों एवं कार्यों के त्वरित क्रियान्वयन के कुलपति का आभार माना।

विवि में भूगोल दर्शन व शोध ज्ञान नवाचारों की श्रृंखला शुरू

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
patrika.com

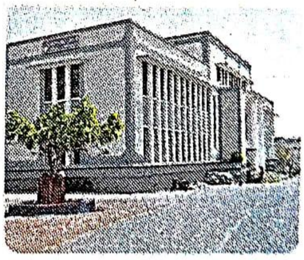

सागर. डॉ. हरिसिंह गौर केंद्रीय विश्वविद्यालय के भूगोल विभाग में दो नवाचारों भूगोल दर्शन व शोध ज्ञान की शुरूआत हुई। कार्यक्रम की अध्यक्षता पूर्व विभागाध्यक्ष प्रो. आरपी मिश्रा ने की, नोट स्पीकर पूर्व विभागाध्यक्ष प्रो. जेएल जैन रहे। भूगोल के विभागाध्यक्ष प्रो. विनोद कुमार भारद्वाज ने बताया कि भूगोल-दर्शन के अंतर्गत हर माह अनुभवों, शोध व प्रकाशित शोधपत्रों को पीपीटी के माध्यम से शिक्षकों, शोधार्थियों, पीजी विद्यार्थियों और दो बाह्य विशेषज्ञों के समक्ष प्रस्तुत किया जाएगा। इससे शोध संबंधी गतिविधियों में उच्च गुणवत्ता आएगी। इसी तरह शोध ज्ञान कार्यक्रम के तहत हर माह विभाग के चार शोध छात्र पीपीटी के माध्यम से अनुसंधान आधारित शिक्षा, शोध कौशल, पठन-पाठन भौगोलिक समवर्ती साहित्य आदि विषयों पर अपना प्रस्तुतीकरण करेंगे। कार्यक्रम में शोध छात्र राहुल मिश्रा व जीतेंद्र कुमार पटेल ने अपना शोध संबंधी अनुभव साझा किया। शोध ज्ञान में संयोजक डॉ. आरबी अनुरागी को और भूगोल दर्शन का संयोजक डॉ. सतीश सी को बनाया गया है।

विवि में दिव्यांगजन लर्निंग रिसोर्स सेंटर की स्थापना

सागर. डॉ. हरिसिंह गौर केंद्रीय विश्वविद्यालय में दिव्यांगजन लर्निंग रिसोर्स सेंटर की स्थापना की गई है। इसके अलावा सामाजिक आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग के विद्यार्थियों के शैक्षणिक व सामाजिक उन्नयन के साथ-साथ अवसरों की समानता उपलब्ध कराने एक समिति का भी गठन किया गया है। शुक्रवार को इस समिति की पहली बैठक की अध्यक्षता कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने की। कुलपति ने कहा दिव्यांग होना कोई कमजोरी की निशानी नहीं है, बल्कि दिव्यांगजन के पास स्वयं की एक पहचान होती है। प्रकृति उन्हें उस कमी से लड़ने की शक्ति प्रदान करती है। वह कोई न कोई अतिरिक्त हुनर के धनी होते हैं। दिव्यांगजन समाज में अलग नहीं हैं, वे समाज का हिस्सा हैं। समिति के अध्यक्ष प्रो. अनिल कुमार जैन ने महत्वपूर्ण सुझावों व कार्यों के त्वरित क्रियान्वयन पर आभार व्यक्त किया।

जीवन में समय और संयोग की बहुत महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है : प्रो राजपूत

सागर। महान व्यक्तित्व के जीवन मूल्यों से सीख और प्रेरणा मिलती है, इसलिए उनकी जीवनी को गहराई से पढ़ने और समझने की आदत डालनी चाहिए। डाक्टर हरीसिंह गौर भी एक ऐसे ही प्रेरक व्यक्तितत्व हैं। यह बात प्रो. दिवाकर सिंह राजपूत ने नागपुर प्रवास के दौरान डा. मनमोहन वैद्य से चर्चा के दौरान कही। उन्होंने डा. मनमोहन सिंह वैद्य से सौजन्य भेंट की और डा. गौर के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर चर्चा की। डॉक्टर वैद्य ने कहा कि महान व्यक्तियों की जीवनी से प्रेरणा और दिशा मिलती है। डा. गौर के जीवन का हर एक पहलू किसी महान ग्रंथ की तरह है, जिसको पढ़ कर समझना और अपनाने की जरूरत है। उन्होंने भी वी एंड द वर्ल्ड अराउंड नामक स्व लिखित पुस्तक भेंट की। उल्लेखनीय है कि डा. गौर सागर के अलावा कई विवि में कुलपति रहे हैं और नागपुर विवि से भी उनसे संबंधित दस्तावेजों की जानकारी ली जा रही है।

व्यवस्था • यूजीसी के निर्देश पर समिति का गठन कर कुलपति ने ली पहली बैठक, कई निर्देश दिए गए

विश्वविद्यालय में दिव्यांगजन लर्निंग रिसोर्स सेंटर स्थापित

भास्कर संवाददाता | सागर

डॉ. हरीसिंह विश्वविद्यालय में दिव्यांगजन लर्निंग रिसोर्स सेंटर की स्थापना की गई है। यूजीसी के निर्देश पर समिति का गठन करते हुए कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने पहली बैठक ली। कुलपति ने निर्देश दिए कि रंगनाथन पुस्तकालय में दिव्यांगजन लर्निंग रिसोर्स सेंटर की स्थापना के साथ दिव्यांगजनों की विश्वविद्यालय में उपलब्ध सुविधाओं को त्वरित स्थानान्तरण किया जाए तथा दिव्यांगजन की शिक्षा के लिए जो भी आवश्यक उपकरण हैं, उनको क्रय कर इस सेंटर में संस्थापित किया जाए। इससे दिव्यांगजन को सम्पूर्ण सुविधाएं प्रदान की जा सकें।

इसमें ब्रेल प्रिंटर को क्रय किए जाने के संबंध में निर्णय लिया गया। विश्वविद्यालय में विधि एवं हिन्दी विभाग में अध्ययनरत दिव्यांग विद्यार्थियों के लिए पाठ्य सामग्री ब्रेल लिपि में प्रिंट कराकर अविलम्ब उपलब्ध कराने का भी निर्णय लिया गया। दिव्यांग विद्यार्थियों के लिए पाठ्य सामग्री सुगम्य पुस्तकालय की सदस्यता विश्वविद्यालय ने ले ली है जिससे सुगम्य पुस्तकालय में उपलब्ध लगभग 10 लाख ब्रेल पुस्तकों का लाभ विश्वविद्यालय के समस्त दिव्यांग विद्यार्थियों के साथ-साथ संबद्ध महाविद्यालयों में अध्ययनरत दिव्यांग छात्र-छात्राएं लाभ ले सकते हैं।

जहां-जहां दिव्यांग छात्रों को आवश्यकता है, वहां रैंप, टॉयलेट की सुविधा के लिए आवश्यक कदम उठाए जाएंगे। दिव्यांग छात्र-छात्राओं की परेशानियों को दृष्टि में रखते हुए यह भी निर्णय लिया गया कि दिव्यांग छात्र-छात्राओं की कक्षाएं भूतल पर लगाई जाएं तथा अग्रिम पंक्ति में उनके बैठने की व्यवस्था की जाए। इस आशय के निर्देश विश्वविद्यालय प्रशासन द्वारा जारी किए जा रहे हैं।

छात्रावासों में रहने वाले दिव्यांग विद्यार्थियों के लिए एक ही छात्रावास में स्थान उपलब्ध कराया जाए, जिससे उन्हें नैसर्गिक सुविधाएं आसानी से प्राप्त हो सकें। विवि की वेबसाइट को दिव्यांग छात्र-छात्राओं के लिए यूजर फ्रेंडली बनाए जाने के लिए विश्वविद्यालय के सीनियर सिस्टम एनालिस्ट से सुझाव मांगे गए तथा निर्देशित किया गया कि विश्वविद्यालय की वेबसाइट पर स्क्रीन रीडर एसेस की सुविधा का विस्तार किया जाए।

कुलपति ने कहा विश्वविद्यालय अपने दिव्यांग विद्यार्थियों के लिए उनकी शिक्षा के साथ-साथ स्किल एज्युकेशन प्रदान करने के लिए भी कार्ययोजना तैयार करेगा, जिससे इस विश्वविद्यालय के दिव्यांग छात्र-छात्राएं शिक्षा के साथ-साथ स्किल में भी पारंगत होकर आत्मनिर्भर बनें।

आयोजन अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस की तैयारियां की गईं शुरू, विवि में हुए कार्यक्रम

युवा वर्ग अपनी ऊर्जा को राष्ट्र के निर्माण में लगाएं

सागर(नवदुनिया प्रतिनिधि)।

तनाव जीवन को कष्टमय बना देता है जबकि खुशनुमा माहौल जीवन को नई दिशा प्रदान करता है। युवा वर्ग अपनी शक्ति और ऊर्जा को रचनात्मक एवं राष्ट्र निर्माण में लगाएं तभी वे समाज और देश की तरक्की का कारण बन सकते हैं। यह बात- बुदेलखंड मेडीकल कालेज नेत्र विभाग के अध्यक्ष प्रो. प्रवीण खरे ने योग शिक्षा विभाग के द्वारा अंर्राष्ट्रीय योग दिवस की तैयारियों के शुभारंभ कार्यक्रम में व्यक्त किए।

उन्होंने कहा कि योग जीवन शैली एवं साधना पद्वति ऐसी प्रशिक्षण विधि है जो जिम और कार्डियो व्यायाम से अधिक प्रभावकारी साबित होती है क्योंकि ये व्यक्ति के शारीरिक और मानशिक पक्षों को बल प्रदान करती हैं। विशिष्ट वक्ता छिंदवाड़ा से पधारे डा. रामशंकर दियावर ने कहा कि आप विद्यार्थियों में ऋषि चेतना का प्रभाव है जो आप योग साधक बने हैं. योग दर्शन है, विज्ञान तथा चिकित्सा पद्धाति है। योग साधना है साधन है और साध्य है। समग्र जीवन दृष्टिकोण में इस विषय को अपनाने से हम नैतिक चारित्रिक और शारीरिक स्वास्थ्य प्राप्त कर अध्यात्मिक उत्कर्ष प्राप्त कर सकते हैं।

कार्यक्रम के दौरान विभागीय विद्यार्थियों ने योगाभ्यास की प्रस्तुति दी। • नवदुनिया

अध्यक्षीय उद्बोसधन में विभागाध्यक्ष प्रो. बीआई गुरु ने कहा कि योग विभाग द्वारा अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस की तैयारियों प्रारंभ करना विभागीय परंपरा का समुचित निर्वहन है। प्रो. गुरु ने कहा कि हमारा जीवन नित नूतन हो, नित नवीन हो और नित अपूर्व हो ताकि हम परमात्मा के जीवन के ध्येय की पूर्ति करने के योग्य बनें। स्वागत भाषण डा. अरुण कुमार साव ने कहा कि भारत सरकार के आयुष मंत्रालय से एक सौ दिन की उल्टी गिनती से अंर्राष्ट्रीय योग दिवस की तैयारियां प्रारंभ की जाती हैं। योग विभाग आज से 85 दिन तक इस विद्या के प्रति समाज में जागरूकता और प्रसार का कार्य करेगा। कार्यक्रम का संचालन करते हुए डा. नितिन कोरपाल ने कहा कि आगामी दिनों में विभाग द्वारा शहर में अनेक स्थानों पर निशुल्क योग शिविर आयोजित किए जाएंगे। आभार ज्ञापन डा. ब्रजेश ठाकुर ने किया। कार्यक्रम में कृति यादव एवं यशी यादव ने कृष्ण वंदना पर नृत्य, कामिनी चौबे ने योग गीत प्रस्तुत किया।

विद्यार्थियों के बीच सांस्कृतिक रीति रिवाजों के आदान प्रदान के लिए भी कार्यक्रम किए जाएंः कुलपति

भास्कर संवाददाता | सागर

डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय में भारतीय भाषा प्रकोष्ठ की बैठक कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता की अध्यक्षता में हुई। समन्वयक प्रो. देवाशीष बोस ने भारतीय भाषा प्रकोष्ठ के अंतर्गत लगभग 14 भाषाओं में विश्वविद्यालय के शिक्षकों द्वारा लिखी जा रही पुस्तकों के साथ-साथ पंजाबी, बांग्ला, संस्कृत, तेलगु, मलयालम आदि भाषाओं में लिखी जा रही पुस्तकों की जानकारी दी। उन्होंने बताया कि गुजराती, पंजाबी, हिंदी, उर्दू, अंग्रेजी, तेलगु, बांग्ला, मलयाली एवं उड़िया में पुस्तकों का लेखन कार्य पूर्ण हो गया है।

कुलपति ने निर्देश दिए कि तमिल, मैथिली, मणिपुरी, मराठी, संस्कृत इत्यादि भाषाओं पर जो पुस्तकें लिखी जा रही हैं, उन पुस्तकों का लेखन कार्य अविलम्ब पूर्ण किया जाए, जिससे विश्वविद्यालय में एवं अन्य विश्वविद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थी भी इन भाषाओं में उपलब्ध होने वाली पुस्तकों से लाभान्वित हो सकें। उन्होंने इस बात पर भी जोर दिया कि विश्वविद्यालय में देश के विभिन्न राज्यों से शिक्षा के लिए आए हुए विद्यार्थियों के बीच आपस में एक दूसरे की सांस्कृतिक गतिविधियों को जानने समझने और उसकी महत्ता को रेखांकित किए जाने के उद्देश्य से विद्यार्थियों के बीच सांस्कृतिक रीति रिवाजों के आदान प्रदान के लिए विश्वविद्यालय में कार्यक्रमों के आयोजन किए जाएं। कुलपति ने यह भी सुझाव दिया कि एक ऐसी हैंडबुक-रिफरेंस बुक भी तैयार की जाए जिसमें इन भाषाओं के उपयोगी वाक्य विन्यास का संकलन हो, जिससे विद्यार्थियों को स्थानीय जानकारियों के लिए सुविधा मिल सके। प्रो. बोस ने बताया कि उनके द्वारा एक स्पेनिश लेग्विज में पुस्तक का लेखन किया गया है। साथ ही भारतीय भाषाओं के साथ अन्य विदेशी भाषाओं यथा स्पेनिश, जर्मन, फ्रेंच आदि में भी पुस्तक लेखन कार्य की योजना है। भारतीय भाषा प्रकोष्ठ का यह समन्वित प्रयास है कि विद्यार्थी अपनी मातृभाषा के साथ-साथ देश की विभिन्न भाषाओं के प्रति जागरूक बनें तथा इन भाषाओं को सीखने के लिए प्रयास करें।

विवि में शोध एवं विकास की असीमित संभावनाएं हैं : कुलपति

शोध उत्कृष्टता के लिए विश्वविद्यालय में अंतर विभागीय बैठक आयोजित

सागर(नवदुनिया प्रतिनिधि)।

डा. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय स्थित जनसंख्या अनुसंधान केंद्र सागर की शोध गतिविधियों की समग्र उपयोगिता को विवि के अन्य शैक्षणिक विभागों के साथ साझा करने, शिक्षकों व शोधार्थियों में शोध दक्षता विकास और शोध कौशल आधारित कार्यक्रमों पर चर्चा करने गुरुवार को कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता की अध्यक्षता में अंतर विभागीय बैठक आयोजित हुई।

बैठक के दौरान अधिकारियों को निर्देश देती हुई कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता। ● नवदुनिया

कुलपति द्वारा पीआरसी में किए गए शोध प्रोजेक्ट्स से प्राप्त डाटा के उपयोगों के माध्यम से शोध दक्षता विकास व रोजगारोन्मुख शोध पाठ्यक्रमों को प्रारम्भ करने की दिशा में पीआरसी द्वारा प्रस्तावित नवाचारों की सराहना की। पीआरसी द्वारा किए जा रहे प्रस्तावित डाटा डाइलाग, शोध समृद्धि, शोध सागर, शोध शक्ति व समग्र शोध आदि कार्यक्रमों की रूपरेखा को उन्होंने सहमति देते हुए शैक्षणिक विभागों को इस केंद्र के साथ समन्वित प्रयासों से शोध कौशल आधारित लघु अवधि के प्रशिक्षण कार्यक्रमों की आवश्यकता पर बल दिया। कुलपति ने डाटा डाइलाग कार्यक्रम को प्राथमिकता के साथ आयोजित करने के निर्देश देते हुए कहा कि विभाग स्तर पर भी गुणवत्तापरक शोध क्षमता विकास के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रमों को शीघ्र आयोजित किया जाए। कुलपति ने कहा कि विश्वविद्यालय में शोध की असीमित संभावनाएं विद्यमान है। विद्यार्थियों, शोधार्थियों व फैकल्टी को मिलकर संस्था हित में इनका उपयोग करना है। लोक स्वास्थ्य के शोध विषयों के लिए प्रशिक्षित महिला शोधार्थियों के अभाव की पूर्ति केंद्र के शोध शक्ति प्रशिक्षण कार्यक्रम के द्वारा पूर्ण की जा सकती है।

शोध समृद्धि प्रशिक्षण कार्यक्रम में मुख्य रूप से शोध विधियों, डाटा विश्लेषण, डाटा प्रस्तुतीकरण व आधिकारिक डाटा स्रोतों की शोध उपयोगिता के बारे में तीन दिवसीय विभागीय शोध कार्यशाला को भी शीघ्र शुरू करने योजनाबद्ध तरीके से करवाने जनसंख्या अनुसंधान केंद्र के अधिकारियों को निर्देश दिए। इनमें डाटा डाइलाग, शोध समृद्धि एवं शोध शक्ति, छात्रा विशेष प्रशिक्षण कार्यक्रम विश्वविद्यालय स्तर पर व यथार्थ शोध एवं शोध सागर कार्यक्रम राष्ट्रीय स्तर पर आयोजित करवाए जाएंगे। इस कड़ी में आगामी अप्रैल व मई माह में कुछ विभागों में प्रशिक्षण होंगे। केंद्र के माध्यम से लघु अवधि के कौशल दक्षता पाठ्यक्रम तथा सर्टिफिकेट प्रोग्राम आरंभ किए जाने का भी सुझाव दिया।

बैठक में जनसंख्या अनुसंधान केंद्र के मानद निदेशक प्रो. विनोद कुमार भारद्वाज व डा. निखिलेश परचुरे, शोध अन्वेषक द्वारा जनसंख्या अनुसंधान केंद्र की शोध गतिविधियों के बारे में विस्तृत प्रेजेंटेशन दिया गया। केंद्र के निदेशक प्रो. विनोद कुमार भारद्वाज ने बताया कि केंद्र द्वारा शिक्षकों, शोधार्थियों एवं स्नातकोत्तर विद्यार्थियों में शोध क्षमता विकास एवं शोध ज्ञान संवर्द्धन के प्रयोजन से विभिन्न प्रशिक्षण कार्यक्रम प्रस्तावित हैं। बैठक में शोध अधिकारी डा. रीना बासु, डा. निखिलेश परचुरे, डा. निकलेश कुमार, भूगोल विभाग के डा. सतीश, डा. अनुरागी, डा. हेमंत एवं डा. परवेन्द्र कुमार उपस्थित रहे।